॥ श्रीः ॥

—॥ हरिदास–संस्कृत–ग्रन्थमाला ॥—

१९३

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रभाषा

सरल हिन्दी व्याकरण

लेखक

प० श्री केदारनाथ शर्मा शास्त्री, साहित्यरत्न

प्रकाशकः

जयकृष्णदास–हरिदास गुप्तः,

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस,

विद्याविलास प्रेस, बनारस ।

संवत २००६]　　मूल्य १।)　　[सन् १९४९

मुद्रक—
जयकृष्णदास गुप्त,
विद्याविलास प्रेस, बनारस।

हिन्दीके महारथियोंकी

सम्मतियाँ

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण अपने ढंगकी नयी पुस्तक है। पं० केदार नाथजीने इसमें संस्कृत-हिन्दीकी समानतापर बहुत जोर दिया है। संस्कृत और हिन्दी साहित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले उदाहरण देकर और देवनागरी अक्षरोंके विषयमें विवेचन समझाकर उन्होंने यह पुस्तक बड़ी रोचक बना दी है।

इस पुस्तकको हिन्दी पाठ्यक्रममें रखनेसे छात्रोंका बड़ा लाभ होगा।

(साहित्यवाचस्पति) रामनारायण मिश्र

सभापति—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

पं केदारनाथ शर्मा रचित राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह नवीन हिन्दी व्याकरण पुस्तक सरलताके साथ पाण्डित्यसे परिपूर्ण लिखी गयी है। संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजीके योग्य विद्वान् होनेके कारण स्थल-स्थलपर आपने जो इन भाषाओंकी तुलना अथवा विवेचना की है। वह भाषाकी शिक्षाके लिए अत्यन्त उपयोगी है।

यह पुस्तक जूनियर हाईस्कूल तथा प्रथमाके विद्यार्थियोंके लिए बहुत उपयुक्त है।

कृष्णदेवप्रसाद गौड़ (एम् ए०, एल०टी०)

दयानन्द ऍंग्लो वैदिक हायर सेकेंडरी स्कूल, काशी।

पं० केदारनाथजी शर्मा शास्त्री साहित्यरत्नकृत राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण मैंने आपाततः देखा और सुना। हिन्दीका व्याकरण संस्कृतसे स्वतन्त्र तो हो चुका है पर उसका मेरुदण्ड वही है। इधर हिन्दीके जो व्याकरण प्रायः प्रकाशित हो रहे हैं वे अंगरेजी पद्धतिका अनुगमन कर रहे हैं। यहांतक कि एक वैयाकरणने व्यवसायबुद्धिसे संस्कृत-पद्धतीसे लिखे अपने व्याकरणको आगे चलकर अंगरेजी पद्धतिसे निर्मित किया। ऐसी स्थितिमें प्रस्तुत व्याकरण देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इसमें औरोंसे अनेक विलक्षणताएं और विशेषताएं मिलेंगी। विवादग्रस्त विषयोंपर विवेकसे बेखटके और बड़े रोचक तथा तर्कपूर्ण ढङ्गसे विचार किया गया है। यह पुस्तक हिन्दी व्याकरण सीखनेवालोंके लिए बड़े कामकी सिद्ध होगी—ऐसा मेरा विश्वास है। हिन्दीके पाठ्यक्रममें रखने लायक है।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र (एम० ए०)
प्रोफेसर—हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

श्रीकेदारनाथ शास्त्रीके 'राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण' के छपे हुए फर्मे देखनेको मिले। उन्हें एक बार देख जाने हीसे उसकी उपादेयता स्पष्ट ज्ञात हो जाती है। सबसे बड़ी विशेषता इसमें यह है कि इसके मननसे हिन्दी व्याकरणके ज्ञानके साथ साथ संस्कृतके व्याकरणका बहुत कुछ अनुभव हो जाता है। व्याकरणको आपने हर दृष्टिसे इतना सरस रूप दिया है कि विद्यार्थियोंको इसके मननमें बड़ी सुविधा होगी। साथ ही भाषाविदोंको भी इससे बहुत सहायता मिल सकेगी। व्याकरणसे नीरस विषयको भी आपने रोचक बनानेका बहुत प्रयत्न किया है। प्रत्येक पाठके अन्तमें प्रश्नोंके दे देनेसे इसकी उपादेयता बहुत बढ़ गई है। अक्षरोंके विकासके सम्बन्धमें आपने जो विवेचन किया है वह अत्यन्त रोचक है। यह पुस्तक पाठ्यक्रममें रखने योग्य है जिससे अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही लाभ उठा सकें।

व्रजरत्नदास बी०ए० एल०एल०बी०
प्रधानमन्त्री—नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

पं० केदारनाथजी शर्मा शास्त्री साहित्यरत्नकृत राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण मैंने आपाततः देखा और सुना। हिन्दीका व्याकरण संस्कृतसे स्वतन्त्र तो हो चुका है पर उसका मेरुदण्ड नहीं है। इधर हिन्दीके जो व्याकरण प्रायः प्रकाशित हो रहे हैं वे अंगरेजी पद्धतिका अनुगमन कर रहे हैं। यहांतक कि एक वैयाकरणने व्यवसायबुद्धिसे संस्कृत-पद्धतिसे लिखे अपने व्याकरणको आगे चलकर अंगरेजी पद्धतिसे निर्मित किया। ऐसी स्थितिमें प्रस्तुत व्याकरण देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इसमें औरोंसे अनेक विलक्षणताएं और विशेषताएं मिलेंगी। विवादग्रस्त विषयोंपर निर्भयसे बेखटके और बड़े रोचक तथा तर्कपूर्ण ढंगसे विचार किया गया है। यह पुस्तक हिन्दी व्याकरण सीखनेवालोंके लिए बड़े कामकी सिद्ध होगी—ऐसा मेरा विश्वास है। हिन्दीके पाठ्यक्रममें रखने लायक है।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र (एम० ए०)
प्रोफेसर—हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

श्रीकेदारनाथ शास्त्रीके राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण के छपे हुए फर्मे देखनेको मिले। उन्हें एक बार देख जाने हीसे उसकी उपादेयता स्पष्ट प्रतीत हो जाती है। सबसे बड़ी विशेषता इसमें यह है कि इसके मननसे हिन्दी व्याकरणके ज्ञानके साथ साथ संस्कृतके व्याकरणका बहुत कुछ अनुभव हो जाता है। व्याकरणको आपने हर दृष्टिसे इतना सरल रूप दिया है कि विद्यार्थियोंको इसके मननमें बड़ी सुविधा होगी। साथ ही अध्यापकोंको भी इससे बहुत सहायता मिल सकेगी। व्याकरणके नीरस विषयको भी आपने रोचक बनानेका बहुत प्रयत्न किया है। प्रत्येक पाठके अन्तमें प्रश्नोंके दे देनेसे इसकी उपादेयता बहुत बढ़ गई है। शब्दोंके विकासके सम्बन्धमें आपने जो विवेचन किया है वह अत्यन्त रोचक है। यह पुस्तक पाठ्यक्रममें रखने योग्य है, जिससे अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही लाभ उठा सकें।

ब्रजरत्नदास बी०ए० एल०एल०बी०
प्रधानमन्त्री—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

संस्कृत भाषा अनिवार्य की जा रही है। कई प्रान्तोंके शिक्षालयोंमें संस्कृत भाषा अनिवार्य हो भी चुकी है। ऐसी दशामें संस्कृतानुसारी हिन्दी व्याकरणोंकी परमावश्यकता है—जिनके पढ़नेसे हिन्दीके साथ-साथ कुछ संस्कृतका ज्ञान हो जाय। अस्तु—

आप लोगोंके समक्ष यह 'राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण' उपस्थित कर रहा हूं इसमें निम्नांकित विशेषताएं हैं —

(१) यह व्याकरण प्रथमा तथा जूनियर हाईस्कूलके छात्रोंका सुबन्धु है। (२) यह व्याकरण संस्कृत ढंगका है—इसमें संज्ञा-क्रिया सर्वनाम आदि संस्कृतके ढंगपर रखे गये हैं—अंग्रेजीके ढंगपर नहीं। (३) इस व्याकरणको पढ़कर संस्कृत पढ़नेसे संस्कृत शीघ्र आ जायगी। (४) इस व्याकरणमें संज्ञादिका बोध वाक्यगत उदाहरणोंसे कराया गया है। [*शिक्षा-विशेषज्ञोंका कहना है कि, वाक्यगत* उदाहरणोंसे बोध शीघ्र होता है और आजकल वैसी ही प्रणाली चल रही है। अत: मैंने भी उसी प्रणालीका अनुसरण किया।] (५) विवादग्रस्त स्थलोंको टिप्पणियों द्वारा खूब समझा दिया गया है। (६) संस्कृत तथा हिन्दी साहित्यिकों, समाज सेवियों एवं लोकोपकारियोंके नामोंको यत्र-तत्र वाक्योंमें समावेशित किया गया है जिनसे छात्रोंको उन व्यक्तियोंकी साहित्य सेवादि जाननेकी जिज्ञासा व्याकरणके साथ-साथ हो जाय।

संस्कृत भाषा अनिवार्य की जा रही है। कई प्रान्तोंके शिक्षालयोंमें संस्कृत भाषा अनिवार्य हो भी चुकी है। ऐसी दशामें संस्कृतानुसारी हिन्दी व्याकरणोंकी परमावश्यकता है—जिनके पढ़नेसे हिन्दीके साथ-साथ कुछ संस्कृतका ज्ञान हो जाय। अस्तु—

आप लोगोंके समक्ष यह 'राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण' उपस्थित कर रहा हूं इसमें निम्नांकित विशेषताएं हैं —

(१) यह व्याकरण प्रथमा तथा जूनियर हाईस्कूलके छात्रोंका सुबन्धु है। (२) यह व्याकरण संस्कृत ढंगका है—इसमें संज्ञा-क्रिया सर्वनाम आदि संस्कृतके ढंगपर रखे गये हैं—अंग्रेजीके ढंगपर नहीं। (३) इस व्याकरणको पढ़कर संस्कृत पढ़नेसे संस्कृत शीघ्र आ जायगी। (४) इस व्याकरणमें संज्ञादिका बोध वाक्यगत उदाहरणोंसे कराया गया है। [शिक्षा-विशेषज्ञोंका कहना है कि, वाक्यगत उदाहरणोंसे बोध शीघ्र होता है और आजकल वैसी ही प्रणाली चल रही है। अत मैंने भी उसी प्रणालीका अनुसरण किया।] (५) विवादग्रस्त स्थलोंको टिप्पणियों द्वारा खूब समझा दिया गया है। (६) संस्कृत तथा हिन्दी साहित्यिकों, समाज सेवियों एवं लोकोपकारियोंके नामोंको यत्र-तत्र वाक्योंमें समावेशित किया गया है जिनसे छात्रोंको उन व्यक्तियोंकी साहित्य सेवादि जाननेकी जिज्ञासा व्याकरणके साथ-साथ हो जाय।

, वर्तमान समयमें हिन्दी राष्ट्रभाषा पदपर आसीन हो रही है। अत भारतवर्षके सभी प्रान्तोंके मेरे मित्रोंने और पुण्य भूमि नेपालके साहित्यसुधाकर पूज्य पं० शेषरामशर्मा काव्यतीर्थ प्रभृति दिग्गज विद्वानोंने भी मुझे एक ऐसे हिन्दी व्याकरण बनानेके लिए उद्बोधित किया। जिसके लिए मैं उन लोगोंका कृतज्ञ हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि, इस व्याकरणके द्वारा हिन्दी सीखनवाले तथा हिन्दी जानकर संस्कृत सीखनवाले व्यक्ति व्याकरणका सम्यक् ज्ञान प्राप्तकर परम आनन्द प्राप्त करेंगे।

किमधिकम्—प्रसिद्ध हिन्दी सेवियोंकी सम्मतियां इस व्याकरणकी

संस्कृत भाषा अनिवार्य की जा रही है। कई प्रान्तोंके शिक्षालयोंमें संस्कृत भाषा अनिवार्य हो भी चुकी है। ऐसी दशामें संस्कृतानुसारी हिन्दी व्याकरणोंकी परमावश्यकता है—जिनके पढ़नेसे हिन्दीके साथ-साथ कुछ संस्कृतका ज्ञान हो जाय। अस्तु—

आप लोगोंके समक्ष यह 'राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण' उपस्थित कर रहा हूं इसमें निम्नांकित विशेषताएं हैं —

(१) यह व्याकरण प्रथमा तथा जूनियर हाईस्कूलके छात्रोंका सुबन्धु है। (२) यह व्याकरण संस्कृत ढगका है—इसमें संज्ञा-क्रिया सर्वनाम आदि संस्कृतके ढंगपर रखे गये हैं—अंग्रेजीके ढंगपर नहीं। (३) इस व्याकरणको पढ़कर संस्कृत पढ़नेसे संस्कृत शीघ्र आ जायगी। (४) इस व्याकरणमें संज्ञादिका बोध वाक्यगत उदाहरणोंसे कराया गया है। [शिक्षा-विशेषज्ञोंका कहना है कि, वाक्यगत उदाहरणोंसे बोध शीघ्र होता है और आजकल वैसी ही प्रणाली चल रही है। अत: मैंने भी उसी प्रणालीका अनुसरण किया।] (५) विवादग्रस्त स्थलोंको टिप्पणियों द्वारा खूब समझा दिया गया है। (६) संस्कृत तथा हिन्दी साहित्यिकों, समाज सेवियों एवं लोकोपकारियोंके नामोंको यत्र-तत्र वाक्योंमें समावेशित किया गया है जिनसे छात्रोंको उन व्यक्तियोंकी साहित्य सेवादि जाननेकी जिज्ञासा व्याकरणके साथ-साथ हो जाय।

वर्तमान समयमें हिन्दी राष्ट्रभाषा पदपर आसीन हो रही है। अत: भारतवर्षके सभी प्रान्तोंके मेरे मित्रोंने और पुण्य भूमि नेपालके साहित्यसुधाकर पूज्य पं० शेषराजशास्त्री कान्यतीर्थ प्रभृति दिग्गज विद्वानोंने भी मुझे एक ऐसे हिन्दी व्याकरण बनानेके लिए उद्बोधित किया। जिसके लिए मैं उन लोगोंका कृतज्ञ हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि, इस व्याकरणके द्वारा हिन्दी सीखनेवाले तथा हिन्दी जानकर संस्कृत सीखनेवाले व्यक्ति व्याकरणका सम्यक् ज्ञान प्राप्तकर परम आनन्द प्राप्त करेंगे।

किमधिकम्—प्रसिद्ध हिन्दी सेवियोंकी सम्मतियां इस व्याकरणकी

उपादेयता बताकर आपको प्रस्तुत पुस्तक पढ़नेकी ओर अवश्य आकृष्ट करेंगी।

धन्यवाद

इस व्याकरणमें आजतक प्रचलित सभी हिन्दी व्याकरणोंसे सहायता ली गयी है। अतः सकल हिन्दी-वैयाकरणोंको मैं हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूं।

तत्पश्चात्—विशेषरूपेण पं० रामचन्द्रजी झा व्याकरणाचार्य और साहित्य-व्याकरणाचार्य पं० हरगोविन्दजी शास्त्रीको धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस पुस्तकको उपयोगी बनानेमें मुझे सहायता दी।

पुनश्च— संस्कृत-हिन्दीप्रेमी विद्याविलास प्रेसके अध्यक्षवरोंको धन्यवाद देना परमावश्यक समझता हूं। जिन्होंने इसे प्रकाशित करनेकी कृपा की— अन्यथा, इसे मैं जनतातक दे ही न सकता।

आशा है, विद्वान् पाठक, प्रूफ आदिमें आयी त्रुटियोंके लिए मुझे क्षमाकर इसके गुणकी ओर ध्यान देंगे।

वैशाखी पूर्णिमा,
काशी
२००६ सं०

—केदारनाथ शर्मा

विषय सूची

* श्री *

राष्ट्रभाषा

सरल हिन्दी व्याकरण

पाठ–१

परिभाषा

भाषा—अपने मनोगत विचारोंको मानव—समाज दो प्रकारसे प्रकट करता है—बोलकर या लिखकर। इन दोनोंकी साधिका वाणी है। उसी वाणीका नाम भाषा है।

(वाणी)—अत वाणी अथवा भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा-बोलकर या लिखकर-मानव-समाज अपने मनोगत भावोंको परस्पर एक दूसरेको समझा-बुझा सके।

सम्प्रति इस विश्वमें विभिन्न प्रकारकी भाषाएं बोली जाती हैं। वे सब अलग-अलग नामोंसे प्रख्यात हैं। यथा—हिन्दी, अंग्रेजी, अरबी, उर्दू, फारसी, बंगला, मराठी, मैथिली, नेपाली, गुजराती, तामिल आदि।

व्याकरण—व्याकरण उस विद्याका नाम है जिसके द्वारा मनुष्य शुद्ध बोलना और शुद्ध लिखना ज्ञात कर सके। संस्कृत भाषामें व्याकरणको वेदका अंग माना गया है।

प्रत्येक भाषाका व्याकरण पृथक-पृथक् है। क्योंकि बिना व्याकरण-के कोई भी भाषा शुद्ध लिखी या बोली नहीं जा सकती है। अतः हिन्दी भाषाका भी पृथक् व्याकरण है जिससे हिन्दी शुद्ध बोली और शुद्ध लिखी जा सके।

प्रश्न

(१) भाषा किसे कहते हैं ?

(२) दो-तीन भाषाओंके नाम बताओ ?

(३) संस्कृतमें व्याकरणको किसका अंग माना जाता है ?

पाठ—२

प्रकरण

प्रकरण—हिन्दी व्याकरण तीन प्रमुख प्रकरणोंमें विभक्त है—(१) अक्षरप्रकरण। (२) शब्दप्रकरण। (३) वाक्यप्रकरण *।

अक्षरप्रकरण—अक्षरप्रकरणमें अक्षरोंकी आकृति तथा उनके उच्चारण एवं लिखनेकी प्रणालीका वर्णन है।

शब्दप्रकरण—शब्दप्रकरणमें शब्दोंके भेद उनकी अवस्था, व्युत्पत्ति और पदनियमोंका वर्णन है।

वाक्यप्रकरण—वाक्यप्रकरणमें शब्दोंके द्वारा बने वाक्य भेद तथा उनसे बनी वाक्ययोजना, विन्यास आदिका वर्णन है।

प्रश्न

(१) हिन्दी व्याकरण मुख्यतः कितने प्रकरणोंमें विभक्त है ?

(२) अक्षरप्रकरणमें क्या वर्णित है ?

---

* वाक्यप्रकरणके अन्तर्गत एक वृत्तप्रकरण भी है। वृत्तप्रकरणमें वृत्तोंके समुचित नियमोंका विवेचन आगे ५१ वें पाठमें किया जायगा। वृत्तका ही दूसरा नाम छन्द है।

पाठ—२

अक्षरप्रकरण

अक्षर—अ, क, च, ट, त, प प्रभृति अक्षर कहलाते हैं।

अक्षरसंख्या—हिन्दी भाषामें ४९ अक्षर होते हैं। यथा—

अ (अ), आ (आ), इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ (ओ), औ (औ), अं (अं), अः (अः)।

क, ख, ग, घ, ङ।
च, छ, ज, झ (झ) ञ।
ट, ठ, ड, ढ, ण (ण)।
त, थ, द, ध, न।
प, फ, ब, भ, म।
य, र, ल (ळ), व, श (श), ष, स, ह।

प्रयोग—उपर्युक्त ४९ अक्षरोंमें दीर्घ ॠ का प्रयोग हिन्दीमें कम होता है। 'ऌ' का प्रयोग तो मात्र तंत्र-मन्त्रोंमें ही देखा जाता है।

लेखनप्रणाली—उपर्युक्त अक्षरोंमेंसे, कुछ लोग आजकल, कुछ अक्षरोंको अर्थात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ को भिन्न रीतिसे लिखने लग गये हैं। अर्थात्—अि, अी, अु, अू, अृ, अॄ, अे, अै लिखने लग गये हैं। किन्तु, इस प्रणालीको हिन्दी साहित्यके मर्मज्ञ तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलनके भूतपूर्व अध्यक्ष सर्वश्री बाबूराम पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, सम्पूर्णानन्द और अमरनाथ झा कथमपि नहीं मानते हैं।

---

* पाणिनि संस्कृत व्याकरणानुसार दीर्घ 'ऌ' नहीं होती है। किन्तु महामहोपाध्याय मल्लीनाथजीने रघुवंशकी टीकामें "लिपेर्यथावद्ग्रहणेन वाङ्मयम्" इत्यादि वाक्योंसे संस्कृत भाषामें ५० अक्षर माने हैं। इन अक्षरोंमें दीर्घ 'ऌ' का भी परिगणन किया गया है। हिन्दीभाषाके सर्वमान्यतानुयायी सुप्रसिद्ध 'कल्याण' पत्रमें भी मंत्र-तंत्र प्रकरणमें दीर्घ 'ॡ' का उल्लेख किया गया है।

अक्षरमाला—ऊपर बतलाये हुए ४९ अक्षरोंके समुदायको अक्षर-माला या वर्णमाला कहते हैं। यह अक्षरमाला 'स्वर' और 'व्यञ्जन' दो भागोंमें बंटी हुई है। अक्षरका दूसरा नाम वर्ण है।

स्वर—जो अक्षर स्वयमेव उच्चारण किये जा सकते हैं वे 'स्वर' कहलाते हैं। यथा—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।

(कुल १६ स्वर हैं)

व्यञ्जन—जो अक्षर स्वरकी सहायतासे बोले जाते हैं वे व्यञ्जन कहलाते हैं—स्वरापेक्षी व्यञ्जन कहा जाता है। यथा—

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह।

ऊपरके ३३ अक्षर व्यञ्जन हैं ये हल् (्) हैं जब इनमें कोई स्वर लगता है तब बोले जा सकते हैं। यथा—क्+अ=क। प्+इ=पि। द्+उ=दु। स्+ऊ=सू। प्+ऋ=पृ। य्+ए=ये। र्+ऐ=रै। ल+ओ=लो। श्+औ=शौ। प्+अम्=पं। स्+अः=सः।

अनुनासिक—अननुनासिक

अनुनासिक—जो अक्षर नाक तथा मुंहसे बोला जाता है वह अनुनासिक है। यथा—ङ, ञ, ण, न, म आदि।

अननुनासिक—जो अक्षर केवल मुखसे बोला जाता है वह अननु नासिक कहा जाता है। यथा—क, च, ट, प आदि।

स्वरचिह्न—प्रति स्वरका एक चिह्न होता है जिसे मात्रा कहते हैं और यही चिह्न जब व्यञ्जनमें लगता है तब व्यञ्जनका हल् (्) (*)हट जाता है और वह व्यञ्जन स्वरयुक्त हो जाता है। यथा—

, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, ॄ, , े, ै, ो, ौ, ं, ः।

(*) (्) यह निशान अक्षरको आधा बनाता है। इसे हल् कहते हैं।

(४) ऌ, ॡ, ल, त, थ, द, ध, न, स का उच्चारण दाँतोंसे होता है। अतः ये दन्तस्थानीय वर्ण कहलाते हैं।

(५) उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म का उच्चारण ओष्ठसे होता है। अतः ये ओष्ठस्थानीय वर्ण कहलाते हैं।

(६) ङ, ञ, ण, न, म का उच्चारण नाकसे होता है। अतः ये नासिकास्थानीय वर्ण कहलाते हैं।

(७) ए, ऐ का उच्चारण कण्ठ और तालुसे होता है। अतः ये कण्ठतालुस्थानीय वर्ण कहलाते हैं।

(८) ओ, औ का उच्चारण कण्ठ और ओष्ठसे होता है। अतः ये कण्ठोष्ठस्थानीय वर्ण कहलाते हैं।

(९) 'व' का उच्चारण दाँत और ओष्ठसे होता है। अतः यह दन्तोष्ठ स्थानीय वर्ण कहलाता है।

(१०) अनुस्वार का उच्चारण नाकसे होता है।

वर्गीकरण—

क, ख, ग, घ, ङ पाँचों अक्षरोंको 'कवर्ग' कहते हैं।
च, छ, ज, झ, ञ पाँचों अक्षर "चवर्ग" कहलाते हैं।
ट, ठ, ड, ढ, ण ,, ,, "टवर्ग" ,, ,,।
त, थ, द, ध, न ,, ,, "तवर्ग" ,, ,,।
प, फ, ब, भ, म ,, ,, "पवर्ग" ,, ,,।
इन्हीं पाँचों वर्गके २५ अक्षरोंको स्पर्शवर्ण भी कहते हैं।
य, र, ल, व चार अक्षरोंको "अन्तःस्थ" कहते हैं।
श, ष, स, ह चार अक्षरोंको "ऊष्म" कहते हैं।

[क्ष, त्र, ज्ञ,—ये तीनों अक्षर संयोगसे बनते हैं यथा—
क्+ष्+अ=क्ष। त्+र्+अ=त्र। ज्+ञ्+अ=ज्ञ।]

उच्चारणभेद—'ज्ञ' के उच्चारणमें दक्षिणी और उत्तरीय लोगोंमें परस्पर भेद है। परन्तु, लिखते दोनों एक ही प्रकारसे हैं।

इंग्लिशमें वैमत्य—'ज्ञ' को *अंग्रेजीमें लिखनेमें दोनोंमें वैमत्य है। दक्षिणका "ज्ञानप्रकाश" दैनिक पत्र 'Dnyan' लिखता है। उत्तरके लोग "ज्ञान" को *Jnan* लिखते हैं। क्योंकि अंग्रेजीमें *J* से ज् और N से ञ् बनते हैं।

प्रश्न

(१) 'ज्ञ' का उच्चारण स्थान बताओ।

(२) 'ज्ञ' की हिन्दीमें लिखनेमें भिन्नता है या उच्चारण में?

(३) अनुस्वार का चिह्न लिखो।

पाठ—५

संयुक्ताक्षर

संयुक्ताक्षर—जब दो या दोसे अधिक व्यञ्जन जिनके मध्यमें स्वर नहीं होता परस्पर मिलते हैं तो वे संयुक्ताक्षर कहे जाते हैं। यथा—अङ्क, बुद्ध, सम्मान, प्रतिष्ठा, उज्ज्वल, सूर्य्य, लब्धप्रतिष्ठ, परस्पर, प्रमिताक्षरा, चन्द्र प्रसूति।

लेखनप्रणाली—संयुक्ताक्षरमें प्रथम अक्षर आधा तथा अन्तका अक्षर पूरा लिखा जाता है। यथा-सत्य, स्वास्थ्य। प्रथममें 'स्' आधा है य पूरा है। द्वितीयमें स् और थ् आधे हैं य पूरा है।

---

* 'लीडर' के प्रधान सम्पादक स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि जो कट्टर मराठी थे। वे 'ज्ञान' Jnan से लिखते थे। यहांतक कि उन्होंने अपने पूरे नामको 'लीडर में सर' की उपाधि मिलनेपर Jna से ही लिखा था। सर चिन्तामणिका पूरा नाम सिराबुरी यज्ञेश्वर चिन्तामणि था। वास्तवमें 'ज्ञ' Jna से ही होना अच्छा है। इसी प्रकार 'लक्ष्मीको' भी कुछ लोग Laxmi लिखते हैं यह खटकता है। क्योंकि अंग्रेजीमें 'क्ष' Ksha से होता है अतः लक्ष्मी—Lakshmi से ही लिखा जाना चाहिये।

(ओ को अव्) विष्णो + ए = विष्ण् + अव् + ए = विष्णवे ।

(औ को आव) पौ + अक = प् + आव् + अक = पावक ।

(३) गुणसन्धि—जब अ और आ के आगे इ या उ हों तो, अ + इ को = ए होता है और अ + उ को = ओ होता है । यथा—

(अ, इ को ए) उप + इन्द्र = उप् + ए + न्द्र = उपेन्द्र ।

(आ, उ को ओ) गङ्गा + उदक = गङ्ग् + ओ + दक = गङ्गोदक ।

जब अ और आ के आगे ई या ऊ हो तो भी ए और ओ होते हैं । यथा—

(आ, ई को ए) रमा + ईश = रम् + ए + श = रमेश ।

(अ, ऊ को ओ) जल + ऊर्मि = जल् + ओ + र्मि = जलोर्मि ।

(आ, ऊ को ओ) महा + ऊर्मि = मह् + ओ + र्मि = महोर्मि ।

जब अ, आ के आगे ऋ, ऌ हों तो अर् या अल् होता है

(अ, ऋ को अर्) कृष्ण + ऋद्धि = कृष्ण् + अर् + द्धि = कृष्णर्द्धि ।

(अ, ऌ को अल्) तव + ऌकार = तव् + अल् + कार = तवल्कार ।

(आ, ऋ को अर्) महा + ऋषि = मह् + अर् + षि = महर्षि ।

(४) वृद्धिसन्धि—जब अ और आ के आगे ए, ऐ, ओ, औ हों तो अ, या आ और ए या ऐ मिलकर 'ऐ' हो जाती है तथा अ या आ और ओ या औ मिलकर 'औ' हो जाता है । यथा—

(अ, ए को ऐ) कृष्ण + एकत्व = कृष्ण् + ऐ + कत्व = कृष्णैकत्व ।

(अ, ऐ को ऐ) देव + ऐश्वर्य = देव् + ऐ + श्वर्य = देवैश्वर्य ।

(अ, औ को औ) कृष्ण + औत्कण्ठ्य = कृष्ण् + औ + त्कण्ठ्य = कृष्णौत्कण्ठ्य ।

(आ, औ को औ) गङ्गा + ओघ = गङ्ग् + औ + घ = गङ्गौघ ।

जब प्र के आगे ऋण आवे तो आर् होता है यथा—

(प्र + ऋ = प्रार्) प्र + ऋण = प्र् + आर् + ण = प्राण ।

जब प्र के बाद ऊ हो तो 'औ' होता है

(अ + ऋ = औ) प्र + ऊह - प्र + औ + ह = प्रौढ़ ।

(५) दीर्घसन्धि—जब अ, आ के आगे अ, आ तथा इ, ई के आगे इ, ई एवं, उ, ऊ के आगे उ, ऊ और ऋ, ॠ के आगे ऋ, ॠ हों तो सवर्ण दीर्घ होता है अर्थात्—अ, आ को आ। इ, ई को ई। उ, ऊ को ऊ तथा ऋ, ॠ को ॠ होती है। इसे दीर्घ सन्धि या सवर्ण दीर्घ सन्धि इसलिये कहते हैं कि दोनों समान अक्षरोंके स्थानोंमें उसीमेंका दीर्घ अक्षर होता है यथा—

(अ + अ = आ) दैत्य् + अरि - दैत्य् + आ + रि = दैत्यारि ।

(आ + अ = आ) विद्या + अभ्यास - विद्य् + आ + भ्यास = विद्याभ्यास ।

(इ + ई = ई) प्रति + ईक्षण - प्रत् + ई + क्षण = प्रतीक्षण ।

(ई + ई = ई) श्री + ईश - श्र् + ई + श = श्रीश ।

(उ + उ = ऊ) विष्णु + उदय - विष्ण् + ऊ + दय = विष्णूदय ।

(ऊ + उ = ऊ) वधू + उत्सव - वध् + ऊ + त्सव = वधूत्सव ।

(ऋ + ऋ = ॠ) पितृ + ऋण - पित् + ॠ + ण = पितॄण ।

(ऋ + ऋ = ॠ) होतृ + ऋकार - होत् + ॠ + कार = होतॄकार ।

जबकी ऽ इस चिह्नवाली सन्धि होती है तो उसे लुप्ताकार सन्धि कहते हैं। यह सन्धि प्राय संस्कृतमें ही होती है। यथा—

(ए + अ = एऽ) हरे + अव - हरे + ऽ + व = हरेऽव ।

(ओ + अ = ओऽ) विष्णो + अव - विष्णो + ऽ + व = विष्णोऽव ।

[संयुक्ताक्षर अपने रूपोंमें परिवर्तन नहीं करते किन्तु सन्धिमें रूप परिवर्तित हो जाते हैं। यही संयुक्ताक्षर और सन्धिमें परस्पर भेद है।]

(२) व्यञ्जनसन्धि—व्यञ्जनसन्धिका दूसरा नाम हल्सन्धि है। यह सन्धि व्यञ्जनोंमें ही होती है। जब दो व्यञ्जन परस्पर मिलते हैं तो

---

* ऽ यह चिह्न लुप्ताकारवाची है इसे लुप्ताकार या भाषा 'अ' कहा जाता है। हिन्दीमें सूरकी कवितामें यह सन्धि आयी है। यथा—"यशोदाऽ कन्हाई"।

यह सन्धि होती है। यथा—रामस्+शेते=रामश्शेते।

जब त् या द् के आगे च या छ अथवा ज या झ हो तो त् या द् को च या ज् हो जाता है। यथा—

विद्वद्+जन्म=विद्वज्जन्म। उत्+ज्वल=उज्ज्वल।
उत्+चयन=उच्चयन। बृहत्+झङ्कार=बृहज्झङ्कार।

जब त् या द् से आगे ट, ठ हों तो त् या द् को ट् या ट् हो जाते हैं। यथा—

तत्+टीका=तट्टीका। सत्+चित्=सच्चित्।
एतत्+ठक्कुर=एतट्ठक्कुर। युष्मद्+चरित्र=युष्मच्चरित्र।

जब त् या द् से आगे श् रहे तो श् को छ तथा त्, द् को च् हो जाता है। यथा—

तत्+श्लोक=तच्छ्लोक। सत्+शिव=सच्छिव।
तत्+शास्त्र=तच्छास्त्र। उत्+श्रृङ्खल=उच्छृङ्खल।

जब त् या द् से आगे ह आवे तो त् या द् को द और ह को ध हो जाता है। यथा—

सिद्+ह=सिद्ध। सत्+हित=सद्धित।
उत्+हार=उद्धार। उत्+हत=उद्धत।

जब त् या द् से आगे ल हो तो त् या द् को ल हो जाता है। यथा—

तत्+लय=तल्लय।
उत्+लङ्घन=उल्लङ्घन।

जब ह्रस्वस्वरके आगे छ रहे तो उसके आगे च् होता है यथा—

शिव+छाया=शिव+च+छाया=शिवच्छाया।
परि+छेद=परि+च्+छेद=परिच्छेद

जब दीर्घस्वरके छ रहे तो च् वैकल्पिक है। यथा—

लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया।

लक्ष्मी + छाया — लक्ष्मी + त् (च) + छाया = लक्ष्मीच्छाया ।

जब किसी वर्गके अक्षरके आगे किसी वर्गके पञ्चमाक्षर हों तो वह अक्षर अपने वर्गका पञ्चमाक्षर हो जाता है । यथा—

सत् + मात्र = सन्मात्र । चित् + मय = चिन्मय ।

जब क् के आगे स्वर या अन्तस्थ (य, र, ल, व) अथवा घोषवर्ण वाले अक्षर हों तो 'क्' को ग हो जाता है । यथा—

वाक् + ईश = वागीश । वाक + दान = वागदान ।
वाक् + दत्त = वाग्दत्त । दिक् + अम्बर = दिगम्बर ।

जब स्वर, अन्तस्थ (य, र, ल, व) और घोषवर्ण आगे रहें तो च्, ट् प् को क्रमसे, ज्, ड, ब् होते हैं । यथा—

अच् + अन्त = अजन्त । षट् + दर्शन = षड्दर्शन ।
षट + नवति = षण्णवति । शप् + भाग = शब्भाग ।

जब स् के आगे श् हो तो स् को श् होता है । यथा—

शिवस् + शरण = शिवश्शरण ।

जब स् के आगे चवर्ग हो तो भी स् को श् हो ।

रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति ।

जब अनुस्वारके आगे अन्तस्थ (य, र, ल, व,) या ऊष्म (श, ष, स, ह) वर्ण हों तो अनुस्वार ज्यों का त्यों रह जाता है यथा—

सं + योग = संयोग
किं + वलयति = किंवलयति ।

जब अनुस्वारके आगे 'स्पर्श' के अक्षर रहें तो अर्थात् क से म तकके व्यञ्जन रहें तो अनुस्वार आगेवाले अक्षरके वर्गका अन्तवाला हो जाता है । यथा—

शं × कर = शङ्कर । सं + ताप = सन्ताप
शां + त = शान्त पं + चल = पञ्चल

जब अनुस्वारके आगे कोई स्वर होता है तो अनुस्वार म्‌के रूपमें हो जाता है। यथा—

सं + उचत = समुचत। सं + आचार = समाचार।
सं + ऋद्धि = समृद्धि। सं × आदर = समादर।

जब त्‌के आगे स्वर और ग्‌, घ्‌, द्‌, ध्‌, ब, भ, य, र, व्‌ रहें तो त्‌को द्‌ होता है। यथा—

जगत्‌ + अम्बा = जगदम्बा चित्‌ + या = चिद्या
सत्‌ + आचरण = सदाचरण उत्‌ + घोषण = उद्‌घोषण
स्वत्‌ + भव = स्वद्‌भव।

जब कोई भी व्यञ्जन अक्षर आगे हो तो म्‌को अनुस्वार हो जाता है। यथा—

हरिम्‌ + वन्दे = हरिं वन्दे।

परन्तु, 'मन्यते'में नहीं होता है।

(३) विसर्गसन्धि—(१) जब ( ) विसर्गसे आगे त या थ हों तो विसर्गको 'स' हो जाता है। यथा—

विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता। विः + तार = विस्तार।

(२) जब विसर्गके आगे च, छ रहें तो विसर्गको 'श' होता है। यथा—

निः + छल = निश्छल। दुः × चल = दुश्चल
निः + चय = निश्चय। निः + चिन्त = निश्चिन्त

(३) जब विसर्गके आगे ट, ठ रहें तो विसर्गको 'ष' होता है। यथा—

रामः + टीकते = रामष्टीकते। निः + ठा = निष्ठा।

(४) जब विसर्गके पहले इ, उ हों और उनके आगे क, ख, प, फ आवें तो विसर्गको 'ष' हो जाता है। यथा—

निः + कपट = निष्कपट। निः + फल = निष्फल।
निः + काम = निष्काम। निः + खेद = निष्खेद।
निः + पाप = निष्पाप। परि + कृत्य = परिष्कृत्य

(५) जब विसर्गके आगे श्, ष्, स् रहें तो विसर्ग विकल्पसे होते हैं। यथा—

हरिः + शरण = हरिश्शरण, हरिःशरण।
निः + पण्ड = निष्पण्ड, निःपण्ड।
निः + सार=निस्सार, निःसार।

(६) जब विसर्गसे पहले अ, आ रहित दूसरे स्वर हों तथा विसर्ग के आगे ग्, घ्, ड, ड्, द्, ध्, ज झ, ध, भ य, र, ल, व्यञ्जन हों तो विसर्गको रेफ होता है। यथा—

निः + उपाय = निरुपाय। निः + बल = निर्बल।
निः + गुण = निर्गुण। निः + धन = निर्धन।
निः + जन = निर्जन। निः + विकार = निर्विकार।
निः + झर = निर्झर। बहिः + भाग = बहिर्भाग।

(७) जब विसर्गके पहले अ हो तथा आगे अ, ग्, घ्, ङ्, झ्, ञ्, ड्, ढ, ण, द्, ध्, न्, ब्, भ, म्, य्, र्, ल्, व, ह रहें तो विसर्गको पहलेके अ के साथ 'ओ' हो जाता है। यथा—

अधः +गति=अधोगति। मनः +रथ=मनोरथ।
मनः +नीत=मनोनीत। मनः +योग = मनोयोग।
पयः +वृद्ध=पयोवृद्ध। तेजः +राशि =तेजोराशि।

(८) जब विसर्गके पहले अ और आगे अ होवे तो विसर्गको 'ओ' होकर आगेवाले 'अ' को लुप्ताकार ऽ हो यथा—

एषः +अग्र-एषोऽग्र

(९) जब विसर्गके पश्चात् 'र्' हो तो विसर्गका लोप होता है और वह अक्षर दीर्घ हो जाता है यथा—

पुनः +रमण =पुना रमण। हरिः +रम्य =हरी रम्य।
शम्भुः +रक्षक = शम्भू रक्षक। निः +रोग =नीरोग।
निः +रन्ध्र=नीरन्ध्र। अन्तः + राष्ट्रिय =अन्ताराष्ट्रिय।

[(१०) नमः +कार = नमस्कार। पुरः+कार=पुरस्कार। भाषः +

प्रश्न

(१) न् को ण कब होता है ?

(२) स को ष कब होता है ?

(३) कौन शब्द स्वाभाविक ण तथा ष रखते हैं—दो उदाहरण दो ।

(४) शुद्ध करो—कृस्न मदन कमान प्रनिपात भीस्म, महान, विसम, रिसि ।

(५) शुद्ध करो—

गिरिकाननमें देवी रहती हैं ।	वृषवाहन महादेवजीका नाम है ।
उनकी विजय निश्चित है ।	विभु प्रभुको कहते हैं ।
वे कैलासपर जाते हैं ।	विशालता, विभावना पर है ।
उनका हृदय सरावन सा है ।	विष पियो, विषतन्तु लाओ ।
सीताका वियोग रामको असह्य था ।	व्याकरणका बोध करो ।

पाठ—८

शब्दप्रकरण

शब्द—कई अक्षरोंके संयोगको शब्द कहते हैं । यह शब्द दो प्रकारका होता है । एक सार्थक दूसरा निरर्थक ।

सार्थक-निरर्थक—हिन्दी वैयाकरण-स्वर्गीय कामताप्रसाद गुरु जैसे प्रसिद्ध विद्वान् उसी शब्दको सार्थक शब्द मानते हैं जिसका कुछ अर्थ निकले । जिस शब्दका कुछ अर्थ ही न निकले वह शब्द निरर्थक है ।

सार्थक—सूर्य, चन्द्र, हिमालय, *काश्मीर, गज, गङ्गा, गरुड़, यमुना प्रभृति सार्थक शब्द हैं । क्योंकि उक्त शब्दोंमें क्रमशः देवताओं, स्थलों, नदियोंके अर्थ निकलते हैं । अतः ऐसे शब्द सार्थक कहे जाते हैं ।

---

* संस्कृत साहित्यमें—राजतरंगिणी, नीलमतपुराण प्रभृतिमें—कश्मीर शब्द ही अधिक पाया जाता है । परन्तु, काश्मीर कश्मीर और कश्यपमेर शब्द भी वाचस्पत्य आदि प्रामाणिक कोषोंमें शुद्ध हैं ।

निरर्थक—'कचटतप' कहनेसे कोई अर्थ नहीं निकलता है। अतः ऐसे शब्द निरर्थक कहे जाते हैं। इन्हें अक्षरमात्र कह सकते हैं।

* अ आदि शब्द-जब श्रोता तथा वक्ता दोनों उद्भट विद्वान् हों तो अ आदि प्रत्येक अक्षर शब्द हो जाता है। यथा-'अ' के अर्थ है कृष्णभगवान् 'अकारो वासुदेव स्यात्' इस प्राचीन सूक्तिसे प्रति अक्षर शब्द हैं।

शब्द व्युत्पत्ति—सार्थक शब्द व्युत्पत्ति द्वारा तीन प्रकारके होते हैं-वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यङ्ग्यार्थ।

वाच्यार्थ—जो शब्द शब्दोंमें निर्दिष्ट अर्थ बतावे उसे वाच्यार्थ कहा जाता है। यथा-"गज एक शुभ पशु है" इस वाक्यमें "गज" शब्द वाच्यार्थ है। क्योंकि उससे हाथीका अर्थ निकलता है।

लक्ष्यार्थ—जो शब्द लक्षणके द्वारा अर्थान्वित हो वह शब्द लक्ष्यार्थ कहा जाता है यथा—"तुम दुष्ट हो" इस वाक्यमें "दुष्ट" शब्दका अर्थ असभ्य व्यवहार करनेवाला है। यह अर्थ लक्षण करनेपर सिद्ध हुआ अतः यह लक्ष्यार्थ है।

व्यङ्ग्यार्थ—जो शब्द व्यङ्ग्यसे जाना जाय वह व्यङ्ग्यार्थ कहा जाता है। यथा—"चिड़ियां बसेरा लेने लगीं" इस वाक्यमें व्यङ्ग्यके (व्यञ्जनाके) द्वारा अर्थ निकला कि, "सूर्य अस्त हो गया" क्योंकि चिड़ियां सूर्यास्तपर बसेरा लेती हैं। अतः यहां व्यङ्ग्यार्थ है-ऐसे शब्द व्यङ्ग्यार्थवाची होते हैं।

---

* हिन्दी भाषा इंगलिशकी तरह नहीं है कि ऊँचे पण्डितोंके लिए इसके प्रति अक्षर शब्द न हो जायें। जैसे ही अंगरेजीमें T W (टी डब्लू) आदिका कोई अर्थ न निकले। परन्तु, हिन्दीके प्रति अक्षर शब्द हैं यथा-'मा' से लक्ष्मीका अर्थ निकलता है। किंबहुना-संस्कृत व्याकरण विश्वकी समस्त भाषाओंके शब्दोंको उनके अभिमत अर्थमें सिद्ध कर सकता है क्योंकि उसमें सभी भाषाओंका दूरत्व तथा नैकट्य सम्बन्ध है-किसीकी संस्कृत जननी है तो किसीकी प्रपितामही है। शब्दार्थ-सामर्थ्यसे-Cat कैट शब्दको ही लीजिये-कै-अर्द इव अटति व्युत्पत्तिसे बल्के घरका बोलनेवाली बिल्ली सिद्ध करनेकी क्षमता संस्कृतमें ही है। क्या अन्य भाषाओंमें ऐसी शक्ति है-कदापि नहीं।

सार्थक-परिचय—मनुष्य-मात्रकी बोली सार्थक शब्दवाली है—चाहे वह कोई भाषा क्यों न बोले। अतः सार्थक वाणी शाब्दिक कही जाती है।

निरर्थक परिचय—पशु-पक्षी, स्वेदज, अण्डजकी वाणी निरर्थक है। * आकार एवं इंगित ज्ञान तथा संकेतादि द्वारा प्रकट किये हुए भाव भी अव्यक्त ही होते हैं। अतः संकेतमयी वाणी भी निरर्थक है। इसीसे निरर्थक वाणी "ध्वनि" कही जाती है।

शब्द खण्ड—सार्थक शब्द खण्ड पांच प्रकरणोंमें बटे हैं—(१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) विशेषण (४) क्रिया (५) अव्यय।

विकृत-अविकृत—विकृत और अविकृत भेदोंसे सार्थक शब्द दो प्रकारके होते हैं।

विकृत—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया विकृत शब्द हैं अर्थात् इनके रूप बदलते हैं अर्थात् ऐसे होते हैं—

सुग्गा-सुग्गे, सुग्गों। तुम-तुम्हें, तुमको। हरा-हरे, नीला-नीले जाता है-जाते हैं, जाती है।

अविकृत—अब, जब, तब यहां, वहां। अव्यय अविकृत होता है।

[तीन खण्ड भी—कुछ वैयाकरण संस्कृतके आधारपर सार्थक शब्दोंको तीन खण्डोंमें ही मानते हैं-संज्ञा, क्रिया, अव्यय। वे लोग सर्वनाम और विशेषणको संज्ञाके अन्तर्गत मानते हैं-यह रीति भी अच्छी है।]

प्रश्न

(१) शब्द कितने प्रकारके होते हैं?

(२) मनुष्य तथा पशु पक्षियोंकी वाणीमें क्या अन्तर है?

(३) शब्दके कितने खण्ड होते हैं?

(४) विकृत और अविकृत कौन-कौन हैं?

(५) तीन खण्डोंमें शब्द माननेमें कौन-कौन खण्ड होते हैं?

---

* संकेतमयी वाणी पण्डितोंके मतसे सार्थक है। पण्डितोंके मत मान्य नहीं है। अन्योक्ति आदिके प्रदत्त अधिकार है।

पाठ ९

संज्ञा

संज्ञा—जो किसी व्यक्ति या वस्तु या स्थलका नाम बतावे उसे संज्ञा कहा जाता है। यथा-वाराणसी, प्रयाग, सुग्गा, दूध, राम, सीता प्रभृति।

संज्ञा-भेद—संज्ञा पांच प्रकारकी होती है—जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समुदायवाचक, द्रव्यवाचक।

जातिवाचक—(१) जिस संज्ञासे जातिभरके लोगों या स्थलों अथवा पदार्थोंका परिज्ञान होवे—केवल एकका परिज्ञान न होवे—वह संज्ञा जातिवाचक संज्ञा है। यथा—

वाक्यगत उदाहरण—हाथी चलता है। घोड़ा दौड़ता है। गौ चरती है। कुत्ता भूंकता है। मनुष्य हंसता है। महिला सोती है।

उपर्युक्त वाक्योंमें हाथी, घोड़ा, गौ कुत्ता, मनुष्य और महिलासे किसी विशेष हाथी, घोड़ा, गौ, कुत्ता, मनुष्य और महिलाका बोध नहीं होता है अपितु, तत्तद् जातिभरका बोध होता है। अतः ऐसे शब्द जातिवाचक संज्ञावाले होते हैं।

व्यक्तिवाचक—(२) जिस संज्ञासे एक ही पदार्थ या व्यक्ति अथवा स्थलका बोध होवे—जातिभरका नहीं—वह व्यक्तिवाचक संज्ञावाला शब्द है। यथा—जवाहरलाल नेहरू। सरोजिनी नायडू (प्रान्तपा)। मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि। कलकत्ता। कृष्णगञ्ज प्रभृति।

उपर्युक्त शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाके हैं। इन शब्दोंसे किसी विशेष व्यक्ति या स्थलका बोध होता है—जातिभरका नहीं।

वाक्यगत उदाहरण—जवाहरलाल नेहरू प्रयागके निवासी हैं। सरोजिनी नायडू युक्तप्रान्तकी प्रान्तपा थीं। मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय दर्शनीय है। कलकत्ता और कृष्णगञ्जमें पर्याप्त अन्तर है।

उपर्युक्त वाक्योंमें जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, मैथिली-शरण गुप्त और हिन्दू विश्वविद्यालय किसी विशेष व्यक्ति या स्थानका नाम निर्देश करनेके कारण व्यक्तिवाचक संज्ञावाले हैं। इन नामोंसे जातिमात्रका बोध नहीं होता है।

भाववाचक—(३) जिस संज्ञासे किसी जीव-पदार्थका धर्म, गुण, व्यापार, अवस्था अथवा भावका बोध होवे उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। यथा—महत्ता, नीचता, आदान, प्रदान, सचाई, भलाई, बुराई, शैशव। उपर्युक्त महत्ता प्रभृति शब्द प्राणियोंके भाव हैं इन्हें कोई देख नहीं सकता। क्योंकि इनके रूप रंग कुछ नहीं । अतः ऐसे शब्द भाववाचक हैं।

वाक्यगत उदाहरण—स्वर्गीय-गोस्वामी दामोदर शास्त्रीके पाण्डित्य-की महत्ता प्रसिद्ध है। कृष्णदेवप्रसाद गौड़ शैशवकालसे कविता करने लगे थे।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'महत्ता' 'शैशव' प्रभृति शब्द भाववाचक संज्ञा-वाले हैं क्योंकि ये गोस्वामीजी तथा गौड़जीके गुणोंको दर्शित करने वाले हैं। अतः ऐसे शब्द भाववाचक संज्ञक हैं।

समुदायवाचक—(४) जिस संज्ञासे किसी वस्तुके समुदायका या किसी व्यक्तिके समुदायका परिज्ञान होवे उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। यथा —श्रेणी, गुच्छा, कुञ्ज, दल, ढेरी प्रभृति ।

उपर्युक्त श्रेणी प्रभृति शब्द किन्हीं पदार्थों अथवा व्यक्तियोंके समूह को बताते हैं। अतः ये शब्द समुदायवाचक हैं।

वाक्यगत उदाहरण—यह, पुष्पोंका गुच्छा है। बालकोंकी श्रेणी है। लताओंके कुञ्जमें आओ। सैनिकोंका दल था। आमोंकी ढेरी थी।

उपर्युक्त वाक्योंमें गुच्छा श्रेणी, कुञ्ज, दल, ढरी शब्द किन्हीं व्यक्तियों या पदार्थोंके समुदायको बतानेवाले हैं। यथा—पुष्पोंका 'गुच्छा' बालकोंकी 'श्रेणी' इन वाक्योंमें गुच्छा प्रभृति शब्द फूलोंके अथवा बालकों के समूह बतानेवाले हैं। अतः ये शब्द समुदायवाचक संज्ञावाले हैं।

द्रव्यवाचक—(५) जिस संज्ञासे धातु या द्रव्य पदार्थका बोध होवे वह द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाती है। यथा—

सुवर्ण, चांदी, तांबा, कांसा, लवण, चीनी प्रभृति।

वाक्यगत उदाहरण—सुवर्ण भारी होता है। चांदी सफेद होती है। चीनी मीठी होती है। लवणको नमक कहते हैं। रत्न बहुमूल्य हैं।

* उपर्युक्त वाक्योंमें सुवर्ण, चांदी, चीनी, लवण, रत्न आदि द्रव्यवाचक संज्ञावाले हैं। क्योंकि इनसे सुवर्ण आदि धातु तथा लवण आदि द्रव्य पदार्थका बोध होता है।

प्रश्न

(१) संज्ञा कितने प्रकारकी होती हैं?

(२) जो पाँच प्रकारकी संज्ञा नहीं मानते वे कौन-कौन संज्ञा नहीं मानते।

(३) व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाके भेद बताओ।

(४) 'दिवाकर जोशी व्याकरणाध्यापक हैं" इस वाक्यमें कौन संज्ञा है?

(५) भोलानाथ पाण्डेय साहित्याचार्य पण्डितवर्गमें हैं' इस वाक्यमें पण्डितवर्ग ' किस संज्ञाका परिचायक है?

(६) समुदायवाचक संज्ञा किसे कहते हैं-एक उदाहरण दो।

(७) समुदायवाचक और जातिवाचकमें क्या अन्तर है?

(८) भाववाचक और व्यक्तिवाचकमें क्या अन्तर है?

(९) हिन्दूविश्वविद्यालयके प्रधानाध्यापक केशवप्रसाद मिश्रका अगाध पाण्डित्य प्रख्यात है इसमें कौन शब्द भाववाचक है?

(१०) द्रव्यवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

---

* कुछ वैयाकरण तीन ही प्रकारकी संज्ञाएं मानते हैं—जातिवाचक, व्यक्तिवाचक और भाववाचक। वे लोग समुदायवाचक और द्रव्यवाचकको जातिवाचकके अन्तर्गत मानते हैं।

निजवाचक—निजवाचक सर्वनाम स्वयंका बोधक होता है यह तीनों पुरुषोंमें आता है। यथा—

मैं आप ही आ रहा हूं। आप स्वयं ही आये।

वे आप ही यहां आयीं। तुम आप ही आप गये।

निश्चयवाचक—जो सर्वनाम किसी व्यक्ति या पदार्थके लिए निश्चित रूपेण आवे उसे *निश्चयवाचक सर्वनाम* कहते हैं। यथा—

वे वक्तृताएं महामना मालवीयजीकी थीं।

ये आलोचनाएं श्यामसुन्दरदासजी की थीं।

वे कविताएं माखनलाल चतुर्वेदीकी थीं।

यह कमलापति शास्त्रीकी टिप्पणी है।

नामको भिन्न मानते हैं। परन्तु आदरवाची सर्वनाम पुरुषवाची सर्वनामके अन्तर्गत है। यथा—*श्रीमान कहते हैं-आप यहां गये थे। आप लोग योग्य पुरुष हैं।*

यदि स्त्री स्वयं आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण हो या आचार्यत्व पदको अलंकृत करती हो तो "आचार्या' होगा। इसी प्रकार वर्तमान हिन्दीमें व्यवहृत कुलपति शब्दका स्त्रीलिङ्ग, कुलपतिका' होगा—चाहे वह स्त्री स्वयं कुलपतित्व करती हो अथवा कुलपतिकी भार्या हो। दोनोंमें समान शब्द 'कुलपतिका' ही रहेगा किन्तु, यदि कोई स्त्री *प्रान्तकी गवर्नर है तो उसे प्रान्तपा' 'प्रान्तेशा* कहा जायगा। परन्तु, यदि कोई स्त्री स्वयं प्रान्तकी गवर्नर नहीं है अपितु प्रान्तके गवर्नरकी पत्नी है तो उसे "*प्रान्तपतिका, प्रान्तपतिभार्या*" प्रभृति कहा जायगा। इसी रीतिसे चीफ जस्टिसकी स्त्रीको *सिद्धान्तपतिका* कहना चाहिये यदि कोई *महिला स्वयं* चीफ जस्टिस हो तो उसे सिद्धान्तपा कहना चाहिये। यथा—

[*है प्रान्तपा महिला स्वयं जो प्रान्तपतिका योगसे।*
होती च कुलपतिका तथा संयोग और वियोगसे॥
प्रान्तेशा प्रान्तेश्या यथाक्रम प्रान्तपति की प्रान्तपा।
सिद्धान्तपति सिद्धान्तपतिका है स्वयं सिद्धान्तपा॥]

[आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादाचार्यापि च स्वतः
अमरकोषकी व्याख्याके अनुसार]

यह गङ्गाशङ्कर मिश्रका अमलेख था।

उपर्युक्त वाक्योंमें यह, यह, वे, ये, वे, सर्वनाम निश्चयत्वका बोध कराते हैं। उनके सुननेसे निश्चित वस्तु या लेखादिका बोध होता है। अत' ऐसे सर्वनाम निश्चयवाचक हैं।

अनिश्चयवाचक—जो सर्वनाम किसी व्यक्ति या पदार्थके लिए अनिश्चयत्व प्रकट करे यह अनिश्चयवाची सर्वनाम कहलाता है। यथा-किसी, कोई।

कोई आता होगा। किसीको भी दे दो।

उपर्युक्त वाक्योंमें कोई, किसीसे अनिश्चयत्वका ज्ञान होता है इसी प्रकार थोड़ा, बहुत, दूसरे प्रभृति शब्द भी अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। यथा—

थोड़ा खाना। बहुत आदमी थे। दूसरे लोग थे।

[द्रष्टव्य—'जो कि' लिखना गलत है अर्थात्—'जो' के पश्चात् 'कि' नहीं लिखना चाहिये। यथा—

शुद्ध वाक्य—मैंने यही कहा—जो उन्होंने कहा।

अशुद्ध वाक्य—मैंने यही कहा—जो कि उन्होंने कहा।]

सम्बन्धवाचक—जो सर्वनाम किसीका सम्बन्ध बतावे उसे सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम जानना चाहिये। यथा—

कल आपने जो हाथी देखा था यह महाराज विभूतिनारायणसिंह का था। काशीके रामनारायण मिश्रके उस मधुर गुणके वे उपासक थे। प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद मिश्रके इस साहित्यश्रमको साधुवाद।

ऊपरके वाक्योंमें जो, उस, यह, इस प्रभृति सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं—ये सर्वनाम सम्बन्ध प्रकट कर रहे हैं अत' सम्बन्धवाची हैं।

प्रश्नवाचक—जिस सर्वनामसे प्रश्नकी व्युत्पत्ति होवे वह सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है। यथा—

श्रीमन्! आप कहाँ जाते हैं। महाराय! आपका शुभ नाम क्या है।

शुभे ! आपकी कुमारी उपाध्येयी कहाँ हैं। आप क्या चाहते हैं। कौन आता है ?

प्राय क्या, कौन सर्वनाम प्रश्नवाची हैं ?

[द्रष्टव्य—हिन्दीमें स्त्रियां कह सकती हैं-"हम जाते हैं"

अर्थात्—"हम जाती हैं" भी शुद्ध है "हम जाते हैं" भी शुद्ध है। उत्तम पुरुषवाची सर्वनामके बहु वचनोंमें स्त्रियां ऐसा प्रयोग सर्वत्र कर सकती हैं। यथा—

हम जाते हैं, हम आते हैं
हम जायेंगे, हम आयेंगे
हम गये थे, हम आये थे

प्रश्न

(१) पुरुषवाची सर्वनाम के प्रकारके होते हैं ?

(२) 'श्रीमान् ऐसा कहते हैं" इसमें कौन सर्वनाम है।

(३) निश्चयवाचक और निश्चयवाचकके भेद बताइये।

(४) अनिश्चयवाचक तथा प्रश्नवाचकके भेद बताओ। क्या 'महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति हुए थे?' इस वाक्यमें क्या क्या है? बताओ

पाठ-१२

लिङ्ग—संज्ञा तथा सर्वनाममें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं जिनके द्वारा जाना जाता है कि अमुक सर्वनाम या संज्ञा अमुक लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारकमें है। अतः सर्वप्रथम आप लिङ्ग ज्ञान करें।

लिङ्ग—*हिन्दीमें केवल दो लिङ्ग, होते हैं—पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग।

---

* हिन्दीमें कुछ विद्वानोंने तीन लिङ्ग बताये। परन्तु वे सफल नहीं हुए क्योंकि हिन्दीमें लोग दो ही लिङ्ग मानना चाहते हैं-वे लोग कहते हैं कि तीन लिङ्ग माननेसे यह भाषा क्लिष्ट हो जायगी। सबसे विपुल समुदाय दो लिङ्गके पक्षमें है—थोड़े लोग तीन लिङ्गके पक्षमें हैं

* यथा—पुरुष, स्त्री।

जिसके द्वारा किसी प्राणी या पदार्थका पुरुषत्व या स्त्रीत्व ज्ञात होवे उसे 'लिङ्गज्ञान' कहते हैं।

पुंलिङ्ग—जिससे पुरुष जातिका ज्ञान होवे वह पुंलिङ्ग है। यथा—सूर्य, चन्द्र, बैल, हाथी, घोड़ा, ऊँट, मनुष्य, आम।

स्त्रीलिङ्ग—जिसके द्वारा स्त्री जातिका ज्ञान होवे वह स्त्रीलिङ्ग है। यथा—सुमर्चला, अरुन्धती, सीता, महिला, लड़की, तनया, नम्री।

वाक्यगत उदाहरण—

मनुष्य आता है। महिला आती है।
बालक आम खाता है। बालिका आम खाती है।
बैल चरता है। गौ चरती है।
सिंह गरजता है। सिंहनी गरजती है।
घोड़ा हिनहिनाता है। घोड़ी हिनहिनाती है।
जनककी कन्या थी। कौशल्याके पुत्र थे।
वशिष्ठजी पुरोधा थे। अनुसूया त्रिकालज्ञा थीं।

उपयुक्त वाक्योंमें मनुष्य, बालक, बैल, सिंह, घोड़ा, जनक, वशिष्ठ, शब्द पुंलिङ्ग हैं। महिला, बालिका, गौ, सिंहनी, घोड़ी, कौशल्या, कन्या, अनुसूया स्त्रीलिङ्ग हैं।

कुछ शब्द—नीचे कुछ शब्द दिये जाते हैं जिनसे पुंल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग-का ज्ञान भली भाँति हो सकता है।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भाई	बहिन	पिता	माता
मनुष्य	स्त्री	विद्वान्	विदुषी
राजा	रानी	जनक	जननी

* लिङ्गका अर्थ है चिह्न—अर्थात् जिस चिह्न द्वारा यह ज्ञात किया जाय कि यह संज्ञा या सर्वनाम अमुक लिङ्ग—पुरुष या स्त्री लिङ्ग—में है उसे लिङ्ग कहते हैं।

उपर्युक्त शब्दोंसे परिज्ञान हो जाता है कि पुंल्लिङ्गसे स्त्रीलिङ्ग एक दम भिन्न रहता है।

पुंल्लिङ्गसे स्त्री लिङ्ग—पुंल्लिङ्गसे स्त्रीलिङ्ग बनानेके कुछ नियम—

(१) जब पुंल्लिङ्ग अकारान्त शब्द रहते हैं तो स्त्रीलिङ्ग बनाने अन्तमें 'ई' लगाते है।

(२) जब पुंल्लिङ्ग आकारान्त शब्द रहते हैं तो स्त्रीलिङ्ग बनाने में अन्तमें ई लगाते हैं। यथा क्रम—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दास	दासी	तरुण	तरुणी
शृगाल	शृगाली	बिड़ाल	बिड़ाली
व्याल	व्याली	मृग	मृगी
दादा	दादी	सुग्गा	सुग्गी
मामा	मामी	घोड़ा	घोड़ी
चाचा	चाची	कुत्ता	कुत्ती
गदहा	गदही	पिल्ला	पिल्ली

जब व्यापारवाची पुंल्लिङ्ग शब्द रहते हैं तो उनके स्त्रीलिङ्ग बनानेमें आगे 'इन' लगाते हैं। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कहार	कहारिन	कुम्हार	कुम्हारिन
ग्वाल	ग्वालिन	लोहार	लोहारिन
सुनार	सुनारिन	धोबी	धोबिन

कुछ पुंल्लिङ्ग शब्दोंमें नी या इनी लगनसे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भील	भीलिनी	मोर	मोरनी
पद्म	पद्मिनी	राग	रागिणी

कुछ पुंल्लिङ्ग अकारान्त शब्द 'इका' लगनेसे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पत्र	पत्रिका	रक्षक	रक्षिका
नाटक	नाटिका	श्रोटक	श्रोटिका

कुछ पुंल्लिङ्ग शब्दोंमें 'आइन' लगाते हैं, तो वे स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पण्डित	पण्डिताइन	लाला	ललाइन
पण्डा	पण्डाइन	चौबे	चौबाइन
पाड़े	पड़ाइन	ओझा	ओझाइन

कुछ पुंल्लिङ्ग शब्दोंमें, जो उपनामवाची* हैं उनमें, आइन, नी प्रभृति जोड़ते हैं तो वे स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
उपाध्याय	उपाध्यायिन	कटारे	कटारिन
चंसोलिया	चसोल्नी	सिरघर	सिरघरिन
चाचोंढ़िया	चाचोंढ़िनी	टेनगुरिया	टेनगुरनी।
नगायच	नगायचिन	हिंगवासिया	हिंगवासिनी
दीक्षित	दीक्षितिन	थापक	थापकन
पाठक	पाठिका, पाठकन	दूबे	दुबाइन
तिवारी	तिवारिन	पुर्टोलिया	पुर्टोल्नी
सीरौठिया	सीरौंठिनी	घुघौंलिया	घुघौंल्नी

* उपनामवाची शब्द सदा पुंल्लिङ्ग ही चलते हैं उनको स्त्रीलिङ्गमें द्योतित ऊपरकी रीतिसे करते हैं। यदि कोई स्त्री सीरौठिनी लिखे तो भी वह 'सीरौठिया' ही समझा जायगा। यथा—यदि वह लिखे 'कृष्णा सीरौठिया' या कृष्णा सीरौठिनी तो भी सीरौठिया ही समझा जायगा। कुछ शब्द उपनामवाची स्त्रीलिङ्ग होते ही नहीं। यथा—नेहरू, राय, काटजू शब्द दोनों लिङ्गोंमें समान हैं। वाक्यमें उदाहरण—इन्दिरा नेहरू प्रभृति।

नीचे लिखे कुछ शब्द ऐसे हैं जो सदा पुंल्लिङ्ग होते हैं उनको का लिङ्ग दर्शानेके लिए स्त्रीलिङ्गवाची शब्द जोड़ने पड़ते हैं। यथा—

कौआ, उल्लू, खटमल। इन्हें स्त्री-लिङ्गमें ऐसे कहेंगे—मादा कौआ, मादा उल्लू, मादा खटमल, काकभार्या, खटमल-वनिता प्रभृति।

कुछ शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं उन्हें पुंल्लिङ्ग दर्शानेके लिए उनमें पुल्लिङ्गके शब्द जोड़ते हैं। यथा—

चील, गिलहरी, छिपकली, चिड़िया प्रभृति। इन्हें पुल्लिङ्गमें ऐसे कहेंगे— नर चील, नर गिलहरी, नर छिपकली प्रभृति।

लिङ्गविषयक कुछ विशेष नियम—

(१) प्राय: संस्कृत पुंल्लिङ्ग शब्द हिन्दीमें भी पुंल्लिङ्ग होते हैं। यथा—सूर्य, चन्द्र, महाराज, हरि प्रभृति।

(२) प्राय: संस्कृतके नपुंसक लिङ्ग शब्द हिन्दीमें पुंलिङ्ग होते हैं यथा- धन, सलिल, सत्य, जलज, ज्ञान, दधि, पय, धर्म, धनु आदि।

(३) प्राय: संस्कृतके स्त्रीलिङ्ग शब्द हिन्दीमें स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा- मति, लज्जा, लक्ष्मी, सभा, पृथ्वी, लता, वनिता

[हिन्दीमें हाथी, मोती, दही सदा पुंल्लिङ्ग हैं]

(तारा शब्द संस्कृतमें स्त्रीलिङ्ग किन्तु, हिन्दीमें पुंल्लिङ्ग है)

(४) जिन भाववाचक शब्दोंके अन्तमें आ, ई तथा वट लगा हो वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा—

सत्ता, मित्रता, चिकनाई, ढुलाई, भलाई, दिखावट, सजावट, बनावट।

(५) जिन शब्दोंमें अन्तमें आ, ई, त, स हों वे प्राय: स्त्रीलिङ्ग हैं। यथा—सेविका, चन्द्रिका, वाणी, प्यारी, माधुरी, ... रात, छात, घात, मात, साँस, घास, प्यास आदि।

(६) जिन शब्दोंके अन्तमें आब, और, ब, श, हों वे पुल्लिङ्ग होते हैं। यथा—खिलाब, फ्याब, दमाब, इनकार, इश्तहार, हिसाब, होश, जोश, खामोश।

(७) जिन शब्दोंके अन्तमे त्व, पन, पा, आव हों वे पुंल्लिङ्ग होते हैं। यथा—साधुत्व, सतीत्व, बचपन कमीनापन, बुढ़ापा, रडांपा, मनमुटाव, फैलाव आदि। जिन शब्दोंमें स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनोंके शब्द संयुक्त हों उनमें अन्तवाले शब्दके अनुसार लिङ्ग ज्ञान करना चाहिये। यथा—

दयासागर, अभ्रराशि, रमापति, सीताराम, उमापति, राधाकृष्ण।

उपयुक्त शब्दोंमें अन्तमें पुंल्लिङ्ग शब्द होनेसे पुंल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग होनेसे स्त्रीलिङ्गके हैं। यथा—

दयासागर पुल्लिङ्ग है तथा अभ्रराशि स्त्रीलिङ्ग है।

कुछ पुल्लिङ्ग शब्द—हीरा, पन्ना, मोती, मूंगा, माणिक्य, जवाहरात, मह, सूय, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, मास, चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ आषाढ़, शरीर, कान, ओंठ, गाल, तालु, नाखून, पाँव, बाल, पांव, मस्तक, मुख, रोम, सिर, हाथ, कासा, तांबा, पीतल, लोहा, सीसा, सोना, अन्न, वृक्ष, द्रव्य, पदार्थ, जल, स्थल, अवयव, अंग, अशोक, ताल, देवदारु, पीपल, वट, शीशम, सागौन, गेहूं, चना, चावल, जौ, बाजरा, बाजा, झगड़ा, कन्धा, घड़ा, भैंसा, अखबार, तार, टेलीफोन, टेलीग्राम, रेडियो, टेलिविजन, फेयुलग्राम, लाउडस्पीकर प्रभृति।

कुछ स्त्रीलिङ्ग शब्द—जलसा, मजा, टोली, फौज, भीड़, सेना, सरकार, मशीनगन, पिस्तौल, चमक, अंगुली, आख, खाल भीम, जांघ, नाक, नस, हड्डी, चांदी, मिट्टी, कचनार, नीम, जामुन, सुलह, छाछ, मटर, सीख, पानी, नदी, पृथिवी, स्याही, सूरत, पुकार, ताकत, बैठक, महिमा, खटिया, मचिया, पटिया, हडिया, चिड़िया, सतिया, धूम, बारीस, लूट, हरारत, मुहब्बत, नफासत, नजाकत, बफालत, जायदाद, शराब, बारात, पोशाक, जय, विजय, विनय प्रभृति।

जिन शब्दोंके अन्तमें ज,न, आये हों वे प्राय पुंल्लिङ्ग होते हैं। यथा-

गोत्र, क्षेत्र, स्तोत्र, चरित्र, पवित्र, पत्र, पात्र, छात्र, शास्त्र, नेत्र, स्तुत्र, मित्र, साधन, वाहन, भवन, पालन, अध्यापन, आदि आदि।

प्रश्न

(१) लिङ्ग किसे कहते हैं?
(२) हिन्दीमें कितने लिङ्ग हैं?
(३) आदमी शब्द कौन लिङ्ग है?
(४) पद्मिनका पुल्लिङ्ग क्या है?
(५) मामाका स्त्रीलिङ्ग, लक्ष्मीका पुल्लिङ्ग, बहादुरका स्त्रीलिङ्ग बनाओ।
(६) मोरनी, कच्चारे कुत्तेकिया कौन लिङ्ग हैं?
(७) दधि कौन लिङ्ग है? संयुक्त शब्द होनेपर कैसे लिङ्ग जाना जाता है।
(८) निम्न वाक्योंमें लिङ्ग बताओ—
(क) हम भोजन करते हैं।
(ख) तुम गाना सुनाते हो।
(ग) वे गेंद खेलते हैं।
(घ) वह घरमें बैठी है।
(ङ) मैं लड़की थी।

पाठ-१३

वचन—जिस शब्दसे किसी व्यक्ति या पदार्थकी संख्याका ज्ञान हो, उसे वचन कहते हैं। हिन्दीमें दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन। जिससे एक संख्याका ज्ञान हो वह एकवचन जिससे एकसे अधिक संख्याओंका ज्ञान हो वह बहुवचन कहलाता है। यथा—

[द्रष्टव्य—संस्कृतमें तीन वचन होते हैं—एकवचन द्विवचन और बहुवचन।]

एकवचन	बहुवचन
देवी	देवियां
गौ	गौएं

एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे
घोड़ा	घोड़े
पत्ता	पत्ते
चिड़िया	चिड़िया
वस्तु	वस्तुएं
* रुपया	रुपये

उपर्युक्त शब्दोंसे परिज्ञात हो जाता है कि जब एकवचन कहना हो तो देवी आदि एकवचनके शब्द होते हैं और जब बहुवचनका प्रयोग करना होता है तो 'देवियां' आदि बहुवचनके शब्द रखे जाते हैं। आकारान्त पुंल्लिङ्गके बहुवचनमें ए होता है तथा आकारान्त स्त्रीलिङ्गके बहुवचनमें आएं होता है यथा—

पुंल्लिङ्ग आकारान्त—

एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे
गदहा	गदहे

स्त्रीलिङ्ग आकारान्त—

एकवचन	बहुवचन
छात्रा	छात्राएं
पाठशाला †	पाठशालाएं

* एक रुपया। सवा रुपये। डेढ़ रुपये। पौने दो रुपये। इन शब्दोंमें एकके साथ रुपया है। परन्तु एकसे अधिक होनेपर 'रुपये' हो गया है अर्थात् सवा रुपये बहुवचन है। कुछ लोग सवा रुपया भी कहते हैं। प्रायः दोनों मत प्रचलित हैं। परन्तु सवा रुपये आदि कहना ही अच्छा है।

† कुछ लोग कहते हैं— पाठशाले जाता हूं। धर्मशाले गया था। परन्तु ये प्रयोग सर्वथा गलत हैं इस रीतिसे स्त्रीलिङ्गमें बहुवचनमें 'ए' न लगाकर 'आएं' लगता है तथा सम्बन्धमें भी स्त्री लिङ्गमें 'ए' नहीं होता है।

यदि स्त्रीलिङ्ग शब्दके अन्तमें ई हो तो उसके बहुवचनमें 'इयां' होता है यथा—

एकवचन	बहुवचन
बेटी	बेटियां
रोटी	रोटियां
भिल्ली	भिल्लियां
शीशी	शीशियां

यदि स्त्रीलिङ्ग शब्द त या स से समाप्त होते हों तो उनके बहुवचनों में एं लगता है यथा—

एक वचन	बहुवचन
रात	रातें
मात	मातें
सास	सासें

कुछ शब्दोंको गण, जन, वृन्द लगाकर बहुवचन बनाते हैं यथा—

एकवचन	बहुवचन
गुरु	गुरुगण
देव	देवगण
छात्र	छात्रजन
सभ्य	सभ्यवृन्द
क्षत्रिय	क्षत्रियवृन्द

कुछ शब्दोंके बहुवचनमें 'इयों' लगता है यदि वे शब्द अन्त में इ, या ई से समाप्त होते हों। यथा—

एकवचन	बहुवचन
मोती	मोतियों
हाथी	हाथियों
भाई	भाइयों
धोबी	धोबियों

नित्य बहुवचन—कुछ शब्द नित्य बहुवचनान्त हैं। यथा—

प्राण, लोग, बाराती प्रभृति।

आदरवाची बहुवचन—आदर-सूचक शब्द भी बहुवचन होते हैं। यथा—

मास्टर साहब आये	प्रिंसिपल * कलकत्ते गये
वाइस चासलर गये	आप † आस्ट्रिया आयेंगे
गयामें विष्णुचरण ‡ हैं	वे कुलपतिका होंगी

प्रश्न

(१) कितने प्रकारके वचन होते हैं? केष रुपये क्यों बहुवचन है। आदमी यात्रा, माता शब्दोंके बहुवचन बनाओ। 'कुलपति आये' क्यों बहुवचन है।

पाठ-१४

पुरुष—यद्यपि पुरुषके विषयमें संज्ञा प्रकरणमें बताया जा चुका है पुन यहां दिग्दर्शन करा देता हूं।

तीन पुरुष—पुरुष तीन प्रकारके होते हैं—उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्यपुरुष।

पुरुषकार्य—उत्तम-पुरुष वक्ता होता है। मध्यम-पुरुष श्रोता होता है। अन्य-पुरुष श्रोता और वक्तासे भिन्न व्यक्ति होता है। यथा—

---

* आकारान्त पुंल्लिङ्ग नगरवाची शब्दका सम्बन्ध करनेमें कुछ लोग 'ए' लगाते हैं सो ठीक है। क्योंकि— बिलेमें हटेमें महोबेमें प्रयोग मिलते हैं। अर्थात् दोनों शुद्ध हैं कलकत्तामें अथवा कलकत्तेमें।

† राष्ट्रवाचीमें ए नहीं होता यथा आस्ट्रियामें प्रयोग ठीक है। आस्ट्रियेमें लंकेमें आस्ट्रेलियेमें प्रयोग गलत है।

‡ स्त्री-लिङ्गमें 'ए' नहीं होता यथा, मथुरामें गयामें प्रयोग ठीक है। किन्तु मथुरेमें, गयेमें धमशालेमें प्रयोग गलत हैं।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम
अन्य पुरुष	वह	वे

प्रश्न

निम्नांकित वाक्योंमें पुरुषोंका निर्देश करो—

(१) तुम आस्ट्रेलिया गये थे।

(२) वे कल जायेंगी।

(३) वह पत्र लिखती है।

(४) सरलादेवी, श्री देवी, उमादेवी तीनों बहिनें हैं वे यहां नहीं हैं।

(५) सुभद्राकुमारी चौहान कवियित्री जबलपुरमें रहती थीं।

(६) विजयालक्ष्मी पण्डित आंग्लभाषा-निपुणा भी हैं।

पाठ-१५

कारक—जिसके द्वारा वाक्यमें क्रियाके साथ अथवा अन्य शब्दोंके साथ संज्ञाके या सर्वनामके सम्यक् सम्बन्धका परिज्ञान होवे उसे कारक कहते हैं। ने, को आदि ८ विभक्तियाँ हैं यथा—

हिन्दीमें ८ कारक होते हैं। जिनके चिह्न ये हैं—

कारक		विभक्तियुक्त शब्द	विभक्तियां
(१) कर्त्ता	यथा	रामने	(ने)
(२) कर्म	,,	रामको	(को)
(३) करण	,,	रामके द्वारा	(से, करके, द्वारा)
(४) सम्प्रदान	,,	रामके लिए	(के लिए, वास्ते)
(५) अपादान	,,	रामसे	(से) [अलग होनेमें]
(६) सम्बन्ध	,,	रामका	(का, की, के)
(७) अधिकरण	,,	राममें	(में, पर)
(८) सम्बोधन	,,	हे राम!	(हे, ओ, अरे)

विभक्ति—हिन्दीमें कारक चिह्नोंको बतानेवाले प्रत्ययोंको विभक्तियाँ कहते हैं। अर्थात्—जिसके द्वारा वाक्यमें क्रियाके साथ या दूसरे शब्दोंके साथ संज्ञाका ठीक ठीक सम्बन्ध जाना जाय वह 'कारक' कहलाता है तथा कारकोंके चिह्नोंको द्योतित करनेवाली ने, से, आदि विभक्तियाँ कहलाती हैं इन्हें कारक प्रत्यय भी कहते हैं। यथा—

"राजाने आम खाया" इस वाक्यमें 'राजा' प्रथमान्त कारक तथा 'ने' प्रथमान्त विभक्ति है तथा "राजाने" पद है।

[कर्ता आदिसे रहित स्वतन्त्र विभक्तियोंका कुछ भी अर्थ नहीं निकलता है केवल अक्षरमात्र हैं।]

विभक्ति-योजन-विभक्तियोंको कारकके आगे लगाना चाहिये यथा—बेणीप्रसादगुप्त मास्टरने। बांकेबिहारीलाल मास्टरको। मुकर्जीके द्वारा। बलवन्तसिंह सियालके लिए। आम्र-वृक्षसे। गोविन्द मालवीयका। यमुना देवी शास्त्रिणीके। उस मेजपर। हे कविराज !।

कारकोंके उदाहरण

कर्तृवाच्य (कर्तृकारक) उसे कहते हैं जिसमें कामका फल कर्तापर ही हो। यथा—सुबन्धु कविने वासवदत्ता रचा। भारतेन्दुजीने हरिश्चन्द्रस्कूल स्थापित किया। शिवानन्द तिवारीने गुर्जरपाठशालाको हाईस्कूल बनवाया। राधाकृष्णदासने हिन्दीकी सेवाकी।

[इस कारकमें 'ने' विभक्ति लगती है। कभी कभी नहीं लगती है यथा—राम आता है में 'न' का लोप है]

उपर्युक्त वाक्योंमें स्थापित आदि करानेका फल सीधे कर्तापर पड़ता है। अतः ऐसे वाक्योंको कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्मवाच्य (कर्मकारक) उसे कहते हैं जिसमें कर्ताके कार्यका फल कर्मपर हो। यथा—हेमेन्द्रकविने सुवृत्ततिलक लिखा। वल्लभभाई पटेल पत्र लिखते हैं। क्वींस कालेजके हेडमास्टर मुझको पढ़ाते हैं। सुमित्रानन्दपन्त कविता करते हैं। निरालाने रामका शक्तिपूजन लिखा है। पहले

हैं। "जिनसे किसीको बुलाया जाय उन शब्दोंको सम्बोधन कहा जाता है"। प्रायः सम्बोधनके आगे (!) ऐसा चिह्न रहता है या (,) ऐसा चिह्न भी कभी-कभी रहता है।

प्रश्न

(१) कारक किसे कहते हैं?

(२) आठों कारकोंके नामोल्लेख कीजिये।

(३) विभक्ति किसे कहते हैं?

(४) कर्ता और करणकी विभक्ति लिखें।

(५) करण और अपादानमें क्या भेद है?

(६) सम्बोधनका चिह्न क्या है?

(७) निम्नांकित वाक्योंमें कौन कौन कारक हैं निर्देश कीजिये—

सर तेजबहादुर सप्रू बैरिस्टर थे। कैलाशनारायण मालवीय शिक्षा-स्पेशल अफसर हैं। रामकृष्णजी 'लीडर'के सम्पादक थे। सुबेदार सिंह डिप्टी इंस्पेक्टर हैं। कुं० राजेन्द्रसिंह लखनऊमें थे। परोपकारके पथ पर चलनेसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। मोर सर्प खाता है। सनातनधर्मस्कूलसे आता है। परीक्षार्थियोंके लिए ये उपयुक्त हैं। रघुवंशसे भाग कम नहीं है। मेरा तप्त सिरसे खून बहता है। वह रोटी खाता है। छतीको मत देखो। धनंजयसे मासिक यात्रा करो। बड़ी बालीकी कविता चलती है। विश्वनाथ शास्त्री मारवाड़के गंगाधर शास्त्री भारद्वाजके छोटे भाई हैं। एनीबेसेंट और डा० रवीन्द्रनाथ समकालिक थे। विजयबहादुर डिप्टी इंस्पेक्टर हैं। कमला नेहरू स्वरूपरानीकी पुत्रवधू थी। द्वितीय महायुद्ध प्रथम महायुद्धसे बड़ा था। विष्णुपूजन और शिवपूजन दोनों ही कल्याणप्रद हैं। किसीकी निन्दा करना पाप है। असत्य बोलना भी पाप है। सदा मौन रहना लाभदायक है।

(८) हे मुनीजी! रामने सीता प्राप्तिके लिए रावणको बाणसे मारा और पुष्पक विमानपर चढ़कर आकाशमार्गसे अयोध्यामें लौटे तथा राजसिंहासनपर बैठे एवं धनुष बाणको शरीरपरसे हटाकर समीपमें एक ओर धरकर राजकाज करने लगे।

उपर्युक्त वाक्यमें आठों कारक कैसे-कैसे व्यवहृत हैं बताओ।

पाठ-१६

शब्दरूपावली

विभक्तिके लगानेसे कारक रचनामें अनेक संज्ञाओंके रूपोंमें परिवर्तन हो जाता है। अतः कारक रचनामें रूपभेदके कारण संज्ञाएं अविकृत और विकृत दो प्रकारकी होती हैं। यथा—

अविकृतसंज्ञा—सन्तने उपदेश दिया।

विकृतसंज्ञा—सन्तोंने उपदेश दिये।

शब्दरूपोंसे आप इन्हें स्पष्टरूपेण समझें—

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	शिवने	शिवोंने
कर्म	शिवको (प्रति)	शिवोंको
करण	शिवसे (द्वारा)	शिवोंसे।
सम्प्रदान	शिवके लिए	शिवोंके लिए।
अपादान	शिवसे	शिवोंसे।
सम्बन्ध	शिवका, की, के	शिवोंका, की, के।
अधिकरण	शिवमें, पर,	शिवोंमें, पर।
सम्बोधन	हे शिव!	हे शिवो!

उपर्युक्त शब्दरूपोंमें आप अवश्य जानकर सकेंगे कि सम्बोधनमें हे शिवो! है। हे शिवों नहीं है।

विभक्ति सदा (एकवचन और बहुवचनमें) शब्दोंके आगे रखी जाती है। यथा—शिवने, शिवोंने आदि।

आकारान्त पुंल्लिङ्ग राजा (राजन्) शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	राजाने	राजाओं (राजों) ने
कर्म	राजाको	राजाओं (राजों) को

कारक	एकवचन	बहुवचन
सम्बन्ध	साधुका, की, के	साधुओंका, की, के
अधिकरण	साधुओंमें, पर	साधुओंमें पर
सम्बोधन	हे साधु (साधो)	हे साधुओ !

दीर्घ ऊकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मन्नूने	मन्नुओंने
कर्म	मन्नूको (प्रति)	मन्नुओंको (प्रति)
करण	मन्नूसे (द्वारा)	मन्नुओंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	मन्नूके लिए	मन्नुओंके लिए
अपादान	मन्नूसे	मन्नुओंसे
सम्बन्ध	मन्नूका, की, के	मन्नुओंका, की, के
अधिकरण	मन्नूमें, पर	मन्नुओंमें, पर
सम्बोधन	हेमन्नू !	हेमन्नुओ !

ऊपर उल्लिखित उकारान्त तथा ऊकारान्त शब्दोंके बहुवचनोंमें "ओं" हुआ है। यथा-साधुओंने, मन्नुओंको। बहुवचनमें दीर्घ ऊ ह्रस्व उ हो जाता है।

एकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

एकारान्तवाची शब्दोंमें बहुवचनमें 'ए'के स्थानमें 'ओं' हो जाता है।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कटारेने	कटारोंने
कर्म	कटारेको (प्रति)	कटारोंको (प्रति)
करण	कटारेसे (द्वारा)	कटारोंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	कटारेके लिए	कटारोंके लिए
अपादान	कटारेसे	कटारोंसे
सम्बन्ध	कटारेका, की, के	कटारोंका, की, के
अधिकरण	कटारेमें, पर	कटारोंमें, पर
सम्बोधन	हे कटारे !	हे कटारो

अति आदरमें एकवचनमें कटारेजीने और बहुवचनमें कटारेगणोंने आदि कहते हैं। यथा— सन्तलालजी कटारेने अथवा कटारेगणोंने।

ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द "फोटो"

तथा औकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द "सौ"

ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	फोटो	फोटोंने
कर्म	फोटोको (प्रति)	फोटोंको (प्रति)

शेष एकारान्त शब्दके समान।

प्राय: ओकारान्त शब्द एकवचन और बहुवचनमें समान ही होते हैं। बहुत कम भिन्नता मिलती है। यथा- कोदो-कोदों।

औकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	सौने	सौओंने
कर्म	सौको (प्रति)	सौओंको (प्रति)
करण	सौसे (द्वारा)	सौओंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	सौके लिए	सौओंके लिए
अपादान	सौसे	सौओंसे
सम्बन्ध	सौका, की, के	सौओंका, की, के
अधिकरण	सौमें, पर	सौओंमें, पर
सम्बोधन	हे सौ!	हे सौओ!

इसी प्रकार हजारों, लाखों, करोड़ों शब्द जानिये।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	रमाने	रमाओंने
कर्म	रमाको (प्रति)	रमाओंको (प्रति)
करण	रमासे (द्वारा)	रमाओंसे (द्वारा)

कारक	एकवचन	बहुवचन
सम्प्रदान	रमाके लिए	रमाओंके लिए
अपादान	रमासे	रमाओंसे
सम्बन्ध	रमाका, की, के	रमाओंका, की, के
अधिकरण	रमामें, पर	रमाओंमें, पर
सम्बोधन	हे रमा ! (रमे !)	हे रमाओ !*

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मतिने	मतियोंने
कर्म	मतिको (प्रति)	मतियोंको (प्रति)
करण	मतिसे (द्वारा)	मतियोंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	मतिके लिए	मतियोंके लिए
अपादान	मतिसे	मतियोंसे
सम्बन्ध	मतिका, की, के	मतियोंका, की, के
अधिकरण	मतिमें पर	मतियोंमें, पर
सम्बोधन	हे मति ! (मते)	हे मतियो !

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	सुमुखीने	सुमुखियोंने
कर्म	सुमुखीको (प्रति)	सुमुखियोंको (प्रति)
करण	सुमुखीसे (द्वारा)	सुमुखियोंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	सुमुखीके लिए	सुमुखियोंके लिए
अपादान	सुमुखीसे	सुमुखियोंसे
सम्बन्ध	सुमुखीका, की, के	सुमुखियोंका, की, के
अधिकरण	सुमुखीमें, पर	सुमुखियोंमें, पर
सम्बोधन	हे सुमुखि (सुमुखी !)	हे सुमुखियो !

* द्रष्टव्य—हिन्दीमें स्त्रीलिंगमें भी पुंलिंगकी भाँति सम्बोधनमें अनुस्वार नहीं रहता है। यथा—"हे रमाओ" के "ओ" में बिन्दु नहीं है।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	धेनुने	धेनुओंने
कर्म	धेनुको (प्रति)	धेनुओंको (प्रति)
करण	धेनुसे (द्वारा)	धेनुओंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	धेनुके लिए	धेनुओंके लिए
अपादान	धेनुसे	धेनुओंसे
सम्बन्ध	धेनुका, की, के	धेनुओंका, की, के
अधिकरण	धेनुमें, पर	धेनुओंमें, पर
सम्बोधन	हे धेनु ! (धेनो)	हे धेनुओ !

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बहूने	बहुओंने
कर्म	बहूको (प्रति)	बहुओंको (प्रति)
करण	बहूसे (द्वारा)	बहुओंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	बहूके लिए	बहुओंके लिए
अपादान	बहूसे	बहुओंसे
सम्बन्ध	बहूका, की, के	बहुओंका, की, के
अधिकरण	बहूमें, पर	बहुओंमें, पर
सम्बोधन	हे बहू !	हे बहुओ !

[हिन्दीमें स्त्रीलिङ्गके शब्दोंमें भी पुल्लिङ्गके शब्दोंकी भाँति इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त वाची शब्दोंके बहुवचनोंमें यथाक्रम इयाँ तथा ओं हो जाता है। यथा— मति-मतियाँ। मुमुक्षी-मुमुक्षियाँ। धेनु धेनुओं। बहू-बहुओं।]

एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मर्रेने	मर्रोने
कर्म	मर्रेको (प्रति)	मर्रोको (प्रति)
करण	मर्रेसे (द्वारा)	मर्रोसे (द्वारा)
सम्प्रदान	मर्रेके लिए	मर्रोके लिए
अपादान	मर्रेसे	मर्रोसे
सम्बन्ध	मर्रेका, की, के	मर्रोका, की, के
अधिकरण	मर्रेमें, पर	मर्रोमें, पर
सम्बोधन	हे मर्रे!	हे मर्रो!

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	सरसोंने	सरसोंने
कर्म	सरसोंको (प्रति)	सरसोंको (प्रति)

[ऐसे शब्द प्रायः एकवचन और बहुवचनमें समान होते हैं- यथा-एक सरसों, अनेक सरसों इत्यादि— यह शब्द बहुवचन ही मानना अच्छा है।]

औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	गौने	गौओंने
कर्म	गौको (प्रति)	गौओंको (प्रति)
करण	गौसे (द्वारा)	गौओंसे (द्वारा)
सम्प्रदान	गौके लिए	गौओंके लिए
अपादान	गौसे	गौओंसे
सम्बन्ध	गौका, की, के	गौओंका, की, के
अधिकरण	गौमें, पर	गौओंमें, पर
सम्बोधन	हे गौ (गो)!	हे गौओ!

प्रश्न

(१) एक अकारान्त पुल्लिङ्ग, एक आकारान्त स्त्रीलिङ्ग] शब्दोंके सभी कर्में रूप बताओ ।

(२) गौ शब्द कौन लिङ्ग है ?

(३) घोबे शब्द कैसा चलेगा ।

पाठ-१७

सर्वनाम रूपावली

(१) सर्वनाम दोनों लिङ्गोंमें समान होते हैं ।

(२) सर्वनाममें सम्बोधन नहीं होता है ।

'तू' का रूप

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तूने तू	तुमने तुम,
कर्म	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
सम्प्रदान	तेरे लिए, तुझको	तुम्हारे लिए, तुमको, तुम्हें
अपादान	तुझसे, तेरेसे	तुमसे, तुम्हारेसे
सम्बन्ध	तेरा, री, रे	तुम्हारा, री, रे
अधिकरण	तुझमें, तेरेमें, पर	तुम्हारेमें, तुममें, पर

[विशेष द्रष्टव्य—इस सर्व नाममें कर्त्ता कारकको छोड़कर अन्य कारकोंके एक वचनमें 'तू' का तुझ हो जाता है। सम्बन्ध कारकमें 'तू' के स्थानमें तेरा, तेरी, तेरे हो जाता है। अर्थात्— का, की, के नहीं लगता है। इस सर्वनामके बहुवचनमें 'तू' को 'तुम' हो जाता है]

[द्रष्टव्य—आजकल लोग 'तू' के स्थानमें एक वचनमें 'तुम' का प्रयोग करना अच्छा समझते हैं। अतः आपको भी एक वचनमें तुम और बहुवचनमें तुम लोग प्रयोग करना चाहिये। "तू" का प्रयोग अच्छा नहीं समझा जाता है]

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
सम्प्रदान	इसको, इसके लिए	इनको, इनके लिए, इन्हें
अपादान	इससे	इनसे
सम्बन्ध	इसका, की, के	इनका, की, के
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

उपर्युक्त दोनों सर्वनामोंमें भी सम्बोधन नहीं होता है।

[संस्कृतमें सर्वनामोंमें सम्बोधन नहीं होता। परन्तु, भाष्यमें- हे स हे अह रूप पाये गये हैं। अतः कुछ हिन्दीके विद्वान् हिन्दीमें भी सम्बोधन मानते हैं। यथा— ऐ मैं! अरे यह! हे तुम! आदि]

अनिश्चयवाचक 'कोई' शब्द

यह सर्वनाम शब्द एक वचनान्त ही होता है एवं "कोई" शब्दके स्थानमें "किसी" हो जाता है।

कारक	एकवचन
कर्त्ता	किसीने, कोई
कर्म	किसीको
करण	किसीसे
सम्प्रदान	किसीके लिए
अपादान	किसीसे
सम्बन्ध	किसीका, की, के
अधिकरण	किसीमें, पर,

सम्बन्धवाची सर्वनाम 'जो' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जो, जिसने	जिन्होंने, जिनने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे (द्वारा)	जिनसे (द्वारा)

कारक	एकवचन	बहुवचन
सम्प्रदान	जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए, जि
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका, की, के	जिनका, की, के
अधिकरण	जिसमें, पर	जिनमें, पर

प्रश्नवाची "कौन" शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको
करण	किससे (के द्वारा)	किनसे (के द्वारा)
सम्प्रदान	किसको, किसके लिए	किनको, किनके लिए
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, की, के	किनका, की, के
अधिकरण	किसमें, पर	किनमें, पर

[कौनका प्रयोग— यथा– यह कौन है ?]

सम्बन्धवाची 'सो' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सो, तिसने	तिन्होंने, तिनने
कर्म	तिसे, तिसको	तिनको, तिन्हें
करण	तिससे (द्वारा)	तिनसे, (द्वारा)
सम्प्रदान	तिसको, तिसके लिए	तिनको, तिनके लिए, तिन्हें
अपादान	तिससे	तिनसे
सम्बन्ध	तिसका, की, के	तिनका, की, के
अधिकरण	तिसमें, पर	तिनमें, पर

'सो' शब्द कभी-कभी दो बार तथा 'जो' शब्द भी कभी दो बार आता है । यथा—"जो-जो उन्होंने कहा सो-सो मैंने किया" ।

संस्कृतके "यत्तदोर्नित्यसम्बन्धः" अनुसार ही 'जो' के साथ 'वह'

का, या 'सो' का सम्बन्ध रहता है। यथा— जो मैंने देखा वह तुमने भी देखा।

सर्वनाम प्रायः ११ हैं- यथा— मैं, आप, तू, यह, वह, जो, सो, कौन, कोई, कुछ और क्या।

'क्या' प्रायः धर्म, गुण, पदार्थादिके प्रयोगमें अधिक आता है। यथा—हे शुभे! आप क्या करती हैं?

'कौन' प्रायः विशेषण बोधक है यथा— हे शुभे! आप कौन हैं— रघुबरी परकीरत नहीं होते।

'कुछ' शब्द पदार्थवाची है तथा कभी-कभी, धर्म, गुण, भाव भी बताता है। यथा— उसके पास कुछ रुपये थे।

सर्वनाम क्यों प्रयोगित होते हैं— यदि सर्वनाम न रहें तो वाक्यों में अति दीर्घता हो जाय तथा लालित्य भी न रहे और पुनरुक्ति पदे पद हो जाय। यथा—

एंग्लो बंगाली कालेज और सारस्वत खत्री विद्यालयके छात्र भी आये थे जिन्होंने फुटबालमें विजय प्राप्त की। (यह प्रयोग सर्वनाम प्रद है।) ऐंग्लो बंगाली कालेज और सारस्वत खत्री विद्यालयके छात्र भी आये थे। ऐंग्लो बंगाली कालेज और सारस्वत खत्री विद्यालयके छात्रोंने फुटबालमें विजय प्राप्त की (सर्वनामहीन प्रयोग है)।

सर्वनाममें कभी-कभी कर्म और सम्प्रदानके 'को' के चिह्नोंका लोप हो जाता है। यथा-"तुमको भी दिया" यहाँ "तुम्हें भी दिया" (यह कहा जा सकता है) इसी प्रकार "मुझको भी दिया" यहाँ "मुझे भी दिया" यह कहा जा सकता है।

जिस समय केवल संज्ञा अथवा सर्वनामके पूरे रूप चलानेको कहा जाय उस समय उस संज्ञा अथवा सर्वनामके पूरे रूप चलाने चाहिए। परन्तु, जिस समय संज्ञा अथवा सर्वनामके कारकोंका निर्देश करके पूरा

जाय, उस समय संज्ञा अथवा सर्वनामके उन कारकके रूपोंको ही बताना चाहिए। यथा—

'राम' के सम्प्रदान कारकके एक वचनका रूप बतायें, तो उत्तर देना चाहिये— रामके लिए। इसी प्रकार यदि पूछा जाय कि 'मैं' सर्वनाम कारकके सम्बन्ध कारकका एकवचन क्या होगा, तो उत्तर दिया जाना चाहिए— मेरा, मेरी, मेरे। यदि कहा जाय कि "चन्द्रिका" और 'तू' के रूप चलाओ तो 'चन्द्रिका' तथा 'तू' के सभी रूप लिखने चाहिये।

बहुलताकी विवक्षामें 'क्या' का प्रयोग दो बार होता है। यथा— आपने क्या-क्या देखा।

प्रश्न

(१) 'तू' और 'मैं' के अपादान और अधिकरणके दोनों वचन बतायें।
(२) 'कौन' और 'कुछ' के प्रयोग बतायें तथा करण कारकी रूप लिखें।
वह' के पूरे रूप लिखें।

पाठ—१८

कारकोंके विस्तृत व्यावहारिक नियम

१-कर्तृकारक

(१) जब लिंग, वचन अथवा परिमाण सूचित करना होता है तो वहांपर कर्तृकारक या कर्ता होता है। यथा—

कृष्ण, शिव, माधवी, घोड़ा, हाथी, एक मन अन्न, दो सेर घी, गौ, बैल, बकरी आदि कर्ता हैं।

(२) जो क्रियाका व्यापार करनेवाला है उसे कर्ता कहा जाता है। यथा—

आम खाया जाता। पुस्तक पढ़ी जाती है। दशहरी खायी जायगी। किसमिस खायी गयी।

(३) संज्ञाकी साधारणावस्थाको व्यक्त करते समय कर्तृकारक होता है। यथा—

सीताजी जाती हैं। द्रौपदी पुकारती थी। राम खाता था। प्राध्यापक बलदेव उपाध्याय मन्य सम्पादक हैं।

२-कर्मकारक

(१) जिसमें क्रियाके व्यापारका फल रहता है वह कर्म होता है यथा—

राहु चन्द्रको ग्रसता है। नल दमयन्तीको छोड़ गये। केतु आदित्यको दबता था। रावण जटायुको मार रहा था।

(२) देवप्राणीवाचक संज्ञामें कर्मके साथ 'को' लगता है यथा—

देवर्षि नारद विष्णुको पूजते हैं। कार्तिकेय भी गणेशजीको जपते हैं। गङ्गा हिमालयको जनक क्यों मानती है ? रमेश रमाको बुलाता था।

(३) 'को' कभी कभी विशेषता प्रकट करता है। यथा—
विश्वनाथ सिरभर वाल्मीकिकृत रामायणको पढ़ते थे।
उपयुक्त वाक्यमें वाल्मीकि रामायण ही पढ़ते थे ऐसा प्रतीत होता है।

(४) यदि कर्म निर्जीववान् है तो 'को' का लोप होता है। यथा—
राजधरशास्त्री द्राविड़ने षटशास्त्र पढ़े।
देवनायकाचार्य व्याकरणग्रन्थ समझाते हैं।
रेग्मी शेषराजशास्त्री काव्यप्रकाश पढ़ाते हैं।
चन्द्रमाप्रसादने इंग्लिश व्याकरण रचा।

(५) कहना, पूछना, मांगना जांचना आदि क्रियाओंमें कर्मके 'को' के स्थानमें 'से' भी होता है। यथा—

कालीप्रसादसे पूछूँगा। यहाँ कालीप्रसादको पूछूँगाके अर्थमें 'से' है
गवर्नर जनेलसे मागूँगा। यहाँ गवनर जनेलके पास मागूँगाके अर्थमें 'से' है।

३ करणकारक

करणकारक उसे कहते हैं जिसके द्वारा कार्य किया जाता है अर्थात् जिसके द्वारा कर्त्ता कार्य करे उसे करण कारक होता है। यथा—

(१) राम तलवारसे लड़ता है। कृष्ण व्याधाके तीरसे स्वर्गलोक गये। पाणिनिसूत्रसे वृत्तिके अर्थ लिखे गये हैं। कवियोंको प्राय: शृंगार-काव्यमें आनन्द मिलता है।

(२) जिससे किसी हेतु तथा रीतिका ज्ञान हो उसमें करणकारक होता है। यथा—

पुण्यसे सुख होता है। धर्मसे ज्ञान और ज्ञानसे मुक्ति होती है। अभ्याससे ज्ञानमें वृद्धि होती है।

(३) प्रयोज्यकर्तृवाचकमें करणकारक होता है। यथा—

मित्रराष्ट्र शत्रुराष्ट्रसे शान्ति करवाता है।

(४) कार्य करनेकी प्रणाली अथवा नियम बतानेके अर्थमें करण-कारक होता है। यथा—

आप आलङ्कारिकोंसे ग्रन्थ पढ़ेंगे तो कविता अच्छी कर सकेंगे। साहित्यदर्पणकी रीतिसे दोष इतने प्रकारके हैं।

भक्तिसे भगवत्प्राप्ति करें। पापसे दूर रहें।

(५) कारण, हेतु, मूल्य, विक्रयके अर्थोंमें करणकारक ही होते हैं। यथा—२५००० रु० से विमान खरीदा गया। १०००० रु० से उद्यान खरीदा। किस भावसे गेहूँ बिके।

(६) कहीं कहीं करणकारकका 'से' लुप्त रहता है। यथा—

वह पैरों-पैरों गयी। मैंने हाथों-हाथ दिया।

तुमने बीचो-बीच काटा। हमने ठीको-ठीक देखा।

(इन वाक्योंमें पैरों-पैरों आदिके पश्चात् "से" लुप्त है।)

(७) जब कर्त्ता अनुक्त रहता है तो करण होता है। यथा—

मुझसे ध्वन्यालोक रटा नहीं जाता। उससे न्याय-मुक्तावली रटी गयी।

४-सम्प्रदानकारक

(१) दानार्थमें सम्प्रदान होता है- अर्थात् देनेके लिए सम्प्रदान कारक आते हैं। यथा—*

ब्राह्मणोंको (के लिए) गो दान दीजिये।

आपके ऐसे पण्डितोंके लिए सूर्यके पश्चात् उठना पाप है।

शान्ति पतिसेवाके लिए जाती है।

(२) रुचना, मिलना आदि क्रियाके योगमें सम्प्रदान होता है। यथा धर्मशास्त्रियोंको अधर्म नहीं रुचता। मैं आपके लिए मिला था।

(३) नमस्कार धन्यवादमें सम्प्रदान होता है। यथा—

गुरुके लिए (गुरुको) नमस्कार करिये। वे (आपके लिए) आपको धन्यवाद देते हैं।

[कुछ लोग 'रामके दो पुत्र' कहते हैं। परन्तु, यह वाक्य ठीक नहीं ऐसे स्थानपर 'रामके दो पुत्र' यही होना उचित है। क्योंकि सम्बन्धमें सम्बन्धकारक ही होता है।]

(४) आवश्यकता तथा निमित्तार्थमें सम्प्रदान कारक होता है। यथा—

आपको अवश्य आना चाहिए। पूजाके लिए पुष्प लाइये। वे अपने पिताको देखने आये थे। वीरोंको देखिए।

५-अपादानकारक

(१) अपादानकारक भिन्नताके अर्थमें प्रयुक्त होता है। यथा—

पेड़से पत्ते गिरते हैं। पर्वतसे नदियाँ गिरती हैं। घड़ेसे दूध बहा। भैंससे पड़वा पैदा हुआ।

---

* हिन्दीमें 'के लिए' के स्थानमें "को" का प्रयोग भी किया जाता है।

(२) मार्ग परिमाण कालार्थमें अपादान होता है। यथा—
चैतसे भावणतक। कलकत्तेसे काश्मीरतक।

(३) अपेक्षा, भिन्नता मित्रता, परिचयके अर्थमें अपादान होता है। यथा—

हिटलरसे मुसोलिनी अच्छा था। रूस और अमेरिकाके राजनीतिज्ञोंके मतोंमें भिन्नता है। सर जोन सारजेंटसे मेरा परिचय है। मोती लालनेहरूकी लाला लाजपतरायसे मित्रता थी।

(४) हीन, परे, रहित, भयके साथ अपादान होता है। यथा—
तुम ज्ञानसे हीन हो। विद्यासे परे कुछ नहीं है। धनसे रहित होना बुरा है। चोरसे भय लगता है।

(५) समुदायके निर्धारणमें अपादान होता है। यथा—
सभी राजनीतिज्ञ वेदान्तियोंसे डा० भगवान्दास अच्छे हैं।
सभी पुरियोंसे वाराणसी अच्छी है।

६—सम्बन्धकारक

(१) सम्बन्धकारक— स्वत्व, प्रभुत्व, सम्बन्धके अर्थमें सम्बन्ध कारक होता है। यथा—

पं० रामचन्द्र झा मिथिलाके विद्वान् हैं। बेंगली पब्लिकस्कूलके हेडमास्टरके अध्यक्षत्वमें।

(२) दशान्तर तथा पयवाची शब्दोंके साथ सम्बन्धकारक होता है
दूधका दूध, पानीका पानी। विद्या सात साल्की थी।

(३) समीप, भेद आदिके प्रकाशनमें सम्बन्ध होता है। यथा—
मायाके समीप मोह रहता है।
सनातनियों और जैन-बौद्धोंके विचारोंमें बड़ा भेद है।

(४) मूल्य, योग्यता, परिमाणवाची शब्दोंके साथ सम्बन्ध होता है। यथा—

यह पता दो लाखका है। रुक्मिणी कृष्णके अनुरूप थीं। आपतो नरेन्द्रदेव कुलपतिके योग्य थे ही। सोनभद्रका पुल १ मीलके लगभग है।

(५) तुल्य, समान, अधीन शब्दोंके अर्थमें सम्बन्ध होता है। यथा सीताजीका मुख चन्द्रतुल्य था। शिवि कर्णके समान दानी थे। प्रजाको राजाके अधीन रहना ही चाहिये। धार्मिकतामें नेपालके तुल्य अन्य राष्ट्र नहीं है।

७—अधिकरणकारक

(१) अधिकरण कारक— कर्ता और कर्मके आधारमें अधिकरण होता है। यथा—

शिवजीके त्रिशूलपर काशी है। विश्वनाथ मन्दिरमें रुपये गड़े हैं। यह पेड़पर सोया है।

(२) अभिव्यापक आधारमें अधिकरण होता है। यथा—
तिलमें तेल रहता है। दधिमें खट्टापन है।

(३) कइयोंमें एककी श्रेष्ठतामें अधिकरण होता है। यथा—
कवियोंमें कालिदास मुख्य थे। फूलोंमें चम्पा प्रमुख है। नदियोंमें गङ्गा बड़ी है।

(४) हेतुके अर्थमें तथा परिमाणमें भी अधिकरण होता है। यथा—
परिश्रमसे पढ़ो जिसमें उत्तीर्ण हो जाओ। दिनपर दिन स्थिति बिगड़ रही है।

८—सम्बोधन

सम्बोधन—जिसमें किसीको पुकारनेके अर्थकी प्रतीति होती है उसे सम्बोधन कहते हैं। यथा—

हे चन्द्र! चाँदनी करिये। हे कृष्ण, अरे राम! हे रमे! हे भगवान! प्रभृति।

८ १
एक वाक्यमें आठों कारकोंके उदाहरण— हे सखे ! मैंने
७ ५ २ ६ ३ ४
नन्दनकाननमें कल्पतरुवृक्षसे पत्तियाँ तोड़कर अपने करोंसे शिवजीको चढ़ायीं।

प्रश्न

(१) कर्ता और कर्मके दो उदाहरण दो वाक्योंमें लिखो।

(२) पाठशालाएँ खुली हैं। राजे चले गये। हमारे उद्यानसे तुम्हारा घर दूर है। दिल्लीमें भली-बुरी बिल्लियाँ भी रहती हैं। पोस्ट आफिस खुला है। इन वाक्योंमेंकी विभक्तियाँ बताओ।

पाठ-१९

विशेषण*

विशेषण— जो शब्द संज्ञाका या सर्वनामका मात्र गुण प्रकाशित करे उसे विशेषण कहा जाता है। जिस व्यक्ति या पदार्थका गुण प्रकट किया जाता है उसे विशेष्य कहते हैं। यथा—

यह एक छोटी लता है। अमेरिका एक धनी राष्ट्र है। मोहन अच्छा लड़का है। माधवी सुन्दरी थी। बुद्धिमान् बलवान् होते हैं। सत्ययुगमें सभी सत्यवक्ता थे। त्रेतामें भगवान् राम हुए थे। द्वापरमें पुण्यशाली कृष्ण हुए थे। कलियुगमें मानसिक पाप पाप नहीं है।

---

* विशेषण मुख्यतया तीन प्रकारके होते हैं (१) गुणवाचक। (२) संख्यावाचक। (३) सर्वनाम विशेषण। उदाहरण—

(१) राम अच्छा लड़का है। गुणवाचक (२) प्रथम बालक। संख्यावाचक। (३) यह महिला घरमें रहती है। सर्वनाम विशेषण।

उपर्युक्त तीनों विशेषण विभिन्न भेदसे कई प्रकारके हो जाते हैं।

उपर्युक्त वाक्योंमें छोटी, धनी, अच्छा, सुन्दरी बुद्धिमान, सच भगवान्, पूर्णावतारी और मानसिक प्रभृति शब्द विशेषणवाची हैं।

ये शब्द विशेष्यके सतादिके गुण प्रकट करते हैं। अतः इन्हें विशेषण कहा जाता है।

विशेषणके भेद

[निम्न लिखित भेदोंसे विशेषण ७ प्रकारके सरलताके लिए बनाये गये हैं। किन्तु, वास्तविकरूपेण विशेषण ३ प्रकारके ही होते हैं— (१) गुणवाचक (२) संख्यावाचक और (३) सर्वनाम विशेषण।]

(१) गुणवाचक विशेषण— जो विशेषण किसी संज्ञाका गुण प्रकाशित करें उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

लक्ष्मीपुरी बम्बईकी निराली छटा है। इन्द्रपुरीके समान पुण्यपत्तन (पूने) की अनूपा प्रभा है। नेताजी सुभाषचन्द्र वसु। काली गौ ले आओ। स्वच्छ दांत हैं।

यहां लक्ष्मीपुरी, इन्द्रपुरी, नेताजी, काली, और स्वच्छ शब्द यथाक्रम-विशेष्य बम्बई, पूना, सुभाषचन्द्र, गौ और दांतके गुण प्रकट करते हैं। अतः ये गुण वाचक विशेषण हैं।

(२) भाववाची विशेषण— जो विशेषण आन्तरिक भावोंको प्रकाशित करते हैं उन्हें भाववाची विशेषण कहते हैं। यथा—

मूर्ख-मनुष्य, पाप-कर्त्ता, पुण्य-कर्त्ता, पण्डित-जन।

यहां— मूर्ख, पाप, पुण्य, और पण्डित शब्द व्यक्तिके आन्तरिक भावोंको प्रदर्शित करते हैं। अतः ये भाववाची विशेषण हैं।

(३) संख्यावाची विशेषण—जिस विशेषणसे संख्या (क्रम-अक्रम*) का परिज्ञान होवे उसे संख्यावाची विशेषण कहा जाता है। यथा—

---

* जिससे क्रमका बोध होवे वही क्रमवाची तथा जिससे साधारणतः संख्या मात्र बोध होवे वह अक्रमवाची विशेषण होता है।

एकादश रुद्रोंका पूजन। आठवें वसुकी दया। शत्रुघ्न राजा दशरथके चतुर्थ पुत्र थे। उसके गृहमें पन्द्रह दरवाजे हैं।

उपर्युक्त वाक्योंमें एकादश, आठवें, चतुर्थ, पन्द्रह, संख्यावाची विशेषण हैं। उनमें भी आठवें, चतुर्थ क्रमवाची हैं तथा एकादश, पन्द्रह अक्रमवाची हैं।

(४) मापवाची विशेषण— जिससे किसी पदार्थादिके मापका बोध होवे उसे मापवाची विशेषण कहते हैं। यथा—

दो सेर चीनी, चार सेर गुड़। चीनमें बहुत आदमी रहते हैं। अमेरिकाके पास बहुत-सा सोना है। इंग्लैंडमें बहुत मशीनें हैं। भारतमें अनेकों क्षुधित हैं। उनके पास रत्न कम थे। मेरे पास रुपये थोड़े हैं।

उपरिस्थलोंमें बहुत, कम, थोड़े शब्द मापवाची हैं।

(५) निर्देशक विशेषण— जिससे संज्ञा का गुण निर्देशित हो उसे निर्देशक विशेषण कहते हैं। यथा—

यह मनुष्य उन्मत्त है। तुम सदा भवभूतिकी कवितामें उन रचनाओंको पढ़ते हो। यह जामुन मीठी है। उस चटाईपर बैठें। सूर्यकी यह उपासना बताओ। उस दिन वे आये थे।

उपरि-स्थलोंमें यह, उन, यह, तुम, यह और उस शब्द निर्देशक विशेषण हैं। ये विशेष्य मनुष्य आदिके गुणोंको बताते हैं।

(६) सम्बन्धवाची विशेषण—जिससे सम्बन्धका बोध होता है उस विशेषणको सम्बन्धवाची विशेषण कहा जाता है। यथा—

यह मोहनकी मुरली है। ये उसके उद्यान हैं। यह मेरी धोती है। उसका घोड़ा दौड़ता है। श्यामकी छटा। अपनी गौ है। उनकी पुस्तक है।

उपरिस्थलोंमें मोहन, उसके, मेरी, उसका, श्यामकी, अपनी और

---

* हिन्दीमें कुछ लोग अनकों नहीं लिखते अनेक ही लिखते हैं प्रायः दोनों मत प्रचलित हैं।

उसकी ऐसे शब्द हैं जो सम्बन्ध द्योतित करते हैं। अतः सम्बन्धवाची, विशेषण हैं।

(७) तुलनात्मक विशेषण— जिस विशेषणसे साधारणतः अच्छ उससे अच्छे। बुरे उससे बुरे आदिका ज्ञान हो वे विशेषण तुलनात्मक विशेषण कहलाते हैं। यथा—

(१) यह मधुर वाक्य है। (२) ये उससे मधुरतर वाक्य हैं। (३) ये मधुरतम वाक्य हैं।

[द्रष्टव्य—केवल संस्कृत शब्दों के साथ 'तर' और 'तम' प्रयुक्त होते हैं।]

उपर्युक्त वाक्योंमें मधुर, मधुरतर, मधुरतम, ये तुलनात्मक, विशेषण हैं। इसीप्रकार सुन्दर, सुन्दरतर, सुन्दरतम, जानिये।

[जब साधारण विशेषण कहना होता है तो कहते हैं "यह प्रिय सेवक है"। जब दो से तुलना करनी होती है तो कहते हैं कि "यह उससे प्रियतर सेवक है।" जब बहुतोंसे तुलना करनी पड़ती है तो कहते हैं कि "यह प्रियतम सेवक है।"]

इसी प्रकार लघु, लघुतर, लघुतम समझना चाहिये।

विशेषण सम्बन्धी कुछ नियम

(१) तुलनात्मक विशेषणमें प्रथमा, मध्यमा और उत्तमावस्था होती हैं। यथा—

प्रथमावस्था	मध्यमावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
अल्प	अल्पतर	अल्पतम
महत्	महत्तर	महत्तम
मन्द	मन्दतर	मन्दतम
प्राचीन	प्राचीनतर	प्राचीनतम

(२) अकारान्त विशेषणोंको स्त्रीलिङ्ग बनानेमें प्राय: आ जोड़ते हैं। यथा-

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कृष्ण	कृष्णा
दीन	दीना
विमल	विमला
सभ्य	सभ्या
श्याम	श्यामा

(३) कुछ अकारान्त विशेषणोंको स्त्रीलिङ्ग करनेमें प्राय: ई जोड़ते हैं। यथा-

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सुन्दर	सुन्दरी
तरुण	तरुणी
बालक	बालिका
कुमार	कुमारी

(४) कुछ उकारान्त विशेषणोंमें स्त्रीलिङ्ग बनानेमें उ को व हो जाता है तथा अन्तमें ई होती है। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिङ्ग
साधु	साध्वी
तनु	तन्वी
गुरु	गुर्वी

(५) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्गमें ऋ के स्थान में री जोड़ते हैं। यथा—

कर्तृ (कर्त्ता) कर्त्री

(६) कुछ हलन्त विशेषणोंको ऐसे स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं। यथा—

पुलिंग	स्त्रीलिंग
श्रीमान्	श्रीमती
भगवान्	भगवती
विद्वान्	विदुषी
प्रभावान्	प्रभावती
तपस्वी	तपस्विनी

पूर्ण हो जायगा। अस्तु; कर्मके उक्त अथवा अनुक्त होनेपर भी यदि कर्मकी विधेयता उस वाक्यमें है तो वह वाक्य कर्मप्रधान है और उसकी क्रिया सकर्मक कहलायेगी।

सकर्मक क्रियामें भेद—जिस वाक्यमें सकर्मक क्रियाका लिङ्ग वचन उसके कर्ताके अनुसार हो वह वाक्य कर्तृप्रधान वाक्य कहा जाता है और उसकी क्रिया कर्तृप्रधान क्रिया कही जाती है। कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान दो भेदोंसे सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है। यथा—

मुरारी मुक्ति देता है। कुन्ती कर्णको समझाती है। द्रोणाचार्य अर्जुनको पढ़ाते हैं। धृतराष्ट्र गान्धारीको बुलाते हैं। आल्हा ऊदलको छुड़ाते हैं। परमाल पृथ्वीराजको कर देते हैं। लाखन ऊदलको रखते हैं। सुनयना देवाको सजाती है। मलखान सुलखानको सहायता देते हैं। घोड़ा चना खाता है। बैल घास खाता है। कुन्दन माष पकाता है।

उपरि स्थलोंमें, अपने-अपने कर्ताके अनुसार क्रियाएं आयी हैं। जिस लिङ्ग वचनका कर्ता है उसी लिङ्ग वचनकी क्रिया है। ऐसे वाक्य कर्तृप्रधान वाक्य कहे जाते हैं। अतः यह सिद्ध हुआ कि जिस वाक्यमें सकर्मक क्रियाके लिङ्गवचन उसके कर्ताके अनुसार होवें वह वाक्य कर्तृप्रधान वाक्य कहलावे और उसकी क्रिया भी कर्तृप्रधान क्रिया कहलावे।

जिस वाक्यमें सकर्मक क्रियाके लिङ्गवचन उसके कर्मके अनुसार हों वह वाक्य कर्मप्रधान वाक्य कहा जाता है और उसकी क्रिया कर्मप्रधान क्रिया कही जाती है। यथा—

मन्त्रियोंकी सहायता की गयी। ब्राह्मणोंके द्वारा शान्तिपाठ किया गया। गौतम बुद्धके द्वारा राज्य त्यागा गया। विवेकानन्दजीके द्वारा शुद्धि की गयी। अंग्रेजोंसे कोहनूर ले जाया गया। देवीके द्वारा महिषा सुरवध हुआ।

उपर्युक्त वाक्योंमें क्रियाएं अपने कर्मके अनुसार हैं— अर्थात् की गयी। किया गया आदि। क्रियाओंके पुरुष लिङ्ग वचन कर्मके अनुसार

। कर्त्ताके लिङ्ग-वचनके अनुसार नहीं हैं। ऐसे वाक्योंको कर्मवाच्य ा जाता है तथा ऐसी क्रियाओंको कर्मप्रधान क्रिया कहा जाता है।

कर्तृवाच्यसे कर्मवाच्य बनानेकी रीति

साधारणत: कर्तृवाच्यसे कर्मवाच्य बनानेमें कर्त्ता (संज्ञा अथवा र्वनाम) के आगे 'द्वारा' अथवा 'से' लगा दिया जाता है और ्याके रूप उसके लिङ्ग-वचनके अनुसार कर दिये जाते हैं। यथा—

राम बाण मारता है (कर्तृवाच्य)
रामके द्वारा बाण मारा जाता है (कर्मवाच्य)

कभी-कभी अकर्मक क्रियाओंके रूप कर्मप्रधानसे मालूम होने लगते । किन्तु, वास्तवमें वे भाव-प्रधान होते हैं कर्मप्रधान नहीं। यथा—

मुझसे क्षण-भर भी नहीं ठहरा जाता।
उससे रातभर ठहरा गया।
हमसे पलभर भी बोला नहीं जाता।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'ठहरा जाता' आदि क्रियाओंके रूप कर्मवाच्य हीं हैं। अपितु, भाववाच्य हैं। क्योंकि 'ठहरना' क्रिया अकर्मक है। त: कर्मवाच्य हो ही नहीं सकती। इससे ये वाक्य भावप्रधान हैं।

अकर्मक क्रियाओंके जाननेकी रीति

साधारणत: अकर्मक क्रियाएं ये हैं— लजाना, रहना, जागना, ढ़ना, घटना, डरना, जीना, मरना, सोना, खेलना, चमकना, अत: नसे बने वाक्य अकर्मक होते हैं।

प्रश्न

(१) क्रिया किसे कहते हैं?

(२) क्रिया बिना वाक्य क्यों अपूर्ण रहता है?

(३) अकर्मक और सकर्मकमें क्या अन्तर है?

(४) निम्नांकित वाक्योंमें कौन कर्तृप्रधान, कौन कर्मप्रधान और कौन ावप्रधान हैं?

मैं भागता था। राम रोटी खाता था। उनसे दिनभर न रहा गया। वे पुस्तक पढ़ती थीं। तुम गाना गाते थे। सवमन था रहा था। मैना बैठी थी। मुन्नू पाजी है। उसको सेवमी लाओ। वे कपड़े सीते हैं। मैं पत्र लिखता हूँ। तुम आम खाते हो। लक्ष्मी विष्णुकी सेवा करती है।

(५) कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान तथा भावप्रधानके १०—१० वाक्य बनाओ।

(६) निम्न लिखित वाक्योंमें क्रियाएं छूट गई हैं उन्हें भर दीजिये।

रामने बाणसे रावणको	कृष्णने कंसको……
गंगा हिमालयसे……	द्वारका मथुरासे बहुत दूर ……
चन्द्र पूर्वसे ही…	गोविन्द लघुकौमुदी
किसान खेत	बाजार दवा ……
मर्द दवा ……	कम्पाउण्डर मरहमपट्टी……
रोगी खाटपर	लड़के खेलते……

पाठ—२१

काल

कालज्ञान—क्रियाके समय बतानेवाले पदको कालसूचक पद कहते हैं। अर्थात्—क्रियाके होनेका जो समय बतावें वह 'काल' संज्ञक है।

कालभेद—भूत, वर्तमान, भविष्यत् तीन प्रकारके काल होते हैं—

(१) भूतकाल—अंग्रेजोंका भारतमें राज्य था। (बीता हुआ काल)

(२) वर्तमान—भारतमें कांग्रेसका राज्य है। (चलता हुआ काल)

(३) भविष्यत्—भारतमें वायुयान चलेंगे। (आनेवाला काल)

भूतकालज्ञान—जिस कामकी समाप्ति हो चुकी हो उसे बोधित करनेवाली क्रिया भूतकालकी क्रिया कहलाती है। यथा—

इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था। रामने सत्यतापूर्ण कार्य किये थे। कृष्णने पाण्डवोंको सहायता दी थी। अर्जुनने प्रतिज्ञा की थी।

उपर्युक्त वाक्योंको पढ़नेसे ज्ञात होता है कि, इन्द्र, राम, कृष्ण और

अर्जुनने जो काम शुरू किये थे वे समाप्त हो चुके अब बाकी नहीं हैं अत' मारा था, किये थे, दी थी, की थी, प्रभृति क्रियाएं भूत कालकी द्योतिकाएं हैं।

[साधारणत:—था, थी, थे, रहा, रही, रहे, किया, की, किये, दिया, दी, दिये, लिया, ली, लिये, पिया पी, पिये, प्रभृति क्रियाएँ भूतकालमें प्रयुक्त होती हैं।]

वर्तमान काल ज्ञान—जो काम चल रहा हो—समाप्त न हुआ हो। उसे वर्तमान कालका काम कहते हैं। ऐसे कामको बतलानेवाली वर्तमान कालकी क्रियाएं कहलाती हैं। यथा—

सुमित्रानन्दन 'पन्त' कविता करते हैं। सीता गेंद खेलती है। श्यामा गुड़िया खेलती है। चन्द्रमा उगता है। सूर्य चमकता है।

उपरिस्थअंकित वाक्योंको पढ़नेसे ज्ञात होता है कि, सुमित्रानन्द 'पन्त' सीता, श्यामा, चन्द्रमा और सूर्यने जो काम आरम्भ किये हैं वे अभी चल रहे हैं समाप्त नहीं हुए हैं। अत 'करते हैं, खेलती हैं, उगता है, चमकता है' प्रभृति क्रियाएं वर्तमानकालको बतानेवाली क्रियाएं हैं

[साधारणतः—है, हैं, करता है, करते हैं, करती हैं, प्रभृति क्रियाओंसे वर्तमान कालका ज्ञान होता है]

भविष्यत्काल ज्ञान—जिन क्रियाओंसे आनेवाले कालका उद्बोधन हो वे क्रियाएँ भविष्यत्कालकी क्रियाएँ कहलाती हैं। अर्थात्—जो काम भविष्यत्में (आगे आनेवाले समयमें) हों वे भविष्यत्कालके कहलाते हैं।

रामा परीक्षामें उत्तीर्ण होगी। सीता सन्यासी होगी। तुम व्यायामसे बलिष्ठ होगे। कल पानी बरसेगा।

उपर्युक्त वाक्योंमें कामोंका होना भविष्यत् कालमें बताया गया है। अत ऐसी क्रियाएँ भविष्यकालिक क्रियाएँ कहलाती हैं।

[साधारणतः—गा, गी, गे से भविष्यत्कालिक क्रियाओंका ज्ञान होता है।]

प्रश्न

(१) 'गा' किस कालका वाचक है।

पाठ-२२

भूतकाल

भूतकालिक क्रियाभेद—भूतकालकी क्रियाएं ६ प्रकारकी होती हैं

(१) सामान्यभूत। (२) आसन्नभूत। (३) सन्दिग्धभू (४) अपूर्णभूत। (५) पूर्णभूत। (६) हेतुहेतुमद्‌भूत।

(१) सामान्यभूतकाल—जो साधारण भूतकालकी बात बतावे उसे "सामान्यभूतकाल" कहते हैं।

(१) व्यासजीने १८ पुराण लिखे।
(२) श्यामाप्रसाद मुखर्जी वायसचांसलर थे।
(३) बम्बई मेल छूट गया।
(४) कृष्णने पत्र लिखा।
(५) वीणाने सितार बजाया।

ऊपरके वाक्योंमें जो क्रियाएँ आती हैं उनसे ज्ञात होता है कि पांचों वाक्योंमें जो बातें कही गयी हैं वे साधारणतः पूर्ण हो चुकी हैं अतः ऐसी क्रियाओंको "सामान्य भूतकाल" कहा जाता है।

(२) आसन्नभूतकाल—जिस क्रियासे भूतकालकी सन्निकटता और क्रियाकी पूर्णता प्रतीत होवे उसे "आसन्न भूतकाल" कहते हैं। यथा—

(१) चन्द्र उदय हुआ है। (२) मेघ गरजे हैं।
(३) पुष्प फूले हैं। (४) फल फले हैं।
(५) गहने पहने हैं। (६) सन्मान हुआ है।

उपर्युक्त वाक्योंमें जो क्रियाएँ आयी हैं उनसे प्रतीति होती है कि चन्द्र उदय आदि अभी ही निकट भूतमें हुए हैं, अत ऐसी क्रियाएँ "आसन्नभूतकाल" की कहलाती हैं।

(३) सन्दिग्धभूतकाल—जिस क्रियासे भूतकालकी बातोंमें सन्देह उत्पन्न होवे उसे "सन्दिग्धभूतकाल" कहते हैं। यथा—

(१) शायद कार्तिकमें गङ्गा चढ़ी हों। (२) शायद उसने पढ़ा हो। (३) सम्भव है, मैंने कहा हो। (४) हो सकता है—यह बोली हो। (५) शायद वह सोया हो। (६) शायद वे आये हों।

उपर्युक्त क्रियाओंमें भूतकालकी बात तो है। परन्तु, उनके पूर होनेमें सन्देह है। अत ऐसी क्रियाएँ "सन्दिग्धभूत" कहलाती हैं।

(४) अपूर्णभूतकाल—जिस क्रियासे बीती हुई क्रियाकी अपूर्णता पायी जाय उसे अपूर्णभूतकाल कहते हैं। यथा—

(१) आम पकते थे। (२) पूड़ी छनती थी। (३) वह गाता था। (४) मैं सोता था। (५) पानी बरसता था। (६) बादल गरजते थे।

उपर्युक्त क्रियाओंमें भूतकालकी बात तो है। परन्तु, पूर्ण नहीं है। अर्थात् आम आदिका पकना समाप्त नहीं हुआ। अत ऐसी क्रियाओंको "अपूर्णभूतकाल" कहते हैं।

(५) पूर्णभूतकाल—जिस क्रियासे भूतकालकी बातोंकी समाप्तिका तथा उन बातोंको हुए बहुत कालसे बीतनेका ज्ञान होवे उसे पूर्णभूत कहते हैं। यथा—

वाल्मीकिने रामायण लिखी थी। रघु राजा हुए थ। सीताहरण हुआ था। लक्ष्मणशक्तिका दिन था। नीलकण्ठके दर्शन हुए थ। शमीवृक्षका पूजन था।

उपर्युक्त क्रियाओंसे ज्ञात होता है कि काम समाप्त हो चुके हैं। अत ऐसी क्रियाओंको "पूर्णभूतकाल" कहते हैं। अथात्-'लिखी थी'

'हुए थे' 'हुआ था' आदि क्रियाओंसे विदित होता है कि भूतकाल में बहुत दिन पहले ये सब काम समाप्त हो चुके हैं।

(६) हेतुहेतुमद्भूतकाल—जिस क्रियामें कार्य और कारणके फल दोनों भूतकालके पाये जावें उसे "हेतुहेतुमद्भूतकाल" कहते हैं। यथा—

(१) यदि पानी बरसता तो, खेती अच्छी होती।
(२) अगर कमलाकी कृपा होती तो मैं कृतकृत्य होता।
(३) यदि मैं कौंसिलका सदस्य होता तो, प्रस्ताव करता।
(४) अगर वह धमसे रहता तो, उसकी विजय होती।

उपर्युक्त वाक्योंमें कार्य और कारण दोनों भूतकालके हैं किन्तु, उनका फल एक दूसरेपर निर्भर है अतः ऐसे वाक्योंमें आयी क्रियाएं "हेतुहेतुमद्भूतकाल" की क्रियाएं कहलाती हैं।

साधारणतः अगर, यदि वाले वाक्यकी क्रियाएं हेतुहेतुमद्भाव की होती हैं।

प्रश्न

(१) भूतकाल किसे कहते हैं?
(२) सन्दिग्धभूतकी दो क्रियाएं उदाहरण सहित लिखें।
(३) "अगर वह आता तो मैं आता" वाक्यमें कौन काल है?

पाठ—११

वर्त्तमानकालिक क्रिया और उसके भेद

वर्त्तमानकालकी क्रियाके तीन भेद होते हैं। यथा—

(१) सामान्य वर्त्तमानकाल (२) तात्कालिक वर्त्तमानकाल (३) सन्दिग्ध वर्त्तमानकाल।

(१) सामान्य वर्त्तमानकाल—साधारण वर्त्तमानको सामान्य वर्त्तमानकाल कहा जाता है।

वह बोलता है। हाथी दौड़ता है। नमदा बहती है। रानी सोती है।

र्या गाती हैं। कन्यायें फूल तोड़ती हैं। अंगनाएं हंसती हैं।
पर्युक्त क्रियाओंसे साधारणतः यही प्रतीति होती है कि कार्य
ा-तोड़ना आदि— साधारणतः हो रहे हैं। अतः ऐसी क्रियाओंको
न्य वर्त्तमानकाल कहते हैं।

(२) तात्कालिक वर्त्तमानकाल— जब कर्त्ताके द्वारा क्रियाका
र उसी क्षण सम्पादित किया जा रहा हो तो उसे तात्कालिक
ान कहते हैं। यथा—

ुग्गा राम-राम कह रहा है। हिरण चौकड़ी मार रहा है। शेर
रहा है। वे रसगुल्ला खा पढ़ रहे हैं। मैं हंस रहा हूं।

उपयुक्त क्रियाओंसे प्रकट होता है कि, कार्य अभी-अभी हो रहे हैं।
ऐसी क्रियाएं तात्कालिक वर्त्तमानकालकी क्रियायें कहलाती हैं।

(३) सन्दिग्ध वर्त्तमानकाल— जब वर्त्तमान कालमें कार्य होनेमें
ह रहता है तब सन्दिग्ध वर्त्तमान काल कहा जाता है। यथा—
वह कुमारसम्भव पढ़ता होगा। वे अमरकोष रटते होंगे।
ादय होता होगा। सूर्यास्त होता होगा। पानी बरसता होगा। कोयल
ी होगी। तारे उगते होंगे। वीणा बजती होगी।
ऊपरके वाक्योंकी क्रियाओंसे विदित होता है कि, ये कार्य वर्त्तमान
के हैं। किन्तु, कार्य होनेमें संशय मालूम होता है। अतः ऐसी
ाएं सन्दिग्ध वर्त्तमानकालकी कही जाती हैं।

प्रश्न

(१) तात्कालिक वर्त्तमान क्रियाका एक वाक्य बनाओ।

पाठ-२४

भविष्यत्कालिक क्रिया और उसके भेद

भविष्यत् कालिक क्रियाओंके दो भेद होते हैं।

(१) सामान्य भविष्यत्काल (२) सम्भाव्य भविष्यत्काल।

(१) सामान्य भविष्यत्काल— जिस क्रियामें साधारणतः

भविष्यत्कालका बोध हो उसे सामान्य भविष्यत्-काल कहा जाता है।

राम आवेगा। सीता जायगी। सरस्वती दिखायी देगी। कुम्भ लगेगा। कृतयुग आवेगा। तुम जाओगे। वे जायेंगे। राजतिलक होगा।

उपर्युक्त वाक्योंकी क्रियाओंसे साधारणतः कार्यका भविष्यत् कालमें होना विदित होता है। अतः ऐसी क्रियाएं सामान्य भविष्यत्कालकी कही जाती हैं।

(२) सम्भाव्य भविष्यत् काल—जिस क्रियासे भविष्यत्की अभिलाषा विदित हो उसे सम्भाव्य भविष्यत्काल कहते हैं। यथा—

वे जायें। मैं आऊं। वह आवे। तुम आओ। वह खावे। मैं खाऊं।

उपर्युक्त क्रियाओंसे भविष्यत्कालकी सम्भावना और अभिलाषा जानी जाती है। अतः ऐसी क्रियाओंको सम्भाव्य भविष्यत्कालकी क्रियाएं जानिये।

प्रश्न

(१) भविष्यत्कालिक क्रियायुक्त एक वाक्य रचो।

पाठ-२५

अतिरिक्त क्रिया और उसके भेद

अतिरिक्त क्रियाके दो भेद होते हैं।

(१) आज्ञार्थ क्रिया। (२) पूर्वकालिक क्रिया।

आज्ञार्थ क्रिया—जिस क्रियासे किसीको कोई कार्य करने आदिका किसीका आदेश ज्ञात होवे उसे आज्ञार्थ क्रिया कहते हैं। यथा—

अविद्या न पढ़ो। क्रोध न करो। धर्म करो। प्रातः उठो। ज्ञान बढ़ाओ। परोपकार करो। गुरुके नित्य चरणस्पर्श करो।

ऊपरकी क्रियाओंसे ज्ञात होता है कि, एक व्यक्तिके द्वारा दूसरे व्यक्तिको कार्य करनेका आदेश दिया गया है। अतः ऐसी क्रियाएं आज्ञार्थ क्रिया कही जाती हैं।

(२) पूर्वकालिक क्रिया— जिस वाक्यमें एक व्यक्तिके द्वारा एक कार्य होनेपर दूसरा कार्य किया जाय उस वाक्यमें आयी क्रियाको पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। यथा—

यह स्नान करके जायगा। वे खाकर पढ़ेंगी। राजा हाथीपर चढ़कर घूमेगा। सीता सोकर उठी। प्रभा लिखकर खेलेगी। चन्द्रिका नहाकर रसोई बनायेगी। यह हंसकर बोलती है।

उपर्युक्त क्रियाओंसे विदित होता है कि, एक काम समाप्त होनेपर दूसरा काम होगा। अत: ऐसी क्रियाओंको पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

सांकेतिक क्रिया—जिससे किसी कार्यका संकेत मिले उसे सांकेतिक क्रिया कहते हैं यथा—

रमा यदि प्रसन्न हों तो विष्णु प्रसन्न हैं ही।

[नोट—कुछ लोग इसे "हेतुहेतुमद्भाव" ही मानते हैं।]

क्रियाको बनानेके कुछ नियम:—

क्रियाओंके सब रूपोंमें धातुके रूप सबदा स्थिर रहते हैं क्योंकि वे मूल हैं उन्हीं से सब क्रियाएं बनती हैं।

(१) धातुके अन्तमें 'ता' लगानेसे हेतुहेतुमद्भाव बनता है। यथा-

यदि वह आता तो बहुत अच्छा होता। अगर मैं आता तो तुम्हें ले जाता।

(२) धातुके आगे "आ" जोड़नेसे सामान्यभूत काल बनता है। यथा—

मैं आया। वह गया। तू बोला। मैं बोला।

(३) बहुवचन में धातुके आगे 'ए' जोड़ते हैं। यथा—

वे आये। तुम आये। वे गये। तुम गये।

(४) यदि धातुका अन्त 'ई' से समाप्त होता है तो भूत में ह्रस्व 'इ' होकर या लगता है। यथा—

उसने लिया (भूत काल)

(५) यदि धातुके अन्तमें 'आ' या 'ओ' हों तो सामान्यभूतमें धातुके परे या लगता है। यथा—

'आना' का आया। 'खाना' का खाया। 'धोना' का धोया। 'ढोना' का ढोया। 'बोना' का बोया। 'सोना' का सोया। 'लाओ' का लाया। 'आओ' का आया। 'सोओ' का सोया।

सभी क्रियाएं निम्नांकित तीन प्रकारसे बनती हैं।

(१) धातु। (२) हेतुहेतुमद्भूत। (३) सामान्यभूत।

(१) धातुसे—धातुमें ओ, गा वे, कर लगानेसे विधि, सामान्य भविष्यत्, सम्भाव्य भविष्यत् तथा पूर्वकालिक क्रियाएं बनती हैं। यथा—

आओ, आयगा, आवे, आकर। यथा—

तुम आओ। वह आयगा। वह आवे। उन्होंने आकर कहा।

(२) हेतु हेतुमद्भूतसे—क्रियामें—है, हैं, होगा, होगी, होंगे, था, थी, थे लगने से सामान्य वर्तमान, सन्दिग्ध वर्तमान और अपूर्णभूत बनते हैं। यथा—

वह आता है— वह आती है। मैं खाता हूं—* हम खाते हैं। वे आते हैं। वह जाती होगी। तुम बोलते होगे। वे बोलते होंगे। वे पीते होंगे। वह जपता था। वे लिखती थीं। तुम खेलते थे।

स्त्रीलिङ्गमें सब क्रियाएं दीर्घ ईकारान्तवाली हो जाती हैं तथा उनके बहुवचन बनानेमें दीर्घ ई पर अनुस्वार लगाया जाता है। यथा—

रामाकुंअरने— खरीदी। कन्याओंने— खरीदीं।

(३) सामान्यभूतसे—क्रियाओंमें— यथाक्रम- था, थी, थे, है, हैं तथा गा, गी, गे लगानेसे, पूर्णभूत, सन्दिग्धभूत और आसन्नभूतकी क्रियाएं बनती हैं। यथा—

उसने लिया था। वह आया होगा। मैंने दिया है।

---

* हम आती हैं और हम आते हैं। दोनों प्रकारसे स्त्रियां बोल सकती हैं। ये दोनों प्रयोग शुद्ध हैं।

कभी-कभी बहुवचनमें पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्गकी क्रियाएं एक सी होती हैं। यथा—

मैं आती हूं (स्त्रीलिङ्ग) हम आते हैं (स्त्रीलिङ्ग)
मैं आता हूं (पुल्लिङ्ग) हम आते हैं (पुल्लिङ्ग)

अब आप लोग, कौन क्रिया कैसे बनती है इसके लिए क्रियाकी उत्पत्तिको देखें—

क्रियाकी उत्पत्ति—

[धातु— सामान्य भविष्यत्, पूर्वकालिक और विधि, सम्भाव्य भविष्यत्।
हेतुहेतुमद्भाव— सामान्य वर्त्तमान, सन्दिग्ध वर्त्तमान, अपूर्णभूत।
सामान्यभूत— तात्कालिकवर्त्तमान, पूर्णभूत, आसन्नभूत, सन्दिग्धभूत।]

प्रश्न

आज्ञार्थ क्रिया और पूर्वकालिकके भेद बताओ।

पाठ-२६

क्रियाकी धातु रूपावली

जैसे संज्ञा और सर्वनामके रूप, आठ कारकों तथा दोनों लिङ्गों एवं दोनों वचनोंमें होते हैं। वैसे ही क्रियाके रूप भी तीन पुरुषों—उत्तम, मध्यम, अन्य— में तथा दोनों लिङ्गों एवं दोनों वचनोंमें और तीनों कालमें होते हैं। यथा—

अकर्मक क्रिया।

"जागना" क्रियाके रूप

	भूतकाल (पुल्लिङ्ग)		भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागा था	हम जागे थ	मैं जागी थी	हम जागी थीं
म०	तू जागा था	तुम जागे थ	तू जागी थी	तुम जागी थीं
अ०	वह जागा था	वे जागे थे	वह जागी थी	वे जागी थीं

वर्तमानकाल (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागता हूं	हम जागते हैं
म०	तू जागता है	तुम जागते हो
अ०	वह जागता है	वे जागते हैं

वर्तमानकाल (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं जागती हूं	हम जागती हैं
तू जागती है	तुम जागती हो
वह जागती है	वे जागती हैं

भविष्यत्काल (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागूंगा	हम जागेंगे
म०	तू जागेगा	तुम जागोगे
अ०	वह जागेगा	वे जागेंगे

भविष्यत्काल (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं जागूंगी	हम जागेंगी
तू जागेगी	तुम जागोगी
वह जागेगी	वे जागेंगी

भूतकालिक क्रियाके भेदानुसार रूप—

सामान्यभूत (पुंल्लिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागा था	हम जागे थे
म०	तू जागा था	तुम जागे थे
अ०	वह जागा था	वे जागे थे

सामान्यभूत (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं जागी थी	हम जागी थीं
तू जागी थी	तुम जागी थीं
वह जागी थी	वे जागी थीं

आसन्नभूत (पुंल्लिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागा हूं	हम जागे हैं
म०	तू जागा है	तुम जागे हो
अ०	वह जागा है	वे जागे हैं

आसन्नभूत (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं जागी हूं	हम जागी हैं
तू जागी है	तुम जागी हो
वह जागी है	वे जागी हैं

सन्दिग्धभूत (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागा होऊंगा	हम जागे होंगे
म०	तू जागा होगा	तुम जागे होगे
अ०	वह जागा होगा	वे जागे होंगे

सन्दिग्धभूत (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं जागी होऊंगी	हम जागी होंगी
तू जागी होगी	तुम जागी होगी
वह जागी होगी	वे जागी होंगी

	अपूर्णभूत (पुंल्लिंग)		अपूर्णभूत (स्त्रीलिंग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागता था	हम जागते थे	मैं जागती थी	हम जागती थीं
म०	तू जागता था	तुम जागते थे	तू जागती थी	तुम जागती थीं
अ०	वह जागता था	वे जागते थे	वह जागती थी	वे जागती थीं

	पूर्णभूत (पुंल्लिंग)		पूर्णभूत (स्त्रीलिंग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागा था	हम जागे थे	मैं जागी थी	हम जागी थीं
म०	तू जागा था	तुम जागे थे	तू जागी थी	तुम जागी थीं
अ०	वह जागा था	वे जागे थे	वह जागी थी	वे जागी थीं

	हेतुहेतुमद्भूत (पुंल्लिंग)		हेतुहेतुमद्भूत (स्त्रीलिंग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागता	हम जागते	मैं जागती	हम जागती
म०	तू जागता	तुम जागते	तू जागती	तुम जागतीं
अ०	वह जागता	वे जागते	वह जागती	वे जागतीं

वर्तमान कालिक क्रियाके भेदानुसार रूप:—

	सामान्य वर्तमान (पुंल्लिंग)		सामान्य वर्तमान (स्त्रीलिंग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागता हूं	हम जागते हैं	मैं जागती हूं	हम जागती हैं
म०	तू जागता है	तुम जागते हो	तू जागती है	तुम जागती हो
अ०	वह जागता है	वे जागते हैं	वह जागती है	वे जागती हैं

	तात्कालिक वर्तमान (पुंल्लिंग)		तात्कालिक वर्तमान (स्त्रीलिंग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जाग रहा हूं	हम जाग रहे हैं	मैं जाग रही हूं	हम जाग रही हैं
म०	तू जाग रहा है	तुम जाग रहे हो	तू जाग रही है	तुम जाग रही हो
अ०	वह जाग रहा है	वे जाग रहे हैं	वह जाग रही है	वे जाग रही

सन्दिग्ध वर्तमान (पुंलिङ्ग)			सन्दिग्ध वर्तमान (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागता होऊंगा	हम जागते होंगे	मैं जागती होऊंगी	हम जागती होंगी
म०	तू जागता होगा	तुम जागते होगे	तू जागती होगी	तुम जागती होगी
अ०	वह जागता होगा	वे जागते होंगे	वह जागती होगी	वे जागती होंगी

भविष्यत् कालिक क्रियाके भेदानुसार रूप—

सामान्य भविष्यत् काल (पुंलिङ्ग)			सामान्य भविष्यत् काल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागूंगा	हम जागेंगे	मैं जागूंगी	हम जागेंगी
म०	तू जागेगा	तुम जागोगे	तू जागेगी	तुम जागोगी
अ०	वह जागेगा	वे जागेंगे	वह जागेगी	वे जागेंगी

सम्भाव्य भविष्यत् (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं जागू	हम जागें
म०	तू जागे	तुम जागो
अ०	वह जागे	वे जागें

[सम्भाव्य भविष्यत् कालिकके रूप पुंलिङ्गके अनुसार ही होते हैं।]

जब आज्ञा दी जाती है तो केवल क्रिया वाचक शब्द कहकर पूरा वाक्याशय समझाया जाता है। यथा—

जागो, हसो, जाओ।

उपर्युक्त "जागो" प्रभृतिमें "तुम जागो, तुम हंसो, तुम जाओ" वाक्याशय छिपे हैं। ऐसी ही क्रियाएं "विधि क्रिया" कही जाती हैं।

प्रश्न

(१) लमा धातुके रूप बताओ।
(२) हंसना और रोना धातुओंके भूतकालिक आसन्नभूतके रूप बताओ।
(३) जागो, हंसो विधि क्रिया कब व्यवहृत होती हैं।

पाठ—२७

सकर्मक क्रिया

सकर्मक धातुमें क्रियाके सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूतमें कर्ताके आगे 'ने' * रहता है। यथा—

रामने खाया (सामान्यभूत) रामने खाया है (आसन्नभूत)
रामने खाया था (पूर्णभूत) रामने खाया होगा (सन्दिग्धभूत)

सकर्मक क्रिया।

'खाना' क्रियाके रूप—

भूतकाल (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने खाया	हमने खाये
म०	तूने खाया	तुमने खाये
अ०	उसने खाया	उन्होंने खाये

भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैंने खायी	हमने खायी
तूने खायी	तुमने खायी
उसने खायी	उन्होंने खायी

वर्तमानकाल (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाता हूँ	हम खाते हैं
म०	तू खाता है	तुम खाते हो
अ०	यह खाता है	ये खाते हैं

वर्तमानकाल (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं खाती हूँ	हम खाती हैं
तू खाती है	तुम खाती हो
वह खाती है	वे खाती हैं

भविष्यत्काल (पुंलिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाऊंगा	हम खायेंगे
म०	तू खायगा	तुम खाओगे
अ०	वह खायगा	वे खायेंगे

भविष्यत्काल (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	बहुवचन
मैं खाऊंगी	हम खायेंगी
तू खायेगी	तुम खाओगी
वह खायेगी	वे खायेंगी

---

*नोट जब कर्तामें 'ने' लगता है तब 'यह' का 'इस' 'वह' का 'उस' 'कोई' का 'किसी' 'कौन' का 'किस' 'जो' का 'जिस' 'सो' का 'तिस' एकवचनमें हो जाता है। यथा— इसने खायी। उसने खाटी। किसने पूरी। आदि।

भूत कालिक क्रियाके भेदानुसार रूप—

	सामान्य भूतकाल (पुल्लिङ्ग)		सामान्य भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने खाया	हमने खाये	मैंने खायी	हमने खायी
म०	तूने खाया	तुमने खाये	तूने खायी	तुमने खायी
अ०	उसने खाया	उन्होंने खाये	उसने खायी	उन्होंने खायी

	आसन्न भूतकाल (पुंलिङ्ग)		आसन्न भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने खाया है	हमने खाया है	मैंने खायी है	हमने खायी है
म०	तूने खाया है	तुमने खाया है	तूने खायी है	तुमने खायी है
अ०	उसने खाया है	उन्होंने खाया है	उसने खायी है	उन्होंने खायी है

	सन्दिग्ध भूतकाल (पुल्लिङ्ग)		सन्दिग्ध भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने खाया होगा	हमने खाये होंगे	मैंने खायी होगी	हमने खायी होंगी
म०	तूने खाया होगा	तुमने खाये होंगे	तूने खायी होगी	तुमने खायी होंगी
अ०	उसने खाया होगा	उन्होंने खाये होंगे	उसने खायी होगी	उन्होंने खायी होंगी

	अपूर्ण भूतकाल (पुंलिङ्ग)		अपूर्णभूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाता था	हम खाते थ	मैं खाती थी	हम खाती थीं
म०	तू खाता था	तुम खाते थे	तू खाती थी	तुम खाती थीं
अ०	वह खाता था	वे खाते थे	वह खाती थी	वे खाती थीं

	पूर्ण भूतकाल (पुल्लिङ्ग)		पूर्ण भूतकाल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैंने खाया था	हमने खाये थे	मैंने खायी थी	हमने खायी थीं
म०	तूने खाया था	तुमने खाये थे	तूने खायी थी	तुमने खायी थीं
अ०	उसने खाया था	उन्होंने खाये थे	उसने खायी थी	उन्होंने खायी थीं

हेतुहेतुमद्भूत (पुंल्लिङ्ग)			हेतुहेतुमद्भूत (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाता	हम खाते	मैं खाती	हम खातीं
म०	तू खाता	तुम खाते	तू खाती	तुम खातीं
अ०	वह खाता	वे खाते	वह खाती	वे खातीं

वर्तमान कालिक क्रियाके भेदानुसार रूप :—

सामान्य वर्तमान (पुंल्लिङ्ग)			सामान्य वर्तमान (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाता हूँ	हम खाते हैं	मैं खाती हूँ	हम खाती हैं
म०	तू खाता है	तुम खाते हो	तू खाती है	तुम खाती हो
अ०	वह खाता है	वे खाते हैं	वह खाती है	वे खाती हैं

तात्कालिक वर्तमान (पुंल्लिङ्ग)			तात्कालिक वर्तमान (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खा रहा हूँ	हम खा रहे हैं	मैं खा रही हूँ	हम खा रही हैं
म०	तू खा रहा है	तुम खा रहे हो	तू खा रही है	तुम खा रही हो
अ०	वह खा रहा है	वे खा रहे हैं	वह खा रही है	वे खा रही हैं

सन्दिग्ध वर्तमान (पुंल्लिङ्ग)			सन्दिग्ध वर्तमान (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाता होऊंगा	हम खाते होंगे	मैं खाती होगी	हम खाती होंगी
म०	तू खाता होगा	तुम खाते होगे	तू खाती होगी	तुम खाती होगी
अ०	वह खाता होगा	वे खाते होंगे	वह खाती होगी	वे खाती होंगी

भविष्यत् कालिक क्रियाके भेदानुसार रूप :—

सामान्य भविष्यत्काल (पुंल्लिङ्ग)			सामान्य भविष्यत्काल (स्त्रीलिङ्ग)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं खाऊंगा	हम खायेंगे	मैं खाऊंगी	हम खायेंगी
म०	तू खायगा	तुम खाओगे	तू खायगी	तुम खाओगी
अ०	वह खायगा	वे खायेंगे	वह खायगी	वे खायेंगी

सम्भाव्य भविष्यत्काल (पुंल्लिङ्ग)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं पढ़ूं	हम पढ़ें
म०	तू पढ़े	तुम पढ़ो
अ०	वह पढ़े	वे पढ़ें

सम्भाव्य भविष्यत् स्त्री-लिङ्गके रूप सम्भाव्य भविष्यत् पुंल्लिङ्गके अनुसार ही होते हैं। अर्थात्- सम्भाव्य भविष्यत् पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्गके रूप एक समान होते हैं

विधि-क्रियामें केवल मध्यम पुरुष ही होता है। यथा—

तू पढ़। तुम पढ़ो।

यह क्रिया दोनों लिङ्गोंमें एक समान होती है।

पाठ-२८

प्रेरणार्थक क्रिया

जो क्रिया अन्योंसे करायी जाय उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है। यथा—

श्यामा सरलासे पुस्तक पढ़वाती है। गोविन्द पत्र लिखवाता है। उषा श्री देवीसे दूध ढकवाती है। कृष्णा अपनी बहिन किशोरीसे कपड़े सिलवाती है।

उपर्युक्त वाक्योंको मननकर स्पष्ट प्रतीति होती है कि, कर्ता अपना काम दूसरेसे करवाता है। देखिये। श्यामा पुस्तक पढ़वानेका काम सरलासे करवा रही है। इसी प्रकार अन्य वाक्योंमें आनेवाली क्रियाएं प्रेरणार्थक क्रियाएं कहलाती हैं।

अकर्मक क्रियाओंकी धातुके अन्त्य वर्णमें "आ" अथवा "वा" लगानेसे सकर्मक प्रेरणार्थक क्रियाएं बनती हैं। यथा—

कृष्ण भगता है। कृष्ण भगाता है। यामिनी हंसती है।

दामिनी हसाती है। उमा जगती है। उमा जगाती है।

तुम कप रहे हो। तुम कपा रहे हो। तुम कंपते हो। तुम कंपाते हो

किसी किसी अकर्मकमें सकर्मक प्रेरणार्थक बनानेमें क्रियामें अन्य अन्य शब्द आ जाते हैं। यथा—

बक्स टूटा। बक्स तोड़ा। बक्स तुड़वाया।

बांस फटा। बांस फाड़ा। बांस फड़वाया।

कुछ प्रेरणार्थक क्रियाओंके दो रूप होते हैं। यथा—

घुमना, घुमाना, घुमोना, घुमवाना।

भींगना, भिंगाना, भिंगोना, भिंगवाना।

डूबना डुबाना, डुबोना, डुबवाना।

सकना, जाना, आना, रहना प्रभृति अकर्मक क्रियाओंसे सकर्मक प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते हैं।

प्रश्न

(१) सकर्मक प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? तीन उदाहरण दो।

(२) छटकना देना लेना, पाना सीखना क्रियाओंके रूप प्रेरणार्थकमें लिखो। अकर्मकसे सकर्मक प्रेरणार्थक कैसे बनती है?

पाठ—२९

संयुक्तक्रिया *

कभी कभी दो या तीन क्रियाओंके परस्पर मिलनेसे एक नया ही

---

* संयुक्त क्रियामें पहली क्रिया धातुके तुल्य ही रहती है केवल उसके 'ना' का लोप हो जाता है। यथा—

तुमने खा लिया' में खाना क्रियाके ना का लोप हो गया है।

अर्थ निकलता है। ऐसी क्रियाओंको संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रियामें पहली क्रिया प्रधान तथा दूसरी क्रिया सहकारिणी होती है। यथा—

सुग्गा बोल उठा। वे सिमसासे ले सके। शारि सुगमतासे पढ़ सका। मीना कठिनतासे दौड़ सकी।

इन वाक्योंमें दो-दो क्रियाएं आयी हैं। इन्हीं मिली हुई क्रियाओंको संयुक्त क्रिया कहते हैं। इन वाक्योंमें आई हुई प्रथम क्रियाएं बोल, ले, पढ़, दौड़, प्रभृति सहकारिणी हैं तथा दूसरी उठा, सके, सका, सकी प्रमुख हैं।

संयुक्त क्रिया—(१) अवधारण बोधक, (२) शक्ति बोधक और (३) पूर्णता बोधक नामोंसे तीन प्रकारकी होती हैं।

'आना' बैठना, 'डालना' प्रभृति क्रियाओंके योगसे अवधारणबोधक क्रियाएं बनती हैं।

अवधारण बोधक— वह लौट आया। वह चिल्ला उठी। उसने मार डाला। मैं बोल उठा।

इन वाक्योंमें प्रथम क्रियाएं सहायक हैं तथा प्रथम क्रियाओंमें धातुमें 'ना' निकल गया है। *(अव' सहायक क्रियामें 'ना' निकल जाता है।)*

धातुके आगे 'सकना' लगानेसे शक्तिबोधक क्रिया बनती है।

शक्ति बोधक— वह काम कर सका। तुम आ सके। मैं खा सका। वह दे सका।

ऊपरके वाक्योंमें प्रथम क्रिया सहायक तथा काल बोध कराती है। अत' जो संयुक्त क्रिया समान्यभूत काल बोधन करे वह शक्ति बोधक है।

धातुके परे 'चुकना' जोड़ने से पूर्णता बोधक क्रिया बनती है।

पूर्णता बोधक— मैं आ चुका। तुम खा चुके। वह पढ़ चुका। वे आ चुके।

इन वाक्योंमें संयुक्त क्रिया कामकी पूर्णता बताती है। अतः पूर्णता बोधक है।

तुम देने लेने लगे। वह सोने लगा।

[तीन प्रकारकी संयुक्त क्रियाएं और होती हैं। यथा—(१) आरम्भ बोधक (२) अवकाशबोधक (३) अनुमतिबोधक।

आरम्भबोधक— रामको आना पड़ा।

अवकाशबोधक— वह लिखने पाया।

अनुमतिबोधक—उसे पढ़ने देना।]

प्रश्न

(१) संयुक्त क्रियाके लक्षण कहो।

(२) ५ शब्द संयुक्त क्रियाके बनाओ।

(३) अवधारण क्रियाके दो शब्द बनाओ।

(४) नीचे लिखे वाक्योंमें संयुक्त क्रियाएं बताओ।

मन्नू बोलने लगा। देवदत्त आने लगा। बिल्ली दौड़ सकी। रामचन्द्र शनैः शनैः चल सका। कौवा उड़ गया। ललिता हार गयी। मेरी आज्ञासे वह आने लगा। हम कीमत दे चुके।

पाठ—३०

अव्यय

जिसमें लिङ्ग, पुरुष, वचन आदिका विभेद नहीं होता है वह अव्यय कहलाता है— जो सर्वदा एक सा रहता है। अव्यय पांच प्रकारके हैं—(१) क्रियाविशेषण, (२) संयोजक, (३) वियोजक, (४) अन्वयबोधक, (५) विस्मयबोधक।

साधारण अव्यय—जब, कब, कहां, जहां और प्रभृति अव्यय कहे हैं। यथा—

जब आप आवेंगे तब मैं जाऊंगा। सीता कहां गयी ? राम कहां हुए थे ? विष्णु और लक्ष्मी दोनों पूज्य हैं।

ऊपरके वाक्योंमें आये हुए— जब, तब, कहाँ, जहाँ, और प्रभृति शब्द अव्यय हैं। ये कभी बदल नहीं सकते हैं।

क्रियाविशेषण—जिस अव्ययके द्वारा क्रियाकी विशेषता ज्ञात होवे वह अव्यय क्रियाविशेषण कहलाता है। क्रियाविशेषण वाचक अव्यय चार प्रकारके होते हैं—स्थानवाची, परिमाणवाची, कालवाची, भाववाची।

साधारण क्रियाविशेषण—तुम कब आगे। वे जल्दी जल्दी गये।

उपर्युक्त वाक्योंमें "कब" और "जल्दी जल्दी" साधारणरूपेण क्रियाकी विशेषता बताते हैं। अतः ये अव्यय क्रियाविशेषण हैं।

(क) स्थानवाची क्रियाविशेषण—जिन अव्ययोंसे (क्रियाविशेषणोंसे) स्थानोंका परिज्ञान होवे। वे स्थानवाची क्रियाविशेषण कहे जाते हैं। यथा

इधर-उधर, जहाँ-तहाँ, सन्निकट, दूर प्रभृति।

मेरी बातोंका उत्तर देकर इधर-उधर देखो। पुस्तकोंको जहाँ-तहाँ फेंकना अच्छा नहीं है। चित्रकूटके सन्निकट काशी होती तो बड़ी अच्छी बात थी। बम्बई नगरी श्रीनगर-(काश्मीर-) से दूर है।

उपर्युक्त वाक्योंमें-इधर-उधर, जहाँ-तहाँ, सन्निकट, दूर प्रभृति अव्यय स्थानवाची क्रियाविशेषण हैं। क्योंकि उनसे क्रियाके व्यापारका स्थान जाना जाता है।

(ख) परिमाणवाची क्रियाविशेषण—जिन अव्ययोंसे (क्रियाविशेषणोंसे) माप वा परिमाणका बोध होवे वे क्रियाविशेषण परिमाणवाची कहे जाते हैं। यथा—

अधिक, अल्प, कुछ, बहुत, थोड़ा प्रभृति।

उन्होंने अधिक देर की। मैं अल्प भाषण करता हूँ। कुछ-कुछ खान लो। बहुत मत रटो। थोड़ा दूध पी लो, और थोड़ा बोलो।

उपर्युक्त वाक्योंमें, अधिक, अल्प, कुछ बहुत, थोड़ा प्रभृति शब्द क्रियाका माप बताते हैं। अतः परिमाणवाची क्रियाविशेषण हैं।

(ग) कालवाची क्रिया विशेषण—जिन अव्ययोंसे क्रियाके समयका बोध हो वे अव्यय (क्रिया विशेषण) कालवाची क्रिया विशेषण कहलाते हैं। यथा—

अब, कब, कल, आज, परसों, सदा, निरन्तर आदि।

जब चन्द्रोदय हुआ था तब वे आये थे। कल वे कलकत्ते चले गये। आज परीक्षाका फल प्रकाशित होगा। वे सदा यहां आया करते थे। परसों वे मैसूरसे आयेंगे। उनकी यही प्रकृति निरन्तर रही।

उपर्युक्त वाक्योंमें अब, कब, कल, आज, परसों, सदा, निरन्तर प्रभृति शब्द समय बताते हैं। अतः ये कालवाची अव्यय हैं।

(घ) भाववाची क्रिया विशेषण-जिन अव्ययोंसे क्रियाके भाव जाने जायें वे भाववाची क्रिया विशेषण कहे जाते हैं। यथा—

ज्यों त्यों, अवश्य, नहीं, मानो प्रभृति।

ज्यों त्यों करके रात बितायी। परस्परका विरोध नहीं होवे। वे अवश्य पधारेंगे। सीताका मुख मानो चन्द्र ही था।

उपर्युक्त वाक्योंमें ज्यों, त्यों, नहीं, अवश्य प्रभृति अव्यय क्रियाके भावोंको बताते हैं। अतः इन्हें भाववाची क्रिया-विशेषण कहते हैं।

(२) संयोजक अव्यय— जिन अव्ययोंसे शब्दोंका सम्बन्ध या वाक्योंका सम्बन्ध परस्पर होवे वे अव्यय संयोजक अव्यय कहलाते हैं। यथा—

तथा, एवं, और, परन्तु, किन्तु, प्रभृति

म० म० लक्ष्मणशास्त्री द्राविड़ तथा म० म० पञ्चानन तर्करत्न एवं म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी और पं० हाराणचन्द्र भट्टाचार्यके दर्शन तो हुए परन्तु, म० म० अनन्तकृष्ण शास्त्रीके न हुए।

उपर्युक्त वाक्योंमें तथा, एवं, और, परन्तु प्रभृति अव्यय शब्दों तथा वाक्योंको परस्पर जोड़ते हैं। अतः ये संयोजक अव्यय कहे जाते हैं।

(३) वियोजक अव्यय—जिन अव्ययोंसे शब्दों या वाक्योंके

पृथक् होनेकी प्रतीति होवे वे अव्यय वियोजक अव्यय कहे जाते हैं। यथा—

अथवा, किंवा, वा, चाहे प्रभृति।

हिन्दू विश्वविद्यालयसे अथवा प्रयाग विश्वविद्यालयसे एम० ए० उत्तीर्ण करो। 'आप रहें वा जायें' मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं। आप लड़ेंगे कि वा न लड़ेंगे मकान तो गया।

उपर्युक्त वाक्योंमें अथवा, किंवा, प्रभृति अव्यय वाक्योंको पृथक् करते हैं। अत ये वियोजक अव्यय हैं

(४) सम्बन्धवाचक अव्यय—जिन अव्ययोंसे, दूसरे शब्दोंका सम्बन्ध शब्दों और संज्ञाओंमें, जुटाया जाता है। ये अव्यय सम्बन्धवाचक अव्यय कहलाते हैं। यथा—

नीचे, ऊपर, पुरस्तात्, आगे, भीतर प्रभृति।

अमेरिका हिन्दुस्थानके नीचे तथा मक्के ऊपर है। रामके पुरस्तात् विभीषणने आकर प्रणाम किया और उनके आगे अपना शिर धरकर अपने भीतरके क्लेश बताये।

उपयंकित वाक्योंमें नीचे, ऊपर पुरस्तात्, आगे भीतर प्रभृति सम्बन्धवाची हैं। क्योंकि ये वाक्योंका सम्बन्ध या शब्दोंका सम्बन्ध बता रहे हैं।

(५) विस्मयवाची अव्यय—विस्मय, हर्ष, खेद प्रभृति भावोंको द्योतन करनेवाले अव्यय विस्मयवाची अव्यय कहे जाते हैं। यथा—

अहो, धन्य, साधु, हा, हाय, धिक् प्रभृति।

अहो! कैकेयीने रामके लिए १४ वर्ष वनवास मांगा। धन्य है, भीष्म! धन्य है। साधु, अंगद! साधु, तुमने ठीक किया। हाय, जटायु! तुम मारे गये। हा, सीते! कहां तुम्हें खोजूं। धिक्, दुःशासन तुम्हें धिक्कार है।

ऊपरके वाक्योंमें, अहो, धन्य, साधु, हा, हाय, धिक् प्रभृति अव्यय विस्मयवाची हैं। इन्हींको हर्ष आश्चर्य, खेदवाचक अव्यय भी कहते हैं।

उपसर्ग

उपसर्ग भी अव्ययके ही भेद हैं। इन्हें शब्दके पूर्वमें धरनेसे शब्दोंके अर्थोंमें परिवर्तन हो जाता है तथा भिन्न अर्थ प्रकट होने लगते हैं। यथा—

'सु' का अर्थ अच्छा "सुयोग" उसी 'सु' का अर्थ सरलतावाची है यथा— सुलभ।

कुछ उपसर्गोंके अर्थ सहित प्रयोग—

प्रयोग	अर्थ	
प्र—प्रमुक्त, प्रसिद्ध	(प्र) यश, गति, उत्पत्तिके अर्थका बोधक है।	
परा—पराजय, पराङ्‌	(परा) अनादर तथा दूसरेका	,,
अप—अपमृत्यु, अपाङ्ग	(अप) आगे हटनेका तथा हीनताका	,,
सम्—संयोग, सन्ताप	(सम्) योग एवं उत्तमताका	,,
निस्—निस्सन्तान, निस्सत्त्व	(निस) निषेधार्थकका	,,
निर्—निर्जीव, निरुपाय	(निर्) ,,	,,
दुस्—दुष्कीर्ति, दुश्चरित्र	(दुस्) चरित्रकी हीनताका	,,
दुर्—दुरवस्था, दुरभिगम्य	(दुर) ,,	,,
अभि—अभिमान, अभिमत	(अभि) इच्छा, नैकट्य	,,
प्रति—प्रत्यागमन, प्रतिदान	(प्रति) पुन: प्रतीतिका	,,
परि—पर्यटन, पर्यवेक्षण	(परि) ,,	,,
उप— उपस्थिति, उपालम्भ	(उप) सामीप्यका	,,
सु—सुयश, सुनीति	(सु) सुगमता, उत्तमताका	,,
उत्—उत्थित, उत्थान	(उत्) उठनेका, वृद्धिका	,,
अधि—अधिकार, अधिगमन	(अधि) अधिकताका	,,
सह—सह रामके सीता	(सह) साथका	,,

प्रश्न

(१) अव्यय किसे कहते हैं।

(२) परिमाणवाची और-स्थान वाची तथा साधारण क्रिया विशेषणके १०-१० उदाहरण दो।

(३) चार वाक्य सम्बन्धबोधक अव्ययके बताओ।

(४) उपसर्गोंसे क्या कार्य होता है।

(५) प्रति, उप, अधि, परि, अनु, पुर, वि उपसर्गोंके दो दो वाक्य रचो।

(६) निम्न वाक्योंमें अव्यय भरो—

राम·····		जाता है।		कृष्ण		··· बरसाता है।

चन्द्रमा		उदय हुआ।		पेड़ोंमें		फल लगते हैं।

खाने को		सोचो।		उसने		पीया।

सतीप्रभा		अच्छी थी।		उसकी घड़ी है।

तुम्हें		खाना होगा।		जाओ		'दूध पियो।

से		बुलाओ।		खा लो		सोओ।

पाठ-२१

कृदन्त

जब क्रियामें प्रत्यय लगाकर शब्द बनाये जाते हैं तब वे कृदन्तक कहे जाते हैं और वे प्रत्यय कृत्प्रत्यय कहलाते हैं। यथा—

खानेवाला यही पुरुष है। सोचनेवाला वह बुद्धिमान लड़का कहां है। छूटनेवाली नौका यही है। जानेवाली स्त्री यही है।

उपर्युक्त वाक्योंमें खानासे-खानेवाला, सोचनासे-सोचने वाला। छूटनासे-छूटनेवाला। जानासे-जानेवाली संज्ञाएं बनी हैं।

खाना, सोचना, छूटना, जाना प्रभृति क्रियाएं हैं और प्रत्यय लगकर संज्ञारूपमें आयी हैं। ऐसी संज्ञाओंको कृदन्त कहते हैं।

कृदन्त संज्ञा मुख्यतया पांच प्रकारकी होती हैं—कर्तृवाचक, कर्म वाचक, करणवाचक, क्रियाद्योतक और भाववाचक।

(१) कर्तृवाचक—जब कर्तृवाचक संज्ञा वाक्यमें आती है तो प्राय विशेषणसी प्रतीत होती है। यथा—

पीना—पीनेवाला। खाना—खाऊ। लिखना—लिखैया। होना-होनहार। गाना—गवैया। पूजा—पूजक।

वाक्यगत उदाहरण—वह भांग पीनेवाला है। वे बड़े खाऊ हैं। तुम बड़े लिखैया हो। वह बड़ी होनहार है। ये बड़े गवैया हैं। मैं देव-पूजक हूं।

उपर्युक्त वाक्योंकी धातुओंमें वाला, ऐया, हार, अक प्रत्यय लगे हैं।

(२) कर्मवाचक—जब कृदन्तसे कर्मत्वका बोध होता है तो कर्म वाची कृदन्त कहा जाता है। यथा—

चटनी, खैनी, सुंघनी, ओढ़ना प्रभृति। चाटना—चटनी। खाना—खैनी। सूंघना-सुंघनी। ओढ़ना—ओढ़ना।

वाक्यगत उदाहरण—यह चटनी खराब। यह खैनी खाओ। सुंघनी सूंघो। आम ओढ़ना मना है।

उपर्युक्त वाक्योंकी संज्ञामें नी और आ प्रत्यय लगे हैं।

(३) करणवाचक—करणवाची कृदन्तमें कर्ताके द्वारा क्रियाके होनेका अर्थ बोध होता है। प्राय आ, आनी, औती, नी प्रत्यय करण वाचीमें जोड़े जाते हैं। यथा—

घेरना-घेरा। ठेलना-ठला। मथना-मथानी। काटना-कटौती। घोटना-घोटनी। ढकना-ढकनी

वाक्यगत उदाहरण-उसे घेरेसे बाहर लाओ। वह ठला द्वारा भेजा गया। घी मथनीसे निकलता है। कटौतीसे काम नहीं चलता है। घोटनीसे भी घोटो। ढकनीसे दूध ढको।

(४) क्रियाद्योतक कृदन्त—क्रियाद्योतक कृदन्तका प्रयोग तीन प्रकारसे होता है। भूतकालिक, वर्तमान कालिक और क्रिया-विशेषण अव्यय से। ये तीनों निम्नांकित प्रत्ययोंके लगानेसे बनते हैं। यथा—

ता, आ, ए, कर।

वाक्यगत उदाहरण—वह खाता-पीता चला गया। मरता क्या न करता। भागा डाकू पकड़ लिया गया। जागा मालक रोता है। वे हँसते-हँसते लोट गये। वह खाकर आयगा।

उपर्युक्त वाक्योंमें जो प्रत्यय हैं वे कृदन्तके ही कहलाते हैं। यथा—

खाना-खाता। मरना—मरता। भागना—भागा। जागना-जागा। हंसते—हंसते। खाना—खाकर।

(४) भाववाचक—जब कृदन्तमें ना, आई, आहट, औता, नी आदि हों तो भाववाची कृदन्त कहलाते हैं। यथा—

पढ़ना, हंसना, खटाई, चढ़ाई। चिल्लाहट, खड़खड़ाहट। समझौता। कटनी, मरनी।

वाक्यगत उदाहरण—पढ़ना भला है। आममें खटाई क्यों नहीं ? लंकापर चढ़ाई की। उसकी चिल्लाहट सुनकर। पत्तोंकी खड़खड़ाहटसे कुत्ते दौड़े। ब्रिटेनने मित्रराष्ट्रोंके दबावसे शत्रुराष्ट्रोंसे समझौता किया। तुम कटनी न किया करो। मरनीमें जाना पड़ा।

ऊपरके वाक्यों में कृदन्तके प्रत्यय हैं।

यथा—पढ़ना-पढ़ना। खट्टा-खटाई। चढ़ना-चढ़ाई। चिल्लाना-चिल्लाहट। खड़खड़ाना-खड़खड़ाहट। कटना-कटनी। मरना-मरनी।

प्रश्न

(१) कृदन्त किसे कहते हैं ?

(२) भाववाची कृदन्तके दो वाक्य बनाओ।

(३) कर्मवाची कृदन्तके तीन उदाहरण लिखो।

पाठ—१२
तद्धित

संज्ञामें प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनाये जाते हैं वे तद्धित कहे जाते हैं। यथा—

दूधवाला, घासवाली, चूनावाली, मणिहारा प्रभृति।

उपर्युक्त शब्द—वाला, वाली, हारा प्रत्ययोंसे परिपूर्ण हैं। अत: ऐसे शब्द तद्धित कहे जाते हैं क्योंकि ये संज्ञामें प्रत्यय लगकर बने हैं।

तद्धित—अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, गुणवाचक, भाववाचक ऊनवाचक और अव्ययवाचक भेदोंसे ६ प्रकारके होते हैं।

(१) अपत्यवाचक—जो शब्द संज्ञाकी परम्परा बतानेवाला प्रत्ययी हो वह अपत्यवाचक तद्धित है।

वाक्यगत उदाहरण—गणपतिके उपासक गाणपत्य कहलाते हैं। पाण्डुकी सन्तान पाण्डव कहलाती है। विदेहकी पुत्री वैदेही थी। विष्णु तथा शिवके भक्त वैष्णव और शैव कहे जाते हैं। स्मृतिके अनुसार चलनेवाले स्मार्त कहे जाते हैं। भजनानन्दी भजन करते हैं।

उपर्युक्त वाक्योंमें जो शब्द गाणपत्य, पाण्डव, वैदेही, वैष्णव, शैव, स्मार्त, भजनानन्दी आये हैं। ये सब अपत्यवाची तद्धित हैं।

(२) कर्तृवाचक—जिस संज्ञामें वाला, हारा प्रत्यय लगें वे कर्तृवाचक तद्धित कहलाते हैं। यथा—

पत्तलवाला, आमवाला, चुड़िहारा आदि शब्द कर्तृवाचक तद्धित कहलाते हैं।

(३) गुणवाचक—जिन तद्धित संज्ञाओंमें गुणवाची—आलु, ई, मान्, वान्, प्रत्यय लगे हों वे तद्धित गुणवाचक कहलाते हैं। यथा—

कर्ण बड़े कृपालु थ। शिवि बड़े त्यागी थ। सीता सती थी। बुद्धिमान् समझते हैं। सभी ज्ञानवान्, धनवान् नहीं होते हैं

उपर्युक्त वाक्योंमें कृपालु, त्यागी, बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, धनवान् शब्द तद्धितान्त प्रत्ययी हैं।

(४) भाववाचक—जिन संज्ञाओंमें प्रत्यय—आई, पन, हट आदि हों वे तद्धित शब्द भाववाचक तद्धित प्रत्ययी हैं। यथा—

उसकी पण्डिताई अगाध है। बचपन न करो। मलाईमें चिकनाहट है।

उपर्युक्त वाक्योंमें पण्डिताई, बचपन, चिकनाहट, प्रभृति शब्द भाववाचक तद्धित हैं।

(५) ऊनवाचक—जिस संज्ञामें प्रथम गुरुता हो फिर हीनता वे ऊनवाचक प्रत्यय तद्धित प्रत्ययी कहे जाते हैं। यथा—

गोला–गोली। बांस–बांसुरी। बच्चा–बचवा। छाता–छतुरी। कटोरा—कटोरी प्रभृति।

उपर्युक्त शब्दोंमें प्रथम शब्द गुरुत्व रखते हैं तथा द्वितीय शब्द प्रथमसे हीनत्वको प्राप्त हुए हैं। अतः ऐसे शब्द ऊन प्रत्ययी तद्धित कहे जाते हैं।

(६) अव्ययवाचक—जिन अव्ययमें—तक, भर, ए, ओं प्रत्यय लगे हों वे अव्यय तद्धितान्त कहे जाते हैं। यथा—

आजतक, कलतक, दिनभर, कोसभर, ऐसे, वैसे, घंटों प्रभृति।

उपर्युक्त वाक्योंके ये प्रत्यय अव्ययी हो गये हैं। अर्थात् उक्त प्रत्ययोंसे वे शब्द भी अव्यय हो गये हैं, जिनमें ये प्रत्यय लगे हैं। यथा— दिन + भर=दिनभर आदि।

प्रश्न

(१) संज्ञामें प्रत्यय लगानेपर तद्धित संज्ञावाला शब्द कैसे होता है ? उदाहरणोंसे दर्शाओ।

(२) तद्धित और कृदन्त दोनोंके उदाहरण दो–दो दो।

(३) अपत्यवाचक और ऊनवाचक तद्धितके तीन वाक्य बनाओ।

(४) भाववाची तद्धित प्रत्ययी एक वाक्य बनाओ।

पाठ-३३

समास

जब दो अथवा दोसे अधिक शब्द अपनी विभक्तिको छोड़कर मिल जाते हैं तब उनके योगसे जो शब्द बनते हैं वे समास (समस्त पद) कहे जाते हैं। यथा—

शिवमन्दिर—शिवका मन्दिर।

करुणानिधि—करुणाके निधि।

द्विजराज—द्विजोंके राजा।

उपर्युक्त पदोंमें अर्थात्–शिव, करुणा, द्विज प्रभृति शब्दोंमें क्रमसे का, के, के विभक्तियां छिपी हुई हैं। अतः ऐसे ही शब्द समास या समस्त शब्द कहे जाते हैं। जब दो या दोसे अधिक शब्दोंको समस्त करना होता है तो अन्तिम शब्दमें विभक्ति रहती है और पहलेके सभी शब्दोंकी विभक्तियोंका लोप हो जाता है। यथा—

"काशी-विश्वनाथ-मन्दिरमें" इस वाक्यमें प्रथम तथा दूसरे पदोंकी विभक्तियोंका लोप हो गया है।

"काशीके विश्वनाथके मन्दिरमें" वाक्यको समस्त करनेपर उपर्युक्त वाक्य बना है। इसी प्रकार अन्यत्र सब जगह समास करना चाहिये।

हिन्दीमें समास चार प्रकारके होते हैं। यथा—

(१) अव्ययी भाव (२) तत्पुरुष—(क) कर्मधारय (ख) द्विगु (३) बहुव्रीहि (४) द्वन्द्व।

(१) अव्ययीभाव समास—जिस समासमें पहला शब्द प्रधान होता है तथा वह शब्द अव्ययवाची होता है। उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। यथा—

यथाशक्ति, प्रतिदिवस, आजन्म, परोक्ष।

उपर्युक्त शब्दोंमें यथा, प्रति, आ, पर, शब्द अव्ययवाची हैं। इन शब्दोंका प्रयोग ऐसे करते हैं। यथा—

मैं यथाशक्ति (शक्तिभर) प्रयत्न करूंगा।
वे प्रतिदिवस (नित्य ही) यहां आते थे।
तुम आजन्म (जीवन-पर्यन्त) सुखी रहो।
परोक्षमें (पीठके पीछे) किसीकी निन्दा न करो।

(९) तत्पुरुष समास—जिस समासमें दूसरा पद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा—

विद्याहीन, भूतबलि, ऋणमुक्त, राजपुत्र, शास्त्रनिष्णात।

उपर्युक्त शब्दोंमें दूसरे पदोंके-हीन, बलि, मुक्त, निष्णात अर्थ प्रमुख हैं। इन शब्दोंके ऐसे अर्थ होते हैं। यथा—

वह विद्याहीन (विद्यासे रहित) है।
वह भूतबलि (भूतको बलि—भूतके लिए बलि) देता है।
तुम ऋणमुक्त (ऋणसे रहित) हो गये।
वे राजपुत्र (राजाके पुत्र) कहां गये।
वे शास्त्रनिष्णात (शास्त्रोंमें निष्णात) हैं।

(क) कर्मधारय समास—जब विशेष्य विशेषणका उपमा उपमेय भावसे सम्बन्ध होता है तब कर्मधारय समास होता है। अर्थात् विशेषणकी विशेष्यके समान समानता जहांपर प्रकटकी गयी हो वहां "कर्मधारय" समास मानना चाहिये। यथा—

घनश्याम चन्द्रवदन, चरणकमल, विद्याधन।

उपर्युक्त पदोंमें घन, चन्द्र, कमल, धन, शब्द विशेषण या समान धर्मी उपमान हैं। इन शब्दोंके ऐसे अर्थ होते हैं। यथा—

घनश्याम (घन-मेघ) के समान श्याम (कृष्ण) हैं।
चन्द्रवदन (चन्द्रके समान) मुख है।
रामके चरणकमलमें (कमलके समान चरणमें) जाओ।
विद्याधन (धनके समान विद्या) प्राप्त करो।*

* तत्पुरुष समासके दो भेद—'कर्मधारय' और 'द्विगु' समास हैं।

(ख) द्विगु समास—जिस समासमें संख्यावाची शब्द हों वे द्विगु समासवाची हैं। यथा—

त्रिभुवन, चतुर्वर्ण, पञ्चरात्र।

उपर्युक्त पदोंमें प्रथम पद त्रि, चतु., पञ्च संख्यावाची हैं। इन शब्दोंके अर्थ ऐसे होते हैं। यथा—

विष्णुपूजन त्रिभुवनमें (तीनों भुवनोंमें) होता है।

चतुर्वर्ण (चारो वर्णो) में ब्राह्मण श्रेष्ठ होते हैं।

देवस्थलोंमें पञ्चरात्र (पांच रात) रहना श्रेयस्कर है।

(३) बहुव्रीहिसमास—जिस समासके पदोंसे कोई भिन्न विशेष अर्थ प्रकट हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा—

देवदत्त, महात्मा, त्रिभुज, पञ्चानन, पीताम्बर।

उपर्युक्त समस्त पदोंसे भिन्न तथा विशेष अर्थ प्रतीत होते हैं। यथा—

"देवदत्त आता है" यहां देवदत्त संज्ञा है—देवसे प्राप्त पदोंसे भिन्न विशेष अर्थ प्रकट हुआ है। देवसे प्राप्त किसी साधारण वस्तुका अर्थ नहीं है।

"महात्मा आते हैं" यहां बड़ी आत्मावाले कोई विशेष व्यक्ति आते हैं यह अर्थ अभीष्ट है। बड़ी आत्मा जिसकी है ऐसे साधारण अर्थकी प्राप्ति यहां नहीं है।

"त्रिभुज गया" तीन भुजावाला कोई विशेष व्यक्ति गया।

"पञ्चाननको मनाओ" इस वाक्यमें किसी पांच मुंहवालेको मनाओ यह अर्थ नहीं। अपितु, महादेवको मनाओ— जिनके पांच मुख हैं। सभी पांच मुखवालोंको नहीं।

"पीताम्बरके चरणस्पर्श करो।" यहां सभी पीले वस्त्रधारीके चरण-स्पर्श न करो। अपितु पीले वस्त्रधारी कृष्णके ही चरणस्पर्श करो। ऐसा विशेष अर्थ प्रकट होता है।

(४) द्वन्द्व समास—जिस समासमें 'और' आदि शब्द हो तथा उसकी क्रिया एक ही हो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। ध्यान रखिये द्वन्द्व

समासमें सभी पद प्रधान रहते हैं कोई भी अप्रधान नहीं होता है। यथा-

राम कृष्ण, मा-बाप, भाई बहिन, जायापतिमें सभी शब्द प्रधान हैं कोई अप्रधान नहीं हैं। यथा—

राम कृष्ण (राम और कृष्ण) आते।

मा-बाप (माता और पिता) गये।

भाई बहिन (भाई और बहिन) आयी।

जायापति* (स्त्री और पुरुष) बोलते हैं।

प्रश्न

(१) समास किसे कहते हैं।

(२) समास कितने प्रकार के होते हैं।

(३) निम्न वाक्योंमें कौन कौन समास हैं उनके नाम बताओ।

विपुल धनशाली। यूरोपके लोग मेधावी होते हैं। चरण कमलदें। धर्मराज, अहोरात्र, महाराज शब्दोंको जानते हो। द्रौपदी पतिव्रता थी। सीता एकपत्नी थी। दिनरात आया करो। वह रोज रामायण-महाभारत पढ़ता है। दाल-रोटि खाओ। सीताका मुख चन्द्रतुल्य था। सपरिवार आना। सुचरित्र आदमी है। धनश्याम मत होओ। चक्रपाणिको भजो। दशमुख बड़ा पण्डित था।

पाठ—१४

वाक्यप्रकरण

जिन शब्दोंके समूह द्वारा वक्ताका पूर्ण अर्थ प्रकाशित हो उसे वाक्य कहते हैं। यथा—

राम खाता है। सीता पढ़ती है।

प्रश्न और उत्तर देते समय आधे या चौथाई वाक्यके द्वारा अवशिष्ट वाक्य अध्याहारित कर लिये जाते हैं। यथा—

"तुम कौन हो" के स्थानमें "कौन" (प्रश्न वाक्य)

"मैं रोटी खाती हूँ" ,, "खाती हूँ" (उत्तर वाक्य)

---

*जायापती—शब्द द्विवचनान्त संस्कृतमें है और हिन्दीमें एकवचनान्त है। यथा—जायापति। यह शब्द हिन्दीमें ह्रस्व करके लिखा जाता है।

आसत्ति, आकांक्षा और योग्यता

प्रत्येक वाक्यमें आसत्ति, आकांक्षा और योग्यता होती है। यदि ये न रहें तो वाक्य नहीं बन सकते हैं। यथा—

आसत्ति—(१) 'कृष्ण' कहकर दो घण्टे पश्चात् कहा-"आता है" तो यह वाक्य नहीं हुआ। कृष्णके पश्चात् ही "आता" है कहना चाहिये। (२) 'चन्द्र' कहकर बीचमें "आता हूं" आदि दूसरे वाक्य कहकर फिर "उगता है" कहना वाक्य नहीं माना जाता। चन्द्रके बाद ही उगता है कहना चाहिये।

आकांक्षा—"समुद्रसे रत्न" पदोंके श्रवण पश्चात् जो क्रिया सुननेकी इच्छा होती है। उसे आकांक्षा कहते हैं। यह यदि वाक्यमें न रहे तो वाक्य अपूर्ण होता है। क्रिया युक्त कर्ताके साथ शब्दोंकी यथास्थितिको वाक्य कहा जाता है।

योग्यता—"दांतसे नोंचता है" कहना भी वाक्य नहीं है, क्योंकि दांतसे काटा जाता है। नाखूनसे नोंचा जाता है। योग्य तथा ठीक अर्थवाले शब्दोंकी यथास्थिति रहनेपर वाक्य कहा जाता है।

वाक्यांश

जिस वाक्यमें क्रिया अपूर्णता बतावे उसे वाक्यांश कहते हैं। यथा—

मैं खाकर । तुम जाकर । वह सोकर ।

केवल शब्द मात्र वाक्य नहीं कहा जाता है। अथवा साथ कर्ता और क्रिया युक्त पदोंके समूहको वाक्य कहा जाता है। यथा—

राम (वाक्य नहीं— कर्ता है)
सीताको (" " कर्म ")
बुलाता है (" " क्रिया,,)
राम सीताको बुलाता है (वाक्य है)

प्रश्न

(१) वाक्य किसे कहते हैं? आसत्तिका क्या अभिप्राय है?
(२) खाना पीना देना लेना सोना, जाना आना क्रियाओंके तीन वाक्य बनाओ वाक्य है या नहीं?

पाठ–३५

पदयोजना

वाक्यमें पदोंको यथाक्रम रखनेका नाम "पदयोजना" है। पदोंको यथा स्थान रखनेको पदयोजना कहते हैं। जिसका अर्थ है— शब्दोंकी यथाक्रम योजना करना—शब्दोंको आगे-पीछे-उलट-पुलटकर न रखकर सीधा रखना। यथा—

सुग्गा उड़ता है। मैंना गाती है। आदमी जाते हैं।

इन वाक्योंमें पदयोजना ठीक है क्योंकि इन वाक्योंमें पहले कर्ता है फिर क्रिया है। यदि इन्हीं वाक्योंको उलट दिया जाय तो पदयोजना गलत हो जायगी। यथा— उड़ता है सुग्गा। गाती मैंना है। जाते हैं आदमी। (गलत पदयोजना है)

वाक्यमें कर्त्ता प्रथम आना चाहिये। अत: उपयुक्त उलटी हुई पदयोजना गलत है।

समानाधिकरण

जो शब्द या वाक्यांश किसी समानार्थी शब्दका अर्थ स्पष्ट करता है उसे उस शब्दका समानाधिकरण कहा जाता है। यथा—

"विश्वके प्रमुख नेता महात्मा गान्धी बड़े त्यागी थे।"

इस वाक्यमें "महात्मा गान्धी" शब्द 'विश्वके प्रमुख नेता" का समानाधिकरण है।

कोई, कुछ, सब, यह, दोनों, तीनों आदि कभी कभी समानाधिकरण होकर प्रयुक्त होते हैं। यथा—

"धन-दौलत कुछ भी काम न आयी।"

उद्देश्य और विधेय

जिसके विषयमें कुछ कहा जाता है उसे "उद्देश्य" कहते हैं।

जो कुछ उद्देश्यके लिए कहा जाता है उसे "विधेय" कहते हैं।

विद्या सोती है। मुनि जपता है। श्यामा रोती है। कुत्ते दौड़ते हैं। घोड़े खाते हैं। चिड़िया उड़ती है। हाथी जाता है।

इन वाक्योंमें एक कर्त्ता और एक क्रिया है। यथा—

मुनि (कर्त्ता), जपता है (क्रिया), कुत्ते (कर्त्ता), दौड़ते हैं (क्रिया)।

अतः 'मुनि' उद्देश्य और 'जपता है' विधेय है। क्योंकि कर्त्ता उद्देश्य होता है और क्रिया (व्यापार) विधेय होती है। इसी प्रकार 'कुत्ते' उद्देश्य है 'दौड़ते हैं' विधेय है। अन्य वाक्योंमें इसी प्रकारसे उद्देश्य विधेय खोजने चाहिये।

यदि उद्देश्यके पश्चात् उसका विशेषण आवे तथा वह विशेषण क्रियाके पहले रहे तो उस विशेषणके साथ क्रियाको विधेय माना जाता है। यथा—

ब्रिटेनके विद्वान् राजनीतिज्ञ होते हैं। भारतीय जन धार्मिक होते हैं।

इन वाक्योंमें राजनीतिक और धार्मिक 'विद्वान्' और 'जनके' विशेषण हैं। परन्तु, उद्देश्यके पश्चात् आनेसे विधेयकी विस्तीर्णता करनेवाले हैं।

जब कर्त्ता दो हों तथा क्रिया एक हो तो पहला कर्त्ता उद्देश्य कहा जाता दूसरा क्रियाके साथ विधेयको विस्तीर्ण करता है। यथा—

राजगोपालाचार्य गवर्नर जेनरल हो गये। सत्यप्रकाश कौशल रेडियो स्टेशन के अधिकारी हैं। सर तेज बहादुर सप्रू हिन्दू विश्व विद्यालय कौंसिलके सदस्य थे।

उपयुक्त वाक्योंमें गवनर जेनरल, अधिकारी सदस्य शब्द भी कर्त्ता ही हैं। परन्तु, इनको क्रियाके साथ विधेय ही माना जाता है। ये विधेयकी विस्तृति करनेवाले हैं।

उद्देश्यमें साधारणतः संज्ञा और सर्वनाम रहते हैं जैसा ऊपरके वाक्योंमें लिखा गया है। परन्तु, कभी-कभी विशेषण और वाक्यांश भी संज्ञारूपमें होकर उद्देश्य हो जाते हैं। यथा—

विशेषण—मूर्ख कष्ट पाते हैं।

वाक्यांश—हँसते रहना हितकर है।

उद्देश्य और विधेयकी विस्तीर्णतासे ही वाक्यकी वृद्धि होती है। अत: वाक्योंको छोटेसे बड़ा करना उनकी वृद्धि करना है। यथा—

मुग्ध हो गयासे—पूर्णिमाके चन्द्रोदयमें उसका हृदय मुग्ध हो गया।

दयालु थे से—पं० मदनमोहन मालवीय बड़े विद्वान् तथा दयालु नेता थे।

प्रश्न

(१) पद योजना कैसे होती है।

(२) समानाधिकरणके दो उदाहरण दें।

(३) उद्देश्य और विधेय समझाइये।

(४) निम्न वाक्योंमें उद्देश्य तथा विधेय बतायें—

रेडियोपर जो नाटक होते हैं वे श्रव्यकाव्यके अन्तर्गत हैं। चन्द्रोदय होता है। शिवजी पिनाकपाणि कहलाते हैं। कृष्ण बाँसुरी बजाते हैं। हाथी आते हैं।

पाठ-३६

वाक्यरचनाके नियम

(१) साधारणत: वाक्यमें पहले कर्त्ता फिर क्रिया रहती है। यथा—

राजा आता है। झण्डे उड़ते हैं। पूजा होती है।

उपर्युक्त प्रथम वाक्यमें राजा (कर्त्ता) और आता है (क्रिया) है।

(२) वाक्यमें कर्म प्राय: बीचमें रखा जाता है। यथा—

हाथी पानी पीता है। चिड़ियाँ गाना गाती हैं। इनमें पानी, गाना शब्द कर्म हैं।

(३) जो पद जिस पदसे सम्बन्धित रहता है वह उसके साथ रहता है। जो पद कर्त्तासे सम्बन्धित रहता है वह कर्त्ताके साथ रहता है तथा जो क्रियासे सम्बन्धित रहता है क्रियाके साथ रहता है जो करणादिसे सम्बन्ध रखता है वह करणादिके साथ रहता है। यथा—

नर्मदा नदीका धुआँधार नामक प्रपात भेड़ाघाट (जबलपुर) के

समीप है। अयोध्याके समीप बहुत बड़ी नदी है। सूर्य प्रखर किरणोंसे तपता है।

उपर्युक्त उदाहरणोंमें नर्मदाका नदीके साथ तथा नदीका धुंआधारके साथ और भेड़ाघाटका जबलपुरके साथ समीप सम्बन्ध है। अतः इन्हें समीपमें रखा गया है। इसी प्रकार अन्य वाक्योंमें जानना चाहिये।

(४) वाक्य-समापिका क्रियाके पूर्व हीमें असमापिका क्रियाएं धरी जाती हैं। यथा—

सीता वन जाकर लौट आयी। मोहन देखकर आयगा। मैं गाकर नहीं खाता। वह हंसकर देता है।

इन वाक्योंमें जाकर, देखकर, गाकर, हंसकर, असमापिका क्रियाएं हैं।

(५) विशेष्य और विशेषण—जब विशेष्य विद्यमान रहता है तब विशेषणमें विभक्ति नहीं लगती है। यथा—

पुण्यवान् पुरुषोंमें प्रतिभा रहती है। पापी नारियोंकी प्रभाएं कान्तिहीन होती हैं।

ऊपरके वाक्योंमें विशेषण 'पुण्यवान् और पापी' में कोई विभक्ति नहीं लगी है। अपितु, विशेष्य 'पुरुषोंमें और नारियोंके' साथ विभक्तियां लगी हैं।

(६) जब विशेष्य नहीं रहते हैं तब विशेषणोंमें ही विभक्तियां लगती हैं। यथा—

पण्डितोंको विद्या प्रिय है। नग्नोंको वस्त्र दो।

उपर्युक्त वाक्योंमें विशेष्य नहीं है। अतः पण्डितों तथा नग्नोंमें विभक्तियां लगी हैं, ये विशेषण हैं।

(७) यदि आकारान्त विशेषण हो तो स्त्रीलिङ्ग विशेष्यके साथ ईकारान्तवाला हो जाता है। यथा—

यह बड़ी लड़की है। सुनीता सुन्दरी अति भली है। करुणाकी वाणी भोली है।

उपर्युक्त वाक्योंमें बड़ी, भली, भोली विशेषण हैं। ये क्रमश: बड़ा, भला, भोला शब्दोंसे स्त्रीलिङ्ग बने हैं।

(८) जब विशेष्यमें विभक्ति लगी रहे तो आकारान्त विशेषणमें ए हो जाता है। यथा—

काले घोड़ेको लाओ। ऊंचे मनुष्यसे मिलो। उस पीले मकानको देखो।

ऊपरके वाक्योंमें विशेष्यमें विभक्ति लगी है।

(९) सम्मान-सवनाम ('मैं' के लिए हम) सम्राट्, गवर्नर जेनरल, गवर्नर, सम्पादक, राष्ट्रपति, सभापति, प्रधान मन्त्री, ग्रन्थकार, आदि अपनेको 'मैं' के बदले 'हम' लिखते हैं। परन्तु, जब वे व्यक्तिगत रूपसे किसी मित्रको पत्र लिखते हैं तो 'मैं' को 'मैं' ही लिखते हैं। यथा—

हम इस प्रस्तावका समर्थन करते हैं ('मैं' के लिए हम) प्रिय मित्र सुरेश मैंने कल आपका पत्र पाया ('मैं' के लिए मैं)

(१०) श्रीमान्, आप, श्रीमती—जब किसी बड़े पुरुषके साथ पत्र व्यवहार या बात की जाती है तो श्रीमान, 'आप' का प्रयोग होता है। जब किसी उच्च महिलाके साथ बात की जाती है तो 'श्रीमती' आपका प्रयोग होता है यदि सेवक अपनी महिला-स्वामिनीसे बात करे तो स्वामिनि! का प्रयोग करे। यथा—

हे नेपाल नरेश महोदय! श्रीमानकी यह आज्ञा थी।

हे सम्पादकप्रवर! आपने ऐसा कहा था।

हे प्रान्तपे! (सरोजिनी नायडू!) श्रीमतीजीकी आज्ञासे

(११) तू के लिए तुम—वर्तमान समयमें प्राय' 'तू' के बदले तुम कहा जाता है 'तू' अति,लघुतामें तथा अति प्रेममें प्रयोग किया जाता है। यथा—

पिताने कहा— ऐ पुत्र! तुम जाओ।

स्वामीने कहा—ओ सेवक! तू कहां था?

माताने कहा— हे प्रिये, सुशीले, तू कब आयी?

(१२) सम्बन्ध और सम्बन्धी—सम्बन्धकारकमें विभक्ति

सम्बन्धीके अनुसार होती है यदि कई सम्बन्धी हों तो प्रथम सम्बन्धीके अनुसार होती है। यथा—

रामकी गाय दूध देती है। सीताकी घोड़ी, गौ और घोड़े चरते हैं

(१३) द्विकर्मक क्रियामें मुख्यकर्म क्रियाके ठीक पहले रहते हैं तथा गौणकर्म मुख्यकर्मके पहले रहते हैं। यथा—

गुरु छात्रोंको उपदेश देता है। लक्ष्मी विष्णुको मणि देती हैं।

इन वाक्योंमें 'देता है' देती हैं' द्विकर्मक क्रियाएं हैं। इनके ठीक पहले मुख्य कर्म आये हैं—'उपदेश' और 'मणि'। 'छात्रों को' 'विष्णुको' गौण कर्म हैं। अत मुख्यकर्मके पहले आये हैं।

(१४) जब कर्मपदपर जोर दिया जाता है तो उसे कर्त्ताके पहले रखते हैं। यथा—

उसीको मैं जानता था। तुम्हींको मैंने देखा।

इन वाक्योंमें "उसीको" "तुम्हींको" जोर देनेवाले कर्म हैं। अत कर्त्ताके पूर्व आये हैं।

(१५) करणकारक पद कर्म अथवा क्रियाके पूर्व धर जाते हैं। यथा-

रामने वाणसे वालीको मारा। कृष्णने कसके हाथीको घूंसोंसे मारा।

इन वाक्योंमें करण पद 'वाणसे' 'घूंसोंसे' कर्म और क्रिया के पूर्व आये हैं।

(१६) सम्प्रदानकारक प्राय कर्मके पूर्व आते हैं। यथा—

विप्रोंको दक्षिणा दीजिये। गौके लिए अच्छी घास लायें।

उपर्युक्त वाक्यों में 'विप्रोंको' 'गौके लिए' सम्प्रदानकारक हैं।

(१७) अपादानकारक कर्त्ताके पश्चात् तथा पहले दोनों प्रकारसे आते हैं। यथा—

पेड़ोंसे पत्तियां झरती हैं। नदियां पर्वतोंसे निकलती हैं

इन वाक्योंमें 'पेड़ोंसे' 'पर्वतोंसे' अपादानकारक हैं।

(१८) प्राय नाम निर्देश करनेपर अपादान, कर्त्ताके पश्चात् आता है। यथा—

गङ्गा गङ्गोत्रीसे और यमुना यमुनोत्रीसे निकली हैं।

इन वाक्योंमें 'गङ्गोत्रीसे' 'यमुनोत्रीसे' अपादानकारक हैं।

(१९) जब दो अपादान एक वाक्यमें रहें तो पहले अपादानमें विभक्ति विकल्पसे रहती है। यथा—

गङ्गा गङ्गोत्री और यमुना यमुनोत्रीसे निकली हैं।

इस वाक्यमें पहले अपादान 'गङ्गोत्रीमें' अपादान विभक्ति "से" लुप्त है। यहां 'गङ्गोत्रीसे' भी कहा जा सकता है।

(२०) सम्बन्धकारक सम्बन्धी पदके ठीक पहले रहता है। यथा—

सीताकी रसोई नामक स्थान है। विन्ध्याचलकी रम्य शिलाओंकी छटाएं मनोहर हैं। चन्द्रकी शीतल किरणें। विद्याकी अभिवृद्धि होगी। रामका घोड़ा है। भरतके वृक्ष कहें।

उपर्युक्त स्थलोंमें 'सीताकी' 'विन्ध्याचलकी' 'शिलाओंकी' 'चन्द्रकी' 'विद्याकी' 'रामका' 'भरतके' शब्दोंमें सम्बन्ध कारक विभक्ति हैं और ये पद 'रसोई' 'रम्य' 'छटाएं' 'शीतल' 'अभिवृद्धि' 'वृक्ष' आदि अपने सम्बन्धि-पदोंके ठीक पहले आये हैं।

(२१) जब सम्बन्धमें दृढ़ता, प्रश्न अथवा निषेध सूचित करना होता है तब सम्बन्ध-कारकके पूर्व सम्बन्धी पद धरे जाते हैं। यथा—

यह घड़ी हमारी है। क्या यह पुस्तक उसकी है। यह लेखनी आपकी नहीं है।

इन वाक्योंमें सम्बन्धी पद 'घड़ी' 'पुस्तक' 'लेखनी' पद अपने सम्बन्धकारक 'हमारी' 'उसकी' आपकी' के पूर्व आये हैं।

(२२) अधिकरणकारक कर्ताके पश्चात् तथा पूर्व दोनों प्रकारसे आते हैं एवं यदि एक साथ कई अधिकरण हों तो समयवाची अधिकरण दूसरे अधिकरणोंसे प्रायः पहले रक्खा जाता है। यथा—

विश्वमें असंख्य तारोंके प्रकाश अभीतक नहीं आये हैं। बसन्तमें पेड़ोंमें आम बौरे हैं। राजा प्रासादमें स्थित हैं।

इन वाक्योंमें 'विश्वमें' 'बसन्तमें', 'पेड़ोंमें', 'प्रासादमें' पद

अधिकरण कारक हैं। वसन्तमें अथात् 'वसन्त ऋतुमें' पद समयवाची है। अत' यहां अधिकरण 'पेड़ों' के पहले आया है। ऋतुवाची शब्द कभी-कभी ऐसे व्यवहृत होते हैं। यथा—

वसन्त ऋतुमें अथवा वसन्तमें } प्रभृति
ग्रीष्म ,, , ग्रीष्ममें

(२३) क्रियाविशेषण और गुणवाचकविशेषण पद यथाक्रम क्रियाके पहले तथा संज्ञाके पूर्व आते हैं। यथा—

बुद्धिमतीदेवी राजनीति शास्त्र अधिक जानती हैं। पापी मनुष्य भीरु रहते हैं। खेलवाड़ी छात्र कम पढ़ते हैं।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'अधिक' क्रिया विशेषण है। पापी, खेलवाड़ी गुणवाचक-विशेषण हैं।

(२४) विशेषणकी प्रधानता देनेपर अथवा विधेय विशेषण होनेपर विशेषण विशेष्यके पश्चात् आता है। यथा—

राजा दिलीप गोसेवी थे। यह कुमारी नवीना है।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'गोसेवी' 'नवीना' क्रमसे विशेषण प्राधान्य और विधेय विशेषण होकर आये हैं। अत विशेष्यके पश्चात् रखे गये हैं।

(२५) जब पूरा वाक्य प्रश्नवाची हो तो, सर्वनाम वाक्यके शुरूमें आता है। जब साधारण प्रश्न हो तो प्रश्नवाची सर्वनाम उस शब्दके ठीक पहले रहता है जिसके विषयमें कुछ पूछा जाता है। यथा—

क्या यह घड़ी आपकी है ? कौन शम्भुनाथ यहांपर हैं ?

उपर्युक्त वाक्योंमें 'क्या' 'कौन' प्रश्नवाची सर्वनाम हैं। तथा क्रमसे 'यह' 'शम्भुनाथके' पूर्व आये हैं।

(२६) कर्तृप्रधान वाक्यमें कर्ताके लिङ्ग, पुरुष और वचनके अनुसार ही क्रिया होती है। यथा—

राम आता है। सीता जाती है।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'राम जाती है और सीता आता है' नहीं हो सकता।

(२७) अकर्मक क्रियामें कर्ताके आगे 'ने' नहीं आता है। यथा—
मैं सोता था। वह जागता है। वे सजायेंगे।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'सोता है' 'जागता' है, 'सजायेंगे' अकर्मक क्रियाएं हैं।

(२८) सकर्मक क्रियामें—सामान्यभूत, सन्दिग्धभूत, और पूर्णभूत, पदोंमें कर्त्ताके आगे 'ने' चिह्न लगता है। यथा—

उसने पढ़ा। उसने पढ़ा होगा। हमने खाया है। उसने गाया था।

उपर्युक्त वाक्योंमें पढ़ा, पढ़ा होगा, खाया है, गाया था सकर्मक क्रियाएं हैं। अत' इनके पूर्व कर्त्तामें 'ने' आ गया है।

(२९) अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्‌भूतमें 'ने' कर्त्ताके साथ नहीं आता है। यथा—

मैं खा रहा था। अगर मैं खाता तो मर जाता।

उपर्युक्त दोनों वाक्योंमें कर्त्ता 'मैं' है। अत' दोनोंमें 'ने' नहीं लगा है।

(३०) *भावप्रधान क्रिया सदा पुंल्लिङ्ग एकवचन अन्य पुरुषवाची* होती है। उसका कर्त्ता भले ही दूसरे लिङ्गवचन और पुरुषका हो। भावप्रधान अकर्मक क्रियाका स्वरूप कर्मवाच्यके सदृश होता है तथा उसके कर्त्ताके आगे "से" का चिह्न रहता है। यथा—

उनसे वहां जाया नहीं जाता। मुझसे खाना नहीं खाया जाता।

उपर्युक्त वाक्योंमें क्रिया पुंल्लिङ्ग अन्य पुरुषकी तथा एकवचन है।

(३१) वर्त्तमान और भविष्यत् कालोंमें सकर्मक अकर्मक दोनों क्रियाओंके आगे 'ने' 'चिह्न' नहीं रहते हैं। यथा—

चन्द्र उगता है। * तारा खाती है। विद्या पढ़ती है।

उपर्युक्त वाक्योंमें 'उगता है' 'खाती है' 'पढ़ती है क्रियाएं' अकर्मक और सकर्मक हैं। परन्तु, कर्त्ताके आगे 'ने' नहीं है।

(३२) *जब वाक्यमें कर्मकी विभक्ति 'को' नहीं रहती तथा कर्त्तामें 'ने' नहीं रहता तो कर्त्ताके अनुसार क्रिया होती है। यथा—*

मैं घोड़ा खरीदता हूं। आप बिजली लाते हैं। शोभा कोयल बेचता है। बीबी हिरण चराता है।

---

* *हिन्दीमें 'तारा' शब्द पुंल्लिङ्ग माना जाता है। परन्तु, इस जगह तारा स्त्रीका नाम होनेसे स्त्रीलिङ्ग है।*

उपर्युक्त वाक्योंमें घोड़ा, बिल्ली, कोयल, हिरण, कर्म हैं। परन्तु, विभक्ति 'को' इनके साथ नहीं है तथा कर्त्ताओंके साथ 'ने' भी नहीं है। अतः क्रियायें कर्त्ताके लिङ्गानुसार हुई हैं।

(३३) जब वाक्यमें-कर्त्तामें 'ने' रहे परन्तु, कर्ममें 'को' न रहे तो क्रिया कर्मके अनुसार होगी। यथा—

उन्होंने चूड़ियां खरीदीं। चाचाजीने बर्फी बनायी। तुमने भांग पी। मैंने रस पिया।

उपर्युक्त वाक्यमें कर्म चिह्न 'को' नहीं है परन्तु कर्त्तामें 'ने' है। अतः कर्मानुसार क्रियाएं 'खरीदीं' 'बनायी', 'पी', 'पिया' आदि हुई।

(३४) जब वाक्योंमें—कर्त्ताकी 'ने' विभक्ति और कर्मकी "को" विभक्ति दोनों रहती हैं तो क्रिया पुंल्लिङ्ग, एकवचन तथा अन्य पुरुषकी होती है। भले ही उसका कर्त्ता भिन्न लिङ्गवचन और पुरुषवाला हो। यथा—

रुक्मिणीने कृष्णको दिया। दुर्योधनने पाण्डवोंको निकाला।

उपर्युक्त वाक्योंमें कर्त्तामें 'ने' और कर्ममें 'को' है। अतः क्रियाएं पुंल्लिङ्ग एकवचन अन्य पुरुषकी हैं।

(३५) जब वाक्यमें दो कर्म होते हैं और दूसरे कर्ममें विभक्ति 'को' नहीं रहती तथा पहला कर्म अधिकरण सा प्रतीत होता है तो कर्मानुसार क्रिया होती है। यथा—

राधाने कृष्णको फूल चढ़ाये।

उपर्युक्त वाक्यमें 'कृष्णके ऊपर फूल चढ़ाये' अर्थ लगता है। यहां-पर फूल कर्म है तथा कृष्ण भी कर्म है किन्तु फूलमें 'को' नहीं है और कृष्णमें 'को' है। अतः कर्मानुसार विभक्ति हुई है।

(३६) जब भिन्न भिन्न लिङ्ग वचनोंके अनेक कर्त्ता एक वाक्यमें हों और उनमें समुच्चयवाची कर्त्ता न हों तो क्रिया अन्तिम कर्त्ताके अनुसार होती है। यथा—

नदीमें हाथी, घोड़े बकरियां ऊंट नहाते हैं।

इस वाक्यमें अन्तमें 'ऊंट' है। अतः पुंल्लिङ्ग बहुवचन किया हुई। परन्तु, "शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं" ऐसा प्रयोग आता है- तो ऐसे स्थलोंपर यह नियम जानना चाहिये कि, जब कई 'ने' विभक्ति रहित कर्ता हों तथा 'और' अव्ययसे वे कर्ता परस्पर जुड़े हुए हों तो क्रिया पुंल्लिङ्ग बहुवचनकी होती है।

(३७) जब भिन्न-भिन्न वचनोंके अनेक कर्ता हों और अन्तमें समुच्चयवाची कर्ता हो तो क्रिया पुंल्लिङ्ग बहुवचनकी होती है। यथा—

इस मासमें चाकू सिलेटें नहीं बिकती हैं।

उपरिस्थलमें 'बिकती हैं' क्रिया सिलेटें की लिङ्गके अनुसार आयी है।

(३८) जब उत्तम, मध्यम, अन्यपुरुषके कर्ता एक क्रियापर निर्भर रहते हैं तो क्रिया उत्तम पुरुषगामिनी होती है। यथा—

वह, तुम और मैं चलूंगी। तुम वे और हम पढ़ेंगे। श्याम, गोविन्द, तुम और मैं सुनूंगा।

उपर्युक्त वाक्योंमें क्रियायें उत्तम पुरुषके अनुसार 'चलूंगी' 'पढ़ेंगे' 'सुनूंगा' आयी हैं। ऐसे वाक्य बनाते समय उत्तम पुरुष अन्तमें रखना चाहिये।

(३९) जब एक वाक्यमें उत्तम-मध्यम और अन्य पुरुष तीनों न रहें दो ही रहें। उत्तम मध्यम पुरुष अथवा मध्यम-अन्य पुरुष या उत्तम अन्य पुरुष रहें तो क्रिया अन्तिम कर्ताके अनुसार होती है। यथा—

तुम और मैं चला। वह और तुम चले। हम और वह चला। वे और मैं चला। तू और वे चलीं। आप और वे चले।

(४०) जब विधेय संज्ञा होती है तो क्रिया बहुवचन होती है। यथा—

ईंट, पत्थर, चूना पार्थिव पदार्थ जाते हैं।

(४१) जब रुपया, पैसा, आना आदि बहुवचन होते हैं तो रुपये, पैसे, आने होते हैं तथा क्रिया अन्तिम कर्तानुसार होती है। यथा—

इस घड़ेका दाम दस पैसे हैं। यह सुग्गा ५) रुपये का है।

सने दस रुपये उधार लिये। वह सवा रुपये मांगती थी। उसके
स पौने दो रुपये डेढ़ आने दो पैसे बचे थे।

उपर्युक्त वाक्योंमें क्रियाएं अन्तिम कर्त्ताके अनुसार हैं।

(४२) संज्ञा और सर्वनाम—जिस संज्ञाके बदलेमें जो सर्वनाम
ाता है वह उसी संज्ञाके लिङ्ग वचन पुरुषानुसार होता है। यथा—

श्यामने कहा—मैं जाता हूं।

इस वाक्यमें संज्ञानुसार सर्वनाम 'मैं' है।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्योंमें पदोंको ठीकसे तथा शुद्ध करके रखो:—

चन्द्रशेखरशास्त्री ब्राह्मण हैं सनाढ्य कानपुर के। सभापति उपाध्याय
ध्याय हैं विरला संस्कृत विद्यालय के। भट्टमथुरानाथ लिखते कवि हैं संस्कृत के।
ाखती थी गेहूं। चन्द्रमा लटके आकाशमें हैं। लखनऊमें नामका चारबाग
टेशन है। रेलगाड़ी ठहरी थी मिरजापुरसे प्रयागमें। हिरनके चामके
े हैं। घोड़े घास नहीं खाते हैं। मैं चलूँगा पैदल कलकत्तेको। वे बम्बई
ठहरे थे धर्मशाला में। तानी आलुन अच्छा लगता है। वे परिश्रमी पुरुष
िश्रम नहीं थे करते। उस गांव में बच्चे बालिकाएं, नर, नारियां बूढ़े-पुराने,
च्छे-बुरे रहता है। वे तुम और मैं चलेंगे। तुम, मैं और हम चला। गंगामें
र बकरी पानी पीता है। मैदानमें घोड़े बैल बकरियाँ दौड़ते हैं। ऊँचा पर्वत
र सकता है। प्रसन्नराघव नाटक बनाया है जयदेवका। सोमनाथका
न्दिर बना था अच्छा। उन्होंने लायी दस पूरियां। कुमारी शीलाने चिट्ठियां
ा। ईश्वरशक्ति अपरिमित है। उनके राज्यमें कोई न रहता थे। पढ़ाई
ी होती तो वह भूखों मरते ठोकते। कलकत्ता दूर है दिल्लीसे अधिक। वे
ाग नहीं गया। मैंने खाया होऊंगा। उन्होंने दिये होते तो वे न गये होते।

पाठ-३७

वाक्यभेद

वाक्यमें कर्त्ता और क्रिया प्रधान अंग होते हैं शेष कारक इन्हींके अधीनस्थ होकर वाक्यमें रहते हैं।

जिस वाक्यमें एक उद्देश्य या कर्त्ता और एक विधेय या क्रिया रहे उसे वाक्य कहा जाता है। वाक्य तीन प्रकारके होते हैं। (१) सरल वाक्य। (२) मिश्र वाक्य। (३) संयुक्त वाक्य।

सरलवाक्य—

कर्त्ता और क्रियाके योगसे जो वाक्य बनता है वह सरल वाक्य कहा जाता है। यथा—

मनुष्य जाता है। स्त्री आती है। कौआ बोलता था। गौ चरती थी। हाथी दौड़ेगा। मोती चमकेगा।

उपर्युक्त प्रति वाक्यमें एक कर्त्ता और एक क्रिया है।

मिश्रवाक्य—

मिश्र वाक्यका अर्थ है मिले हुए वाक्य। अतः जब दो वाक्य प्रधान और अप्रधान वाक्य परस्पर मिलते हैं तो मिश्र वाक्य बनते हैं। यथा—

तिब्बत वासियोंका कथन है कि, ईश्वर प्रथम यहीं पर (तिब्बतमें) आविर्भूत हुआ। मुझे निश्चय है कि, वे आये थे।

श्यामाप्रसाद मुखर्जीने कहा कि प्रत्येक कुलपतिको अपने कर्त्तव्योंका ध्यान रखना चाहिये।

ऊपरके वाक्योंमें "कि" के लगानेसे दो वाक्योंका परस्पर सम्बन्ध हुआ है। इन वाक्योंमें जो वाक्य प्रथम आये हैं वे अप्रधान हैं। तथा जो पश्चात् आये हैं वे प्रधान हैं। क्योंकि यदि दूसरे वाक्यको न कहा जाय तो प्रथम वाक्यका अर्थ अपूर्ण रह जाता है। अतः द्वितीय वाक्यके आश्रित प्रथम वाक्य हैं। यथा—

तिब्बत वासियोंने कहा—(अप्रधान वाक्य) (कि) ईश्वर प्रथम तिब्बतमें आविर्भूत हुआ (प्रधान वाक्य)

अप्रधान वाक्य प्रधानके सदा अधीन रहता है। प्रधान वाक्य अपना अर्थ स्वयं प्रकाशित करनेकी क्षमता रखता है। परन्तु, अप्रधान वाक्य प्रधान वाक्यके बिना अर्थान्वित नहीं होता है।

संयुक्त वाक्य

जब दो अथवा दो से अधिक सरलवाक्य या मिश्रवाक्य परस्पर मिलते हैं तो संयुक्त वाक्य कहे जाते हैं। अर्थात्—जब दो या दो से अधिक सरलवाक्य परस्पर मिलें तो संयुक्त वाक्य होते हैं और जब दो या दो से अधिक मिश्र वाक्य परस्पर मिलें तो संयुक्त वाक्य होते हैं एवं जब दो या दो से अधिक सरल और मिश्र दोनों मिलते हैं तो भी संयुक्त वाक्य होते हैं। यथा—

रामा कविता करती थी और सीता सींती थी। धूप हुई और गरमी लगने लगी तो, वे लोग चले गये।

उपर्युक्त वाक्योंमें प्रथम वाक्य 'और' से दूसरा वाक्य संयोजित है। अत ये वाक्य संयुक्त वाक्य हैं। ध्यान रखो मिश्र वाक्यमें दोनों वाक्य प्रधान नहीं होते परन्तु, संयुक्त वाक्य दोनों प्रधान होते हैं— एकपर एक या दूसरा आश्रित नहीं होता है। यथा—

रामा कविता करती थी (प्रधान वाक्य) और सीता सीती थी (प्रधान वाक्य)

[संयुक्त वाक्यमें केवल 'और' 'परन्तु' आदिसे दो वाक्य जोड़ दिये जाते हैं। मिश्रमें ऐसा नहीं होता। संयुक्तवाक्य स्वतन्त्र रहते हैं। परन्तु, मिश्र परतन्त्र रहते हैं।]

प्रश्न

(१) वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(२) संयुक्त और मिश्र वाक्यके भेद बताकर सरल वाक्यका उदाहरण दो।

(२) निम्नोकित वाक्योंमें बताओ कौन-कौन वाक्य किसमें मिश्रित हो सकते हैं ।

करुणा भली लड़की है किन्तु श्यामा निठुर है । चन्द्रिका गाती थी और सीता सोती थी । चन्द्रमा उदय हुआ और सूरज छिप गये थे । जब तुम्हारा बाबू आये तब तुम आ जाना । जो पुस्तक तुमने खरीदी थी वह महगी है । कृपाकर आधी रातमें न आइयेगा । शयनागारका प्रबन्ध मेरे हाथमें न था ।

पाठ—१८

वाक्यान्तरीकरण

वाक्योंके परस्पर परिवर्तनको वाक्यान्तरीकरण कहते हैं । जब सरल वाक्यसे मिश्र वाक्य बनाया जाता है तो सरल वाक्यके आन्तरिक पदको या पदोंको अधीन वाक्य बना दिया जाता है । *यथा—*

सरल वाक्यसे मिश्र वाक्य

विद्वान् पुरुष ज्ञानी होते हैं । (सरलवाक्य)
जो विद्वान् पुरुष हैं वे ज्ञानी होते हैं । (मिश्रवाक्य)
कण्टकाकीर्ण मार्ग कष्टप्रद होते हैं । (सरलवाक्य)
जो कण्टकाकीर्ण मार्ग हैं वे कष्टप्रद हैं । (*मिश्रवाक्य*)

मिश्रवाक्यसे सरलवाक्य

जब मिश्रवाक्यसे सरलवाक्य बनाया जाता है तो अधीन वाक्यको तोड़कर एक कर देते हैं । यथा—

जो पुरुष ज्ञानी हैं वे विद्वान् तथा धनवान् होते हैं—(मिश्रवाक्य)
विद्वान् तथा धनवान् पुरुष ज्ञानी होते हैं—(सरलवाक्य)
जब धन होता है तब दम्भ होता है—(मिश्रवाक्य)
धन होनेपर दम्भ होता है—(सरलवाक्य ।)

सरलवाक्यसे संयुक्तवाक्य

और, तथा, एवं, वा, इसलिए प्रभृति संयोजक अव्यय लगाकर

सरल वाक्यको दो पूर्ण वाक्योंमें बाट देना ही सरल वाक्यसे संयुक्त-वाक्य बनाना जानना चाहिये । यथा—

राम उद्यान जाकर टहलने लगा—(सरलवाक्य)
राम उद्यान गया तथा टहलने लगा—(संयुक्तवाक्य)
सीताके वन जानेके कारण कौशल्यादि दुःखी रहती थीं-(सरलवाक्य)
सीता वन गयी थी बस कौशल्यादि दुःखी रहती थीं-(संयुक्तवाक्य)

संयुक्तवाक्यसे सरलवाक्य

जब संयुक्तवाक्योंको सरलवाक्योंमें परिवर्तित करना पड़ता है तो संयुक्तवाक्योंके स्वाधीन वाक्योंके एक पदको छोड़कर दूसरे पदोंमें परिवर्तन किया जाता है और समापिका क्रियाको पूर्वकालिक क्रियामें बदल देते हैं । यथा—

अंगद आया और चला गया—(संयुक्तवाक्य)
अंगद आकर चला गया—(सरलवाक्य)
अध्यापक आये और पढ़ाई होने लगी—(संयुक्तवाक्य)
अध्यापकोंके आनेपर पढ़ाई होने लगी—(सरलवाक्य)

संयुक्तवाक्यसे मिश्रवाक्य

जब संयुक्तवाक्यको मिश्रवाक्य बनाना होता है तो संयुक्तवाक्यके अन्तर्गत एक स्वाधीन वाक्यको छोड़कर सब वाक्योंको अधीनस्थ वाक्य कर देना चाहिये और अधीनता सूचक शब्द-जो यद्यपि, सो, तथापि, जब, तब, इनमें जोड़ देना चाहिये । यथा—

वह विद्वान है परन्तु, उसमें जरा भी अहंकार नहीं है-(संयुक्तवाक्य)
यद्यपि वह विद्वान है तथापि उसम जरा भी अहंकार नहीं है—
(मिश्रवाक्य)

वह आवे और मैं जाऊ—(संयुक्तवाक्य)
वह आवे तो मैं जाऊ—(मिश्रवाक्य)

मिश्रवाक्यसे संयुक्त वाक्य

जब मिश्रवाक्यको संयुक्त वाक्य बनाना हो तो मिश्रवाक्यके

अन्तर्गत अप्रधान वाक्यको प्रधान वाक्य बना देना चाहिये और उनके बीचमें संयोजक या वियोजक अव्यय लगा देना चाहिये। यथा—

जो गृह मैंने खरीदा है वह कल्याणप्रद है—(मिश्रवाक्य)
मैंने एक गृह खरीदा है वह कल्याणप्रद है—(संयुक्तवाक्य)
यद्यपि वह भक्त है तथापि दुःखी है—(मिश्रवाक्य)
वह भक्त है, परन्तु दुःखी है—(संयुक्तवाक्य)

प्रश्न

(१) सरल वाक्य से मिश्रवाक्य तथा मिश्रवाक्यसे संयुक्त वाक्य कैसे बनते हैं दो उदाहरण दो।

(२) निम्नांकित सरल वाक्योंको मिश्र वाक्योंमें तथा मिश्र वाक्योंको संयुक्त वाक्योंमें परिवर्तित करो—

विद्वानोंकी महिमा होती है। बुद्धिमान् धनी हो जाते हैं। वृद्धावस्था आनेपर भी उन्हें बचपन समाया है। भयङ्कर जन्तु भी शीघ्र वशीभूत होते हैं। जब वह आवे तब तुम जाओ। यद्यपि आप अवस्थामें छोटे हैं तथापि विद्यामें बड़े हैं। अगर आप देश सेवा करें तो बड़ी दया होगी। उसके जानेपर तुम आना। जब द्रौपदी रोवे तब तुम पानी देना। यदि वह आयगा तो मैं न आऊँगा। यद्यपि वे धनी हैं तथापि शठ हैं। कलकत्ता यहाँसे चार सौ मील है। लन्दनमें रहनेका मुझे शुभवसर नहीं प्राप्त हुआ। बदरीनाथ-केदारनाथ हिमालयमें हैं। रामेश्वर धाम दक्षिणमें हैं।

पाठ-३९

वृत्तप्रकरण

वृत्तका दूसरा नाम छन्द है। संस्कृतमें इसका अति प्रथम ग्रन्थ 'पिङ्गलसूत्र' है। पिङ्गलसूत्र के पश्चात् 'छन्दोमञ्जरी' 'वृत्तरत्नाकर' नामक छन्दोंके लक्षण ग्रन्थ संस्कृतमें बने। तब ब्रजभाषामें पश्चात् हिन्दी खड़ी बोलीमें छन्दोंके लक्षण ग्रन्थ बने हैं। सम्प्रति, भानुचरण आर्यकृत 'छन्द प्रभाकर' अति हितकर ग्रन्थ, छन्दोंके लक्षणोंका, खड़ी बोलीमें है।

यह व्याकरणकी पुस्तक है और व्याकरणका भी कुछ न कुछ सम्बन्ध छन्दोंसे अवश्य है। अब यहां बालकोपयोगी कुछ वृत्तोंको बता देना आवश्यक है। जिससे बालकगण साधारणरूपेण वृत्तोंका ज्ञान प्राप्तकर पद्य रचनेका प्रयास कभी-कभी करें।

इस प्रकरणमें अनुष्टुप, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित, वसन्ततिलका, चौपाई, दोहा, सोरठा, सवैया, कवित्त आदिका निर्देश किया गया है। अधिक छन्दोंके ज्ञानके लिए छात्रोंको ऊपर लिखी पुस्तकें पढ़नी चाहिये।

*"स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घा॥"

वृत्त—प्राय प्रत्येक वृत्तमें चार पद (चरण) होते हैं।

वृत्तभेद—वृत्तके दो भेद होते हैं—मात्रावृत्त और वर्णवृत्त। मात्रावृत्तमें मात्राएं गिनी जाती हैं और वर्णवृत्तमें अक्षर गिने जाते हैं।

मात्राओंका परिगणन—मात्राएं दो प्रकारकी होती हैं लघु और दीर्घ। एक मात्रा लघु कहलाती है दो मात्राएं दीर्घ कही जाती हैं। यथा अ (लघु, एकमात्रा) आ (दीर्घ, दो मात्राओंवाला) कहा जाता है।

संयुक्त अक्षरके पूर्वका अक्षर दीर्घ होता है। यथा—

'कलिङ्ग' में' लि' दीर्घ है। परन्तु, संयुक्त अक्षर लघु माना जाता है। अर्थात्—"कलिङ्ग" में 'ङ्ग' लघु है। अनुस्वार और विसर्ग युक्त अक्षर दीर्घ माने जाते हैं। यथा—कंठ बाघ प्रभृतिमें यथाक्रम-'कं' और 'घ' दीर्घ हैं।

अ, इ, उ, ऋ, लृ, (लघु हैं)
आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ अं, अः (दीर्घ हैं)

प्रति वृत्तमें चार चरण (पाद) होते हैं। पादके अन्तवाला लघु कभी गुरु (दीर्घ) होता है, कभी लघु होता है। अर्थात्-कविगण अपने अभि-

* ऐसे श्लोकको (पद्यको) या दोहा-चौपाई आदिको वृत्त कहा जाता है।

आपके अनुसार उसे दीर्घ या लघु कर सकते हैं—जैसा करनेसे पवरा कार्य सम्पन्न हो।

(I) ऐसा चिह्न लघुका होता है।

(S) ऐसा ,, गुरु ,, ,, ।

प्राय: आजकल प्रथम और तृतीय चरणपर कविगण (,) कामा (लघुविराम) का चिह्न दे देते हैं।

चरण—जहांपर थोड़ा विराम होता है वहांतक प्राय: एक चरण होता है।

प्रश्न

(१) वृत्तके कितने भेद होते हैं?

(२) गुरु और लघुके चिह्न बताओ

(३) वृत्तमें कितने चरण होते हैं

(४) चरण किसे कहते हैं?

पाठ—४०

गणविचार

वर्णवृत्तोंमें गणोंका विचार किया जाता है वे गण ८ प्रकारके होते हैं। नगण, मगण, यगण, भगण, रगण, जगण, सगण, तगण। प्रति गणमें तीन अक्षर होते हैं। साधारणत: प्रति गणमें तीन अक्षर होते हैं। तीनों लघु (ह्रस्व) अक्षरोंका नगण होता है। तीनों गुरु (दीर्घ) अक्षरोंका मगण होता है। पहला अक्षर लघु और शेष गुरु हों तो यगण। पहला अक्षर गुरु हो शेष लघु हों तो भगण। बीचका अक्षर लघु हो तो रगण। बीचका अक्षर गुरु हो तो जगण। अन्तका अक्षर लघु हो तो तगण। अन्तका अक्षर गुरु हो तो सगण।

इन आठों गणोंमें चार गणोंको कविगण शुभ तथा चार गणोंको अशुभ बताते हैं—अर्थात्—नगण, मगण, यगण भगण शुभ हैं रगण, जगण, तगण, सगण अशुभ हैं।

प्राचीन कविगण शुभ गणोंसे अपनी कविताएं प्रारम्भ करते थे। अशुभ गण वृत्तोंके बीचमें भले ही आवें पर कवितामें सर्वप्रथम न आवें यही उनका ध्येय था। कालिदास, भारवि, माघ आदि कवियोंकी कविताएं इसी रीतिसे प्रारम्भित हैं। यथा—

"वागर्थाविव संपृक्तौ" (कालिदास)

ऊपरके वृत्त-वाक्यमें सर्वप्रथम मगण है।

गणपरिचय चित्र और देवता-फल

गण	आकृति	देवता	फल	
नगण	।।।	सर्प	सुख	शुभ
मगण	SSS	भूमि	कल्याण	
यगण	।SS	जल	समृद्धि	
भगण	S।।	चन्द्रमा	यश	
रगण	S।S	अग्नि	मरण	अशुभ
जगण	।S।	आदित्य	रोग	
तगण	SS।	आकाश	शून्य	
सगण	।।S	पवन	भ्रमण	

प्रश्न

(१) गण कितने होते हैं?

(२) मगणका रूप बताओ?

(३) मगणके देवताका नाम क्या है?

(४) कविगण किन-किन गणोंको शुभ मानते हैं?

पाठ-४१

वृत्तविवेचन

वृत्तविवेचन—वृत्त तीन प्रकारके होते हैं—

समवृत्त, विषमवृत्त, अर्धसमवृत्त। प्राय: हिन्दीमें विषमवृत्तका प्रयोग नहीं होता है।

समवृत्त—जिसके चारों पद समान हों तथा प्रति पदकी मात्राएं भी समान हों उसे समवृत्त कहते हैं। यथा—

[समवृत्त – चौपाई-प्रतिपदमें १६ मात्राएं]

गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी, सुनि मन मुदित करिय भल जानी।
उचित कि अनुचित किये विचारू, धरम जाइ सिर पातक भारू॥

विषमवृत्त—जिसके चारों पद समान न होवें वह विषमवृत्त कहलाता है। यथा—

[विषमवृत्त-चारों चरण असमान]

विष्णु चित्त धरते नहीं, कभी राग आनन्दको।
काम-क्रोध-मोह-क्षोभ, सब मिश्रभावमें यहां॥

अर्द्धसमवृत्त—जिसके दो चरण समान हो उसे अर्द्धसमवृत्त कहते हैं। यथा—

[अर्द्धसमवृत्त-दोहा-१३ + ११ + १३ + ११ मात्राएं]

प्राननाथ देवर सहित, कुशल कोशला आइ।
पूजिहिं सब मन कामना, सुजस रहहि जग छाइ॥

और भी—

[अर्द्धसमवृत्त *सोरठा-११ + १३ + ११ + १३ मात्राएं]

---

* दोहेको उलट देनेसे सोरठा बन जाता है।

भरत कमल कर जोरि, धीर धुरन्धर धीर धरि।
वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं॥

द्रष्टव्य—

(१) पद्य रचनामें गद्य रचनाकी रीतिसे वाक्य-विन्यासके कोई नियम नहीं रहते। पद्योंमें कर्त्ता, कर्म क्रिया आदि आगे पीछे चाहें जहां आ सकते हैं। पद्य पढ़ने-सुननेमें मधुर हों इसीका ध्यान रखा जाना चाहिये। जहांतक होता है कविगण कर्त्ता आदि ठीक-ठीक रखते हैं। परन्तु, उलट-पुलटकर रखनेमें दोष नहीं है। किन्तु पूरामें जरा भी त्रुटि न होनी चाहिये।

(२) पद्यमें, अक्षरोंको ह्रस्व-दीर्घ तथा शुद्धाशुद्ध भी लिखते हैं। यथा—

न को ण, श को स, क्ष को छ तथा ई को इ इत्यादि।

प्रश्न

(१) वृत्त कितने प्रकारके होते हैं ?
(२) अर्द्धसम वृत्त किसे कहते हैं ?
(३) चौपाई अर्द्ध समवृत्त है या समवृत्त ?

पाठ-४२

कुछ पद्य

[हरिगीतिका—(अर्धसमवृत्त) १६ + १२ = २८ मात्रा]

अभिनय कलाके सूत्रधर भी, आदिसे ही मान्य हैं।
प्रकटे भरतमुनिसे यदा, इस शास्त्रके आचार्य हैं॥

संसारमें अब भी हमारी, है अपूर्व शकुन्तला।
है अन्य नाटक कौन इसका, साम्य कर सकता भला॥

उपर्युक्त छन्दमें प्रथम चरणमें १६ तथा द्वितीय चरण में १२ मात्राएं हैं (प्रत्येक पंक्तिमें १६+१२=२८ मात्रायें हैं)

मदिरा—मदिरा सवैयाके प्रति पादमें २२ अक्षर होते हैं—

[मदिरा—सवैया-सात भगण+एक गुरु=२२]

दान करो, गुण गान करो, परनिन्दक निष्फल काम रहें।
दक्षिण देश गणेश रहें, प्रभु विघ्न न क्यों सिर थाम रहें॥
मा कमला अनुकूल रहें, धन धान्य भरे सब धाम रहें।
भक्षकका भय है न हमें, बस रक्षक राघव राम रहें॥

मत्तगयन्द—मत्तगयन्द सवैयाके प्रति पादमें २३ अक्षर होते हैं—

[मत्तगयन्द सवैया—सात भगण+दो गुरु=२३]

हे शिव भव्य ध्वजा फहरात छिहूँ जगमें शुभ पाप हरैया।
बैठ रहें यमदूत यहां तजि, मर्मनिकेतन नाहिं डरैया॥
हो जगमें बस एक तुम्हीं, सबकी पतपावन लाज रखैया।
दिव्य सुधा दइ देवनको, अरु मद हलाहल पान करैया॥

किरीट—किरीट सवैयामें २४ अक्षर होते हैं—

[किरीट-सवैया-८ भगण=२४]

मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं ब्रज गोकुल गांवके ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नन्दकी धेनु मझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरिको जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी कूल कदम्बकी डारन॥

सुन्दरी—सुन्दरी सवैयामें २५ अक्षर होते हैं—

[सुन्दरी सवैया ८ सगण+एक गुरु=२५]

सय दिव्य महाप्रभु शङ्कर भव्य निधान दयानिधि पालक दानी ।
तुहि ध्यावत शेष, खगेश, सुरेश, रमेश, गणेश दिनेशहु स्वामी ॥
सब आदि अनादि गुणादि अनन्त अखण्ड अभेद नमो सुरमानी ।
सत राग विराग लसे सुखसागर नागर प्रेम सुधामय वानी ॥

सुख—सुख सवैयामें २६ अक्षर होते हैं—

[सुखसवैया—८ सगण + दो लघु = २६]

प्रणवीर बनो अति धीर धरो, कुल कष्ट सहो कलुष न रहो तुम ।
मनमोहनकी सुख शान्ति लिये, गुणवान रहो पद राम भजो तुम ॥
मद लोभ तजो शुचि काम करो, पर नारि हिये मत भूल धरो तुम ।
शुभ मोहन नाम प्रभाव सधे, रिपु शूलनको झट फूल करो तुम ॥

मालिनी—मालिनी वृत्त १५ अक्षरोंका होता है प्रतिपादमें तथा ८ और ७ अक्षरोंपर यति (विराम) रहती है—

[मालिनी—दो नगण + मगण + दो यगण = १५]

निखिल भुवनधात्री, सर्वलोकोपकारी ।
विमल जल-प्रदात्री, धार गङ्गे ! तुम्हारी ॥
तव जलकण सेवी, त्यागते यों गर्वोको ।
गज डर हरिसे ज्यों, छोड़ते हैं मदोंको ॥

शार्दूलविक्रीडित—शार्दूल विक्रीडित वृत्त १९ अक्षरोंका होता है तथा १२ और ७ अक्षरोंपर प्रतिपादमें यति होती है—

[शा० वि०—मगण + सगण + जगण + सगण + दो तगण + एक गुरु = १९]

हे देवेन्द्र ! ललाट बिन्दु नभके, दे दो सुरूपा प्रभा ।
होवे कल्पतरुच्छटा सदरा ही, मेरी अनूपा विभा ॥
हे हे चन्द्र ! सुचारु चित्रगतिसे, शोभा बड़ा व्योमकी ।
भाता मारुत, मन्द मन्द गतिसे, वर्षो सुधा सोमकी ॥

पाठ-४१

विराम-चिह्न

(,) कामा या अल्प विराम।
(;) सेमीकोलन या अर्धविराम।
(।) फुलस्टाप या पूर्ण विराम।
(!) सम्बोधन।
(?) प्रश्न चिह्न।
(-) संयोजक चिह्न या हैफन।
(—) निर्देशक चिह्न या डैश।
(:—) कोलन डैश।
(" ") उद्धरण चिह्न।
(( )) लघुकोष्ठ चिह्न।
(—) रेखा चिह्न
([ ]) बृहत् कोष्ठ चिह्न।
({ }) मध्यम कोष्ठ चिह्न।
(❀) तारक चिह्न
(† ‡ § × ×) टिप्पणीसूचक चिह्न या तारक चिह्न।
(०) लाघव चिह्न।
(× ×) अपूर्णतासूचक चिह्न।
(-०-) पूर्णता सूचक चिह्न।
(‸ ॥) त्रुटि चिह्न।
(‖) लोप चिह्न।
(=) समानता ज्ञापक चिह्न।